

**TEXT CROSS
WITHIN THE
BOOK ONLY
DAMAGE BOOK**

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_178315

UNIVERSAL
LIBRARY



OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

H83.1

Call No.

R31T

Accession No. 113251

Author

रेड्डी, बालकृष्ण

Title

तेलुगु की ~~उत्कृष्ट~~ कहानियाँ १९६०

This book should be returned on or before the date
last marked below. /

तेलुगु की शुद्ध कृत कहानियाँ

अनुवादक

श्री बालशौरि रेड्डी

“भारत सरकार की ओर से भेंट”



राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,

हिन्दी नगर, वर्धा

प्रकाशक
मोहनलाल भट्ट
मन्त्री,
राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,
हिन्दीनगर, वर्धा

सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रथम संस्करण—२०००
दिसम्बर, १९६०
मूल्य—दो रुपये पचास नये पैसे
(रु. २.५० न. पै.)

मुद्रक
मोहनलाल भट्ट
राष्ट्रभाषा प्रेस,
हिन्दीनगर, वर्धा

प्रकाशककी ओरसे

हिन्दीके राष्ट्रभाषाके पदपर आसीन हो जानेके बाद अब यह आवश्यक हो गया है कि देशके हिन्दीतर भाषी साहित्यके अुत्तमोत्तम ग्रन्थोंको अनूदित कराकर हिन्दी भाषी जनताके सामने रखा जाअे । अिसी दृष्टिकोणसे समितिने वर्षों पहले अेक 'साहित्य-निर्माण योजना' बनाअी थी ।

यद्यपि अुक्त योजनाका कार्य कागज-प्राप्तिकी कठिनाअी तथा अन्य कअी अनिवार्य कारणोंसे जितनी शीघ्र गतिसे आगे बढ़ना चाहिअे था, अुतनी तेजीसे नहीं बढ़ पाया; फिर भी अिस दिशामें अिस वर्ष कुछ काम हुआ है । यह हर्षकी बात है कि प्रस्तुत पुस्तकका प्रकाशन भी 'साहित्य-निर्माण योजना' के अन्तर्गत ही हो रहा है ।

प्रस्तुत संग्रहमें तेलुगुके अुत्कृष्ट लेखकोंकी सत्रह कहानियोंके अनुवाद संग्रहीत हैं । संग्रहमें संग्रहीत कहानियोंका अनुवाद श्री बालशौरिजी रेड्डीने किया है । अनुवादकी भाषा, सरल, सुबोध, प्रवाहमयी तथा रोचक है ।

हमारा विश्वास है कि तेलुगुकी चुनी हुई कहानीयोंका प्रस्तुत अनुवाद राष्ट्रभाषा प्रेमियों द्वारा समादृत होगा ।

मंत्री,

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

समितिकी 'साहित्य-निर्माण-योजना'

राष्ट्रभाषा-प्रचारके लिये उपयोगी पुस्तकें प्रकाशित करने तथा ज्ञान-वर्धक, अुच्च कोटिके ग्रन्थोंके निर्माण करनेके अुद्देश्यसे राष्ट्रभाषा प्रचार समितिने वर्षों पहले 'साहित्य निर्माण योजना' बनायी थी।

हम स्वीकार करते हैं कि इस योजनाके अनुसार जितना कार्य अब तक होना चाहिये था, अनेक कठिनायियोंके कारण वह हो नहीं सका है; फिर भी समिति निम्नलिखित पुस्तकें प्रस्तुत कर चुकी है। हमें प्रसन्नता है कि इन सभी पुस्तकोंका जनताने स्वागत और सत्कार किया है।

प्रकाशित पुस्तकें :—संक्षिप्त राष्ट्रभाषा कोश, फ्रेंच स्वयं-शिक्षक, भारतीय वाङ्मय भाग १, २, ३, मराठीका वर्णनात्मक व्याकरण, सोरठ तेरा बहता पानी (गुजराती अपन्यास), धरतीकी ओर (कन्नड़ अपन्यास), लोकमान्य तिलक (जीवनी-ग्रन्थ), मिर्जा गालिब : जीवनी और साहित्य, धूमरेखा अवं तेलुगुकी अुकृष्ट कहानियाँ।

भारतके विभिन्न प्रदेशोंके निवासी देवनागरी लिपिके माध्यमसे भारतकी प्रादेशिक भाषाओं आसानीसे सीख सकें, इस अुद्देश्यसे समितिने 'भारत-भारती' मालाका प्रकाशन आरम्भ किया है। इस मालाके अन्तर्गत अबतक नीचे लिखी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं :—

'भारत भारती'—तमिल, तेलुगु, कन्नड़, गुजराती, मराठी, अुड़िया और असमिया।

शेष भाषाओंकी पुस्तकें भी शीघ्र ही प्रकाशित होंगी।

रजत जयन्तीके अवसरपर 'रजत जयन्ती ग्रन्थ'के अलावा 'कविश्री माला' के अन्तर्गत २५ विभिन्न भाषा-भाषी कवियोंकी रचनाओंको मूल भाषा तथा हिन्दी अनुवादके साथ प्रकाशित करनेका विचार भी किया गया है।

आशा है, राष्ट्रभाषा-प्रेमी समितिकी इस व्यापक योजनासे लाभ अुठाअेंगे।

अनुवादककी ओरसे

बहुत दिनोंसे मेरी अिच्छा थी कि तेलुगुकी अुत्तम कहानियोंका अेक संग्रह हिन्दीमें प्रकाशित हो और तेलुगु कहानीकी विशेषताओंका परिचय हिन्दी पाठकोंको कराया जाअे। अिसी अुद्देश्यसे मैंने समय-समयपर कुछ अुत्तम कहानियोंका हिन्दीमें अनुवाद किया। अिस कार्यमें मुझे प्रमुख हिन्दी पत्र-पत्रिकाओंके सम्पादकोंने काफी प्रोत्साहन दिया। अुन सम्पादकोंने स्वयं पत्र लिखकर विशेषांक अेवं साधारण अंकोंके लिअे भी मुझसे तेलुगुकी हिन्दीमें अनूदित रचनाअें माँगी। मैंने सहर्ष समयपर रूपान्तर करके अुन्हें दे दिया ! अिस संग्रहकी कहानियोंमें 'चामर-ग्राहिणी' और 'हिमालय किरण' (राष्ट्रभारतीमें) 'प्रणय-कलह' (दैनिक आजके होली-विशेषांकमें) 'ममता' और 'मृगजल' (प्रतिभामें) 'नौका-यात्रा' ('कहानी'-विशेषांकमें) 'सपनेकी सचाअी' (अजन्तामें) 'हवाकी मछलियाँ' ('प्रवाह' के विशेषांकमें) तथा 'अतृप्त कामना' (विश्व-ज्योतिमें) प्रकाशित हो चुकी हैं। अिन पत्र-पत्रिकाओंके सम्पादकोंके प्रति मैं अत्यन्त कृतज्ञ हूँ।

अिस संग्रहकी तैयारीमें मुझे विशेष रूपसे श्री 'श्रीवात्सवजी' की सहायता मिली है। कहानियोंके चयन व कहानीकारोंके परिचय लिखनेमें अुनकी अच्छी मदद मिली है। दैनिक आन्ध्र प्रभा' के सम्पादक श्री नालं वेंकटेश्वर रावजीके प्रोत्साहनको भी मैं भूल नहीं सकता।

अन्तमें मैं अुन समस्त तेलुगु लेखकोंका हृदयसे आभारी हूँ जिन्होंने अिस संग्रहमें अपनी कहानियोंको प्रकाशित करनेकी अनुमति प्रदान की है।

राष्ट्रभाषा प्रचार समितिका प्रोत्साहन न होता तो यह संग्रह पाठकोंके समक्ष आया ही न होता। इस कार्यको समितिने अपने हाथमें लिया है। अतः मैं समितिका अत्यन्त कृतज्ञ हूँ !

मेरी प्रथम रचना 'पंचामृत' का हिन्दी जगतने आदर किया और केन्द्रीय सरकारने २०००) रुपयेका तथा उत्तर प्रदेश-सरकारने ३००) का पुरस्कार देकर मेरे अुत्साहको और भी बढ़ाया है। अतः हिन्दी जगतके कृपालु पाठकों तथा अनि दोनों सरकारोंका भी मैं आभारी हूँ। यदि अनि सबका प्रोत्साहन अेवं अुत्साह नहीं मिलता, तो शायद ही यह संग्रह पाठकोंके सम्मुख आता !

बाबिवेलुपुरम् }
मद्रास-१७

—बालशौरि रेड्डी

तेलुगु कहानीका परिचय

‘अंक राजा था।’ कहते हुअे किसी भी कहानीको दादी-नानीके शुरू करते ही बच्चोंका कुतूहल बढ़ जाता है। वे प्रश्नपर प्रश्न पूछने लगते हैं—‘हूँ, राजाने क्या किया? कैसे थे? कहाँ-कहाँ गये? अन्होंने क्या किया?’ अित्यादि! अससे आगेकी कहानीको जाननेकी जिज्ञासा बढ़ती है। कहानीकी आगेकी घटनाओंको जाननेकी अुत्कण्ठाको बनाअे रखनेके लिअे ही अनेक कहानियोंका आविर्भाव हुआ। विश्व-कथा-साहित्यके आधार-भूत ‘पंचतन्त्र’, ‘जातक-कथाअें’, ‘बृहत कथा-मंजरी’ की कथाअें प्रथम भारतीय वाङ्मयसे ही विश्वकी अन्य भाषाओंमें परिवर्तित होकर पुनः भारतीय भाषाओंमें प्रचार पा गयी हैं। भारतीय कथा-साहित्यकी पर्यालोचना करनेपर अस बातकी पुष्टि हो जाती है कि कथा-साहित्य हमारे लिअे नया नहीं है। लेकिन हम भाज जिस छोटी कहानीका अुल्लेख करते हैं, असका रूप हमें अंग्रेजी भाषाके प्रभावसे अुपलब्ध रूप ही कहना होगा। असके सम्बन्धमें भी हमारे गण्यमन्य पंडित यह निरूपण कर रहे हैं कि ‘कथानिका’ के लक्षण अग्निपुराणमें बताअे गये हैं। किन्तु हमें यह अवश्य मानना पड़ेगा कि आजकी छोटी कहानी विदेशी भाषाओंसे ग्रहण की हुअी अंक साहित्य-प्रक्रिया है।

यूरोपकी भाषाओंमें ‘छोटी कहानी’ अनेक लेखकोंकी कुशलताके द्वारा नअे स्वरूपको प्राप्त कर चुकी है। भाषा तथा देशके भेदोंको दूरकर आज विश्व-साहित्यमें विभिन्न भाषा-भाषियोंको अंक सूत्रमें पिरो देनेके साधनके रूपमें परिणत हुअी है।

भारतीय भाषाओंमें छोटी कहानी अस शताब्दिके प्रथम पादसे अुन्नति करने लगी है। प्राचीन कालकी कहानियाँ पद्य अथवा गद्यमें भी अंक कृत्रिम भाषा तथा अंक लौह चौखटेमें कसी गयी थीं। अुन सब बन्धनोंको तोड़कर

जनताकी भाषामें—सबकी समझमें आनेवाली पद्धतिमें भारतीय भाषाओंमें छोटी कहानीकी रचना प्रारम्भ करनेवालोंमें विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अपुन्यास-सम्राट प्रेमचन्द, युग-प्रवर्तक श्री गुरजाड अप्पाराव जैसे लोग हैं। अुनकी साधनाके कारण ही साहित्यमे छोटी कहानीको अेक विशिष्ट स्थान प्राप्त हुआ है। तेलुगुमे प्रथम छोटी कहानीको तराशकर पाठकोंके सामने रखनेवाले स्व. गुरजाड अप्पारावजी थे। ये तेलुगु साहित्यके कअी क्पेत्रोंमें क्रान्ति लानेवाले युग-प्रवर्तक थे। ‘छोटी कहानी’ द्वारा आन्ध्रवासियोंके आचार-व्यवहारोंमें वे सुधार करना चाहते थे और यही कारण है कि आपने कहानियों द्वारा समाजमे जागृति लानेका प्रयत्न किया। असका अभिप्राय यह नही कि आपने तोता-मैनाके किस्सेकी भाँति अपनी कहानियोंमें नीति अेवं अेकमात्र अपुदेश दिया है ! ‘छोटी कहानी’ की परिभाषाके अनुकूल आवश्यक लक्ष्णोंको ध्यानमें रखकर सुन्दर शिल्पपूर्ण कहानियोंकी रचना की। प्रस्तुत संग्रहकी आपकी ‘सुधार’ नामक कहानी अेक अैसी ही कहानी है। अस कहानीका नाम ‘दिदु बाटु (सुधार)’ है ! अस कहानीको पढ़ जानेपर लेखकके शिल्प और अुनकी रचना-रीतिको भली-भाँति जाना जा सकता है।

तेलुगु साहित्यके पुनरुज्जीवनके आन्दोलनके समय प्राचीन सम्प्रदायोके कवियों और लेखकोंने अस आन्दोलनका विरोध किया था। अस आन्दोलनको बल प्रदान करनेके लिअे शक्तिशाली साधनके रूपमें ‘साहित्य समिति’ नामक लेखकोंकी अेक संस्था सन १९२० मे स्थापित हुआ थी। आजके प्राय. अनेक प्रसिद्ध कवि, कहानीकार, नाटककार, तथा अन्य कलाकार अस संस्थाके सदस्य हैं। अस संस्थाकी तरफसे ‘सखी’ और ‘साहिती’ नामक दो साहित्यिक पत्रिकाओंका प्रकाशन हुआ। अन पत्रिकाओंमे कअी अत्युत्तम कहानियाँ प्रकाशित हुआ। ‘साहित्य समिति’ के सभापति श्री शिवशंकर शास्त्री तथा सदस्योंमे श्री विश्वनाथ सत्यनारायण, चिता दीक्षितुलु, मोक्कपाटि नरसिंह शास्त्री, वेदुल सत्यनारायण शास्त्री अित्यादि कअी लेखक ‘छोटी कहानी’की रचनामे सिद्धहस्त हैं। अनमेसे तीन लेखकोंकी रचनाअें अस संग्रहमे दी गयी है। मानव-जीवनकी विभिन्न घटनाओंको अपने दृष्टिकोणके अनुसार चित्रित करनेका अन लेखकोंने प्रयत्न किया है। अस संस्थाके

बाहर रहकर भी छोटी कहानीकी रचनामें क्रांति लानेवाले श्री गुडिपाटि वेंकटचलम हैं। आपने आधुनिक सामाजिक जीवनकी गंदगीका निर्मूलन (प्रवर्धन) करनेका बीड़ा उठाया और उसका सामना करनेके लिये अपनी कहानियोंमें योग्य पात्रोंकी सृष्टि की। शरदचन्द्रकी भाँति आपने भी पतित नारियोंके जीवनके प्रति सहानुभूति प्रकट की है ! परन्तु चलमके पात्र शरदके पात्रोंकी तरह सामाजिक दुर्बलताओंके सामने सर नहीं झुकाते ! सामाजिक रीति-नीति, नियम-बन्धन तथा पाप-पुण्योसे आपके पात्र भय नहीं खिन्ने; बल्कि स्वतन्त्रतापूर्वक विवाह-बन्धन और आचार-व्यवहारोंकी प्रचलित परम्पराओंको बन्धन न मानते हुए सैलानी प्रेमका प्रतिपादन करते हैं, तथा समाजकी और सामाजिक नियमोंकी अवहेलना करते हैं। लगता ऐसा है कि लेखक स्वयं भी ऐसा ही स्वच्छंद जीवन बिताना पसन्द करता है और यही कारण है कि उसका भी अपना जीवन समाजसे दूर हो गया है; लेखक तिरुवन्नमलै में सब कुछ त्यागकर तपस्या कर रहे हैं। मानवके कामोद्रेक एवं शारिरिक सुखोंको अतृप्त कर देनेवाली अनिकी रचनाओंको पसन्द करनेवाले जितने पाठक हैं, उसी अनुपातमें उनका विरोध करनेवाले पाठक भी हैं। इस लेखककी विचारधारा एवं प्रतिभासे प्रभावित होकर अनेक युवा लेखक इस दिशामें अग्रसर हुए। उनमें श्री कोडवटिगंति कुटुंबराव, श्री टी. गोपीचन्द, श्री बुच्चि बाबू अत्यादि मुख्य हैं। अनि सबने प्रेम-प्रधान कहानियोंकी रचना की है। यद्यपि उनमें अनि लोगोंने स्त्री-पुरुषके रूपाकर्षणकी प्रवृत्तिको प्रधानता दी है; लेकिन उसके 'सेक्सुअल' तत्वको प्रधानता देते हुए उसके मानसिक तत्वके परिशीलनकी दृष्टिसे अनि लोगोंने कहानियाँ लिखी हैं और सबने अपनी प्रत्येक विशिष्टताका परिचय दिया है। अनेक विशिष्ट प्रकारके मानसिक विश्लेषणको अपनी कहानियोंमें स्वरूप प्रदान किया है। इस प्रकारकी रचनाओंमें प्रमुख स्थान युवक कहानीकार श्री पद्मराजुको दिया जा सकता है। अनिकी 'गालिवान' (तूफान) नामक कहानीको विश्व-कहानी प्रति-योगितामें पुरस्कार प्राप्त हुआ है। अनिकी कहानियोंमें हमें अनेक विशिष्ट प्रकारके शिल्पका परिचय मिलता है। ये परिस्थितियोंके प्रभावमें परिवर्तित होनेवाले मानवके चरित्र "व्यवहारिकता" की रीतिका सुन्दर चित्रण करते हैं। समाजके दलित-पीड़ित पात्रोंका अनिकी कहानियोंमें चित्रण होनेपर

भी वे नीच प्रतीत नहीं होते ! अनिकी कलमके अन्द्रजाल द्वारा नीच जातिकी नारियाँ भी देव-कन्याओं बन जाती हैं। वे पात्र भी हमें कोअी दिव्य सन्देश प्रदान करते हैं और स्थाअी रूपसे हमारे हृदयोंमें स्थान बना लेते हैं। कहानीमें सुन्दर वातावरणकी सृष्टि करनेमें ये अत्यन्त कुशल हैं। अनिकी 'पडव-प्रयाण' (नौका-यात्रा) नामक कहानी विदेशी भाषाओंमें रूपांतरित हो गअी है।

अन्य भारतीय भाषाओंकी भाँति तेलुगुमें भी प्रथम विश्व-संग्रामके अपरान्त ही छोटी कहानीका विशेष प्रचार होने लगा। हजारोंकी संख्यामें बिकनेवाले पत्र-पत्रिकाओंमें छोटी-कहानियाँ छप रही हैं। आज तो प्रत्येक सप्ताहमें ५०, ६० कहानियाँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओंमें छप रही हैं। प्रत्येक सप्ताह लाखों पाठक अुन कहानियोंको पढ़ते हैं। अनिके अतिरिक्त संग्रहोंके रूपमें पुस्तकें भी छप रही हैं। अनि सबको हम अुत्तम कहानियाँ नहीं कह सकते। अपने समयके जीवनको प्रतिबिम्बित करनेवाली अनेक कहानियोंका प्रकाशित होना तो सत्य है ! अतः अनिके आधारपर हम आजके नवयुवकोंके हृदयोंमें अुत्पन्न होनेवाले आशय अेवं अभिप्रायोंसे परिचित हो सकते हैं। राजनीतिक समस्याअे 'वर्ग-भेद'—अमीर-गरीबका भेदभाव, आर्थिक अेवं सामाजिक परिस्थितियाँ—ये सब आजकी कहानियोंकी कथावस्तुअें हैं। यथार्थ जीवनका चित्रण होनेपर तत्सम्बन्धी गुण-दोषोंका निर्णय विज्ञ पाठकोंपर छोड़ दिया जा सकता है।

आसेतु हिमाचल पर्यन्त व्याप्त अिस विशाल भारत भूमिमें किस कोनेके गाँवमें कौन-सा सौन्दर्य विद्यमान है, किस पर्वतके शिखरसे झरनेवाले झरनेमें कौन-सा मधुर गान सुनाअी दे रहा है, किस धानके खेतके पौधोंमें कौन-सी संपदा नृत्य कर रही है, किस गरीबके स्वेद जलमें कैसा खारापन निहित है, अनि सबका हमारी ज्ञानेन्द्रिय देख, सुन, स्पर्शकर, गन्ध अथवा रुचि देखकर अनुभव करनेको अुद्दिग्ग है। काश्मीरसे लेकर कन्याकुमारी तक, काठियावाड़से कामरूप तक भारतीय आत्माका अेक ही शरीर और अेक ही स्वरूप है ! हमें यह देखना होगा कि अिस विश्व-रूपके संदर्शनके लिअे हमारे लेखक कैसा योगदान दे रहे हैं ! हम चाहे पंजाबी हों, चाहे आन्ध्रावासी हों, अुर्दू बोलते

हों अथवा मलयालम, चाहे रोटी खाते हो या चावल—सबकी आशा अवे संस्कृति अक है ! असलिये कोअी भी लेखक किसी भी भाषामें चाहे जिस किसी भी पद्धतिमें अपनी भावनाओ द्वारा भारतीय हृदयको स्पन्दितकर सके तो हम अुसका आदर करते हैं, अच्छाओको ग्रहण करते हैं। अस संग्रहकी कहानियोंमें तेलुगुपनका निरूपणकर आन्ध्र देशकी खूवियों, आचार-व्यवहारों तथा सम्प्रदायोंका चित्रण हुआ है। लेकिन समस्त भारतके दृष्टि-कोणका विस्मरण करके नही ! समस्त भारतको स्पन्दित कर हिलानेवाले आन्दोलनोंका प्रभाव आन्ध्र और तेलुगु भाषापर भी पडा है। राष्ट्रीय भावनाओ तथा मार्क्सके सिद्धान्तोका भी तेलुगु-लेखकोंने अपनी कहानियोंमें विशेष् प्रचार किया है। विश्वासके साथ अुनका प्रतिपादन भी किया है ! लेकिन जब लेखकने कहानियोंको केवल अपनी भावनाओके प्रचारका साधन मात्र बनाता है, तब पाठकोमें जुगुप्सा पैदा होती है। आजके लेखकोंमें यह बात देखी जाती है, अैसी रचनाओको अस संग्रहमें स्थान नही दिया गया है।

आज आन्ध्रमें असंख्य कहानीकार हैं। अुन सबकी रचनाओंको अस संग्रहमें स्थान देना सम्भव नही है। अस संग्रहमें कअी अच्छे कहानीकारोंकी भी रचनाअे नही दे पाअे, अस बातका हमे दुख है। लेकिन जहाँतक हो सका, विभिन्न प्रकारकी सुन्दर रचनाओको नमूनेके तौरपर अस संग्रहमें देनेका प्रयत्न किया गया है। अब भी ३०, ४० अुत्तम कहानीकारोंकी रचनाअें नही आ सकी, जिनकी कहानियोंके कारण तेलुगु कहानी साहित्य समृद्ध कहा जा सकता है। आशा है कि अुनकी रचनाओंका हिन्दी पाठकोको परिचय करानेका सद्बकाश पुनः प्राप्त हो जाअेगा। तब तक अिन कहानियोंके गुण-दोषोंकी आलोचना न करके अुनके गुण और अवगुणोंके निर्णयका भार हम कृपालु पाठकोंपर छोड़ देते हैं।

प्रस्तुत संग्रहकी कहानियाँ यदि तेलुगु भाषामे अभिव्यक्त विचारोंकी समृद्धि, आन्ध्र प्रान्तकी सांस्कृतिक परम्पराकी झाँकी दिखानेमें कुछ भी सहायक हो सकी, तो अस संग्रहके प्रकाशनका अुद्देश्य सफल कहा जाअेगा।



अनुक्रमणिका

कहानी	लेखक	पृष्ठांक
१. चामर-ग्राहिणी	श्री विश्वनाथ सत्यनारायण	१
२. हिमालय-किरण	स्व. श्री अडिवि बापिराजु	११
३. नौका-यात्रा	श्री पालगुम्मि पद्मराजु	२७
४. ममता	श्री टी. गोपीचंद	४०
५. सपनेकी सचाई	श्री कोडवटिंगटि कुटुम्बराव	४७
६. हवाकी मछलियाँ	श्री अ. आर. कृष्ण	६१
७. प्रणय-कलह	श्री मुनिमानिक्यम् नरसिंहराव	७२
८. मृगजल	श्री के. सभा	८१
९. चतुराई	श्री नार्ल वेंकटेश्वर राव	९१
१०. देवताकी मृत्यु	श्री गिडुतूर सूर्यम्	९५
११. फायदेका सौदा	श्री मोक्कपाटि नरसिंह शास्त्री	१०९
१२. सुधार	श्री गुरजाड अप्पाराव	१२१
१३. औरतका मूल्य	श्रीमती कनुपति वरलक्ष्मम्मा	१२७
१४. महल और झोपड़ी	श्री चिंता दीक्षितुलु	१३८
१५. शुभ कामनाओं	श्री 'श्रीवात्सव'	१४४
१६. आहुति	श्री केतिनीडि नरसिंह राव	१५५
१७. अतृप्त कामना	श्री 'हितश्री'	१६५

१.

चामर-ग्राहिणी

—श्री विश्वनाथ सत्यनारायण

आपकी प्रतिभा बहुमुखी है। आप अकेले साथ कवि, कहानीकार, नाटककार, समालोचक, पंडित, गुरु तथा सौसे अधिक ग्रन्थोंके लेखक हैं।



प्राचीन संप्रदायोंमें आपका विकास हुआ, फिर भी आप वर्तमान युगके प्रभावसे अलग रहे। आप प्राचीन संस्कृतिके चिह्न—वर्णाश्रम, धर्म, गुरुभक्ति तथा अन्य प्राचीन संप्रदायोंका प्रतिपादन करनेवाले कलाकार हैं। अपने सिद्धान्तों और विश्वासोंको निर्भयताके साथ पाठकोंके सामने रखकर उसमें सफलता और यश प्राप्त करनेवाले बुद्धिमान् हैं। आपने राष्ट्रीय आन्दोलनमें भाग लेकर कारावासकी सजा भोगी है, अतः राष्ट्र-सेवक भी हैं। आपके “वेयिपडगलु”

नामक बृहत् उपन्यासको आन्ध्र विश्वविद्यालयसे पुरस्कार प्राप्त हुआ है। आपके अन्य प्रसिद्ध उपन्यासोंमें “अकेवीर”, “जेबु दोंगलु”, “वेलियलिकट्ट”, “स्वर्गानिक निच्चेनलु”, “हाहा हूह” अित्यादि हैं। आपने कभी छोटी कहानियाँ भी लिखी हैं। “आन्ध्र प्रशस्ति” “ऋतुसंहारम्”, “कोकिलम्म पेंडिल”, “किन्नेरसानि पाटलु”, “रामायण कल्पतरु” इनके काव्य-ग्रन्थ हैं। आपने नाटक भी लिखकर अपार यश प्राप्त किया है। आन्ध्रवासियोंने “कवि-सम्माट्” नामक उपाधि देकर आपका अचित् ही सम्मान किया है।

* * *

चामर-ग्राहिणी

शालिवाहन शकका १०२ वाँ वर्ष। रोम नगरमें उस दिन एक महलके सामने लोगोंकी बड़ी भीड़ जमा थी। उस अुत्सवका कारण हेलीना नामक एक रूपवतीका दो मास पर्यंत जनशून्य बड़े-बड़े मरुस्थलोंको पार करते हुअे यात्रा समाप्तकर रोम नगरमें प्रवेश करना था। वह चार वर्ष पूर्व आंध्र-चक्रवर्ती गौतमी-पुत्र श्री शातकर्णीके यहाँ चामरग्राहिणी बनकर गयी थी। उसके वापस लौटकर आनेके उपलक्ष्यमें ही अस अुत्सवका आयोजन था।

जब वह चार वर्ष पूर्व आन्ध्र देशमें गयी थी, उस समय रोम नगरमें एक शानदार जलसा मनाया गया था और उसे सम्मानित करके बिदा किया गया था। साधारणतः जो सुन्दरियाँ चामर-ग्राहिणी बनकर जाती हैं, वे १५ वर्ष पर्यंत नहीं लौटतीं। परन्तु हेलीना चार ही वर्षोंमें वापस लौट आयी है। वह अितने अल्प समयमें क्यों वापस आ गयी, किसीको पता नहीं, पर अुतने दूर देशसे आयी हुयी महिला द्वारा भारत और आन्ध्र देशके समाचार जाननेकी अुत्कट अभिलाषासे ही जनता उसके घरपर अेकत्रित हुयी थी। वह बड़ी धनी होगी। आन्ध्र देशसे मोती, हीरे-जवाहरात, रेशमी वस्त्र, दन्त-सामग्री, कस्तूरी, अिलायची, लवंग अित्यादि अपूर्व द्रव्य अपने साथ लायी होगी। अन अपूर्व द्रव्योंको आन्ध्रके व्यापारी सालमें अेक बार लाकर रोममें बेचा करते हैं। अुनका मूल्य अधिक होनेके

कारण बड़े-बड़े रसीस और श्रीमन्त ही अन्हें खरीदा करते हैं। साधारण प्रजाने अन्हें देखातक नहीं। लौंग और अिलायचीके स्वादसे भी वहाँके अधिकांश लोग अपरिचित हैं। जायपत्री और लौंगके सेवनसे जिह्वामें होनेवाली रसास्वादकी अनुभूतिका अन्हें अनुभव नहीं। अस स्वादका परिचय देनेवाला शब्द भी अुनकी भाषामें नहीं है। असलिये जनता अुसके स्वाद और सुगंधसे भी अपरिचित है।

हेलीना साधारण परिवारकी लड़की है। अुसे गुदडीमें प्राप्त माणिक कह सकते हैं। रोम नगरके कअी धनिकोने अुसे पाना चाहा ; लेकिन चार वर्ष पूर्व आन्ध्र-चक्रवर्तीके अधिकारी चामर-ग्राहिणियोंकी खोजमे आये थे। साधारणतः चामर-ग्राहिणियोंके चुनावमे जमीदारों तथा राजवंशीय पुत्रियोंकी ही प्रधानता दी जाती है। पर हेलीना साधारण परिवारकी कन्या होनेपर भी अपूर्व सौन्दर्यवती होनेके कारण तथा अधिकांश लोगोंकी सिफारिशपर आन्ध्र-साम्राज्यके अधिकारियोंने अुसे ले जाना अंगीकार किया था। किन्तु अुन लोगोंने अेक शर्त रखी थी। वह यह थी कि यदि चक्रवर्ती हेलीनाको राज-वंशिनी न होनेके कारण स्वीकार करनेसे अिन्कार करे तो दूसरे वर्ष ही अुसे व्यापारियोंके काफिलेके साथ वापस भेज दिया जाअेगा। ये व्यापारी-जत्थे आन्ध्र देशसे सालमे अेक बार रोम जाया करते थे।

आन्ध्र-चक्रवर्ती अेक चामर-ग्राहिणीको स्वीकार करनेपर अुसके परिवारको २० मन हीरे-जवाहरात तथा मोती दिया करते थे। शेष ४० मन सुगंधि द्रव्य दिया करते थे। वह साधारणतः १५ वर्ष चक्रवर्तीकी चामर-ग्राहिणी बनकर रहा करती थी। चक्रवर्तीके स्वीकार करते समय अुसकी अुम्र १६ वर्षसे अधिक नहीं होनी चाहिये।

हेलीनाको महाराजने स्वीकार किया। अुसका प्रधान कारण हेलीनाका सौन्दर्य ही है। अुसकी देह-कांति सफेद नहीं—चन्द्रमाको सानपर चढा शहदमे भिगोअे जैसी है। अमर जैसे केश। अुसका समस्त सौन्दर्य अुसके विशाल नेत्रोंमें मूर्तिभूत है। अुसकी पुतलियोंकी कांति अपूर्व अेवं अद्भुत है। अुस रूपसिको देखनेपर चक्रवर्तीने अंगीकार ही नहीं किया ; बल्कि अुसे प्रधान चामर-ग्राहिणी बनाया।

चामर-ग्राहिणियाँ अन्तःपुरकी स्त्रियाँ थी। उनके भोग राज-भोग थे। वे बाहर निकलतीं तो पालकियोपर जाती। कोअी भी आँख अुठाकर अुन्हें देख नहीं सकता। यदि कोअी अुन्हें चामर-ग्राहिणियाँ न समझे तो राज-कन्याअें ही मान लेगा। अुनके शरीरपर शोभित होनेवाले आभूषण रत्नमय तथा अुनके धारण करनेवाली साड़ियाँ स्वर्णमय हुआ करती थी। चक्रवर्ती सदा अुनकी अिच्छाअे पूर्ण करते थे। अुन दिनोमे नारी होकर जन्म लेनेमे दो चरितार्थ थे। प्रथम आन्ध्र-चक्रवर्तीकी रानी होना और द्वितीय चामर-ग्राहिणी बनना।

हेलीना गत चार वर्षोसे अपने माता-पिताको अमूल्य रत्न, कस्तूरी, जायपत्री, लौंग, अिलायची, पान, मुपारी अित्यादि भेजा करती थी। अुनके माता-पिता भी अुनका स्वाद रोम-वासियोको चखाते थे। जिन लोगोने स्वाद चखा, वे हेलीनाके माता-पिताके भाग्यकी सराहना करते थे। अन्य लोग अुनके स्वादसे परिचित होनेको लालायित रहते थे।

अैसी स्थितिमे हेलीना घर आअी। लौटते समय दो अूँटोंपर अपना सामान लादकर लाअी थी। लोगोंकी यह धारणा थी कि हेलीना अुन सबको अपने नगरवासियोमे बाँटनेवाली है। फिर जनता अेकत्रित क्यों न होगी ?

हेलीनाको चार दिनतक आराम नहीं मिला। अपने साथ लाअी हुआ भारतीय वस्तुओके प्रदर्शन तथा थोड़ा-सा अुनका स्वाद चखानेमे वह लगी रही। दस दिनतक यह कार्य चलता रहा।

अिन दस दिनोसे डाटिमो वराबर हेलीनाके घर आता रहा। डाटिमो अेक सम्पन्न जमीदारका पुत्र था। हेलीनाके चामर-ग्राहिणी बनकर जानेके पहले ही डाटिमोने अुससे प्रेम किया था। हेलीनाका प्रेम पानेको डाटिमोने अनेक प्रयत्न किये थें। हेलीना अेक सामान्य परिवारकी लडकी है। अेक जमीदारके पुत्रका हेलीनासे विवाह करनेसे बढकर अुसके माता-पिताको और क्या चाहिये ? सब अिस सम्बन्धको चाहते थे, पर हेलीनाका हृदय विकल था। अुसने डाटिमोके प्रेमका तिरस्कार किया। वह अिस बातको प्रकट भी नहीं कर सकती, न वह प्रेमका अिन्कार भी कर सकती, और न अुसे स्वीकार ही कर सकती थी। वह यह मानती थी कि अिस पृथ्वीपर अुससे बढकर और कोअी सौन्दर्यवती शायद ही होगी।

सौन्दर्य और विवेकके लिये आत्मज्ञान अधिक होता है और आत्माभिमान भी। उसके हृदयमें अंक अटक महत्वाकांक्षा थी—अंक चक्रवर्तीकी पत्नी बननेकी। जब वह चामर-ग्राहिणी बनकर जा रही थी, उस समय उसने कल्पना की थी कि उसकी अच्छा अवश्य पूर्ण होगी। उसके माता-पिताको धन पानेकी आशा थी, पर अपनी पुत्रीका दूर देशमें जाना अतना पसन्द नहीं था। हेलीनाके हठ करनेपर ही उन लोगोंने उसकी बात मान ली थी। उन्हें मालूम था कि चामर-ग्राहिणियाँ कदापि चक्रवर्तीकी पत्नियाँ नहीं बन सकती। पुनः उसकी पुत्री वापस लौटकर आ भी सकती है, नहीं भी आ सकती है। कुछ चामर-ग्राहिणियाँ अपनी ३५ वी अथवा ३६ वी वर्षकी अवस्थामें विवाहकर आन्ध्र-देशमें ही रह जाती हैं। नृत्य-गीत अित्यादिका अभ्यासकर उस कलासे ही जीवन-यापन किया करती हैं। हेलीना यदि वापस लौटकर भी आती है तो उसकी अवस्था अधिक होगी। ऐसी दशामें यहाँपर विवाह होना कठिन है; लेकिन जीवन-पर्यंत सम्पत्तिका सुखानुभव कर सकती है।

उस देशमें डेल्फाव नामक ग्राममें अंक भविष्यवक्ता ज्योतिषी रहता था। उससे हेलीनाने अपनी १५ सालकी अुम्रमें जाकर अपना भविष्य पूछा था। कहा गया था कि वह अंक चक्रवर्तीके यहाँ अन्तःपुरमें रहेगी। अुसका मतलब हेलीनाने चक्रवर्तीकी पत्नी होना लगाया।

हेलीनाके वापस लौट आनेपर अकेले डार्टिमोने ही सन्तोष प्राप्त किया। लडकीके माता-पिताको सम्पत्तिके आगमका द्वार बन्द हो जानेका दुख हुआ। लेकिन अस बातका उन्हें हर्ष था कि हेलीना वापस आते-आते बहुत-सी सम्पत्ति लायेगी, जिससे वे अधिकांश जमीदारोकी अपेक्षा ज्यादा धनी होंगे। उस धनसे अंक अच्छी-सी जमींदारी खरीदी जा सकती है। फिर अुन्होंने अपनी पुत्रीके भाग्यके फूटनेका अनुभव किया। डार्टिमोने अपने भाग्यको फला हुआ-सा अनुभव किया।

डार्टिमोके माता-पिताको यह कतअी पसन्द नहीं था। पहले हेलीनाके सौन्दर्यपर मुग्ध हो उन लोगोंने अुसे अपनी बहूके रूपमें स्वीकार करनेकी सम्मति भी दी थी। परन्तु आज अुन्हे यह पसन्द नहीं था। अुनका यह

मनोभाव है कि चामर-ग्राहिणी चक्रवर्तीकी पत्नी ही मानी जाती है। पूर्ण-रूपसे पत्नी न हो, फिर भी पत्नी-जैसी ही है। चामर-ग्राहिणीके माने वह राज-रानी नहीं। चामर मृग नामक अंक जातिके हरिण भारतमें होते हैं। उनको पूँछें बड़े जूड़ो-सी होती हैं। उन रत्नजटित सुवर्ण दण्डोमें बँधे हुए जूड़ोंको लेकर नारियाँ चक्रवर्तीके दोनों तरफ खड़ी हो जाती हैं और चँवर डुलाती रहती हैं। सम्राटके सिंहासनपर विराजमान होते ही यह कार्य होता है। अन्य समयोंमें उन्हें कोई काम नहीं रहता। चामर-ग्राहिणियोंकी खोजमें जब आन्ध्रके अधिकारी आये थे, उस समय उन लोगोंने कहा था कि चामर-ग्राहिणियों और चक्रवर्तियोंके बीच कोई सम्बन्ध नहीं रहता। साधारण प्रजा इसपर विश्वास नहीं करती। इसलिये डार्टिमोके माता-पिताका अद्देश्य है कि हेलीना चक्रवर्तीकी पत्नी ही है। यही कारण है कि वे डार्टिमोके विवाहमें सम्मति नहीं देते हैं।

फिर भी डार्टिमोने हेलीनाके रोम छोड़कर चले जानेपर भी किसीसे विवाह न करनेका संकल्प किया। उसने मनमें निश्चय कर लिया कि मरण-पर्यंत वह अन्य स्त्रीके साथ प्रेम नहीं करेगा। लेकिन अपने इस निश्चयको डार्टिमोने किसीसे नहीं कहा। उसका भी अभिप्राय था कि हेलीना आन्ध्र-चक्रवर्तीकी पत्नी हो गयी है और चक्रवर्ती तथा हेलीनाके बीच वैमनस्य होनेके कारण वह भारत छोड़कर चली आयी है। अब हेलीनाका प्रेम चक्रवर्तीपर न होगा। अपना प्रणय सफल सिद्ध होगा।

गत दस दिनोंसे डार्टिमो हेलीनाके घर आता और दिनभर वही पड़ा रहता। उसीके घर भोजन करता। हेलीना आन्ध्र-देशके समाचार मुनाती और लोगोके साथ डार्टिमो भी कान खोलकर उन सब समाचारोंको सावधानीसे सुनता। हेलीना डार्टिमोको मित्रकी भाँति मानती और वैसा ही उसके साथ वर्ताव करती। हेलीनाके साथ डार्टिमो अकान्तमें मिलना चाहता, पर हेलीना वैसा मौका न देती।

हेलीनासे लोग पूछते कि तुम भारत छोड़कर यहाँ क्यों चली आयी? कुछ लोगोके प्रश्नोंपर तो वह ध्यान नहीं देती और कुछ लोगोके प्रश्नोंका उत्तर यह देती कि मुझे वहाँपर रहना पसन्द नहीं था। सहेलियोंके पूछनेपर अपने नेत्रोंसे

दीनता टपकाती। पहले माता-पिताके पूछनेपर जवाब दिया था कि—हमारे लिअे यह सम्पत्ति काफी नहीं? पुन-पुन पूछनेपर रुष्ट हो कहती—“जवाब तो दिया है न? बार-बार वही क्यों पूछते हैं?” अन लोगोने भी क्रमशः पूछना बन्द कर दिया। बड़ी धनराशि प्राप्त हुअी है। अुसकी वह अधिकारिणी है। फिर वे चुप क्यों न रहेंगे?

जैसे-जैसे दिन बीतते गअे हेलीनाके नेत्रोमे चिन्ताकी भावना झलकने लगी। वह सदा प्रसन्न रहनेका प्रयत्न करती, पर कभी-कभी अुसकी आँखोमें दीनताका भाव प्रकट हो अुठता। अुस समय वह अपने अेक विशेष कवपमें जाकर अेकान्तमें रहती।

कअी महीने बीत गअे। डाटिमो प्रति दिन हेलीनाके घर जाता। पर वह प्रेमिकाके घर जानेका अनुभव नहीं करता, पड़ोसीके घरका-सा अनुभव करता। अेक वर्ष बीत गया। क्रमशः हेलीनाकी चिन्ता बढती गअी। हेलीनाके बारेमे नगरमें तरह-तरहकी वाते लोग सोचने लगे। हेलीनाका विवाह होनेपर ही ये अफवाहे बन्द नहीं हो सकती। हेलीनाके माता-पिताने भी डरते-डरते चार-पाँच बार अुससे कहा—“तुम डाटिमोके साथ विवाह कर सकती हो। अुसके माता-पिता भी अिस सम्बन्धमे कोअी रुकावट पैदा नहीं करेगे। वे भी धनी हैं। अिस समय तुम्हारी अुम्र २२ से अधिक भी नहीं है। तुम अब आन्ध्र देशमे भी नहीं जा रही हो। अभी जीवन काफी पडा हुआ है। डाटिमो तुमसे ६-७ वर्षोसे प्रेम कर रहा है। वह दूसरी लड़कीसे विवाह भी नहीं करेगा। अुमका जीवन व्यर्थ होता जा रहा है। तुम भी अधर दुखी हो।” अिस प्रकार माता-पिताके समझानेपर हेलीनाने डाटिमोसे बोलना-चालना शुरू किया। अिसपर अुसके माता-पिता बहुत ही प्रसन्न हुअे।

सप्ताहमे अेक बार हेलीना और डाटिमो टहलने जाने लगे। डाटिमोने बहुत समय तक अपने प्रेमको व्यक्त नहीं किया। अेक बार प्रकट करनेपर वह डाटिमोको छोड़कर चली गअी थी। अितना होनेपर भी डाटिमोको अपने प्रेमको प्रकट करता और हेलीना सुनकर चुप रह जाती।

लगभग दो वर्ष बीत गये हैं। हेलीनाके हृदयमें डार्टिमोके प्रति प्रेम है या नहीं—डार्टिमोको पता नहीं, पर उन दोनोंके बीच घनिष्ठ परिचय हो गया। डार्टिमो हेलीनाके कंधेपर हाथ रखता तो हेलीना उसे हटाती नहीं, और न ही उससे दूर हटकर बैठती। लोग उन्हें पति-पत्नी मानते, किन्तु वे विवाह क्यों नहीं करते, इस बातका सबको सदेह था।

एक दिनकी शामको उस नगर प्रदेशके गिरिश्रृंगपर दोनों बैठे हुए थे। डार्टिमोने हेलीनाके हाथोंको अपने हाथोंमें लेकर कहा—“हेलीना! मैंने अपना जीवन तुम्हें समर्पित किया। मैं तुमसे प्रेम कर रहा हूँ। पर तुम नहीं करती। मुझे मालूम है कि तुम मुझसे प्रेम नहीं करोगी, मुझे केवल एक परम आप्त मित्र मानती हो। तुम्हारे मनमें जो चिन्ता है, उसका कारण मुझे ज्ञात नहीं हो रहा है। वही चिन्ता तुम्हें जलाये जा रही है। यदि मैं तुम्हारा परम आप्त मित्र हूँ तो वह रहस्य मुझे बताओ। मैं भी तुम्हारी कठिनायीमें हाथ बैठाऊँगा।”

डार्टिमोके इस प्रकार गिड़गिड़ानेपर हेलीनाने जवाब दिया—
“डार्टिमो! तुमसे बढ़कर मेरा आप्त मित्र और कोई नहीं है। मुझपर तुम्हारा जो प्रेम है, वह दैवी प्रेम है। मैं तुमसे पुनः प्रेम नहीं कर पा रही हूँ। इसलिये मुझसे बढ़कर कोई कृतघ्न इस विश्वमें दूसरी नहीं हो सकती। मैं अपनी कहानी किसीको सुनाना भी नहीं चाहती थी। मैं इस कहानीको तुम्हें सुनाकर तुमसे पुनः प्रेम न कर सकनेके पापका प्रायश्चित्त करूँगी।”

तुम्हें मालूम है कि मैं अत्यन्त रूपवती हूँ। इसपर मेरे अभिमानकी सीमा नहीं है। इसलिये भगवानने मेरे घमण्डका अिम प्रकार दण्ड दिया है। जबसे होश सँभाला, तभीसे मैंने निश्चय किया कि मैं एक चक्रवर्तीकी ही पत्नी हो सकती हूँ। किसी अन्यकी कदापि नहीं। चामर-ग्राहिणीके कर्तव्यका परिचय देनेपर मैंने अधिकारियोंकी बातोंपर विश्वास नहीं किया। उस चक्रवर्तीके हृदयपर अधिकार कर सकनेका अहंकार मेरे मनमें था। लेकिन आन्ध्र देशमें पहुँचने तक मेरे मनमें यह भय बना रहा था कि वहाँपर मुझसे भी बढ़कर रूपवतियाँ होंगी। पर मुझसे बढ़कर कोई सौन्दर्यवती उस देशमें न थी, इस बातके साक्षी स्वयं आन्ध्र-चक्रवर्ती ही है। मेरे

सौन्दर्यपर प्राकृत भाषाके कवियोंने कविता की। चित्रकारोंने मेरे चित्र तैयार किये। शिल्पियोंने मेरी मूर्तियाँ गढ़ीं। चक्रवर्तीके अन्तःपुरमें वसन्त ऋतुमें सौन्दर्योत्सव मनाये जाते हैं। अनु अत्सवोंकी रानी मैं ही थी। चक्रवर्तीत्वके प्रति जो सम्मान व मर्यादाये होती हैं, वे सब मेरे प्रति भी हुआ करती थीं। मेरे नेत्रोंमे आरती अुतारते थे। मुझे देखनेके लिये बड़े-बड़े राजा-महाराजा चक्रवर्तीकी राजसभामें आया करते थे।

मेरा मन चक्रवर्तीपर अनुरक्त था। भाभी डाटिमो ! वे चक्रवर्ती केवल अधिकार-बलसे ही चक्रवर्ती नहीं थे। वरन् वे समस्त पुरुष सौन्दर्यका मूर्त रूप थे। उनके सौन्दर्यके सामने मेरा सौन्दर्य ही क्या है ? हे डाटिमो ! मैं अपने दुर्भाग्यका परिचय कैसे दूँ। वे चक्रवर्ती अेकपत्नी-व्रती हैं। अक्सर हम सुना करते हैं कि प्राच्य देशके राजा अनेक पत्नियाँ रखते हैं। यह बात सत्य नहीं। यदि किसी राजाके दो-तीन रानियाँ हों, तो भी अन पत्नियोंको छोड़ अन्य स्त्रियोंकी वे कामना नहीं करते। वे महान नीतिज्ञ हैं। अन देशोके सम्बन्धमें हम जो कुछ भी बुरा सोचा करते हैं, वह ठीक नहीं। वह अेक दिव्य जाति है।

मुझे अिस बातका आश्चर्य है कि वे चक्रवर्ती मेरे सौन्दर्यकी आराधना करते हुअे मेरे प्रेमको नहीं पाते। मेरे सौन्दर्यके वास्ते अेक चक्रवर्तीकी पत्नीके जैसा मेरा आदर करते थे। सौन्दर्य नामक यदि कोअी साम्राज्य है, तो मैं अुसकी महाराज्ञी थी। अन्य विषयोंमे मैं किसी कामकी नहीं। चक्रवर्ती और अनकी पत्नी दोनों मेरे सौन्दर्यपर मुग्ध थे। पर चक्रवर्ती कभी भी मेरी तरफ प्रेम-भरी दृष्टि नहीं दौड़ाते थे। मेरा स्पर्श करते हुअे आगे न बढ़ते, मेरा हाथ पकड़नेका प्रयत्न न करते। मेरे पाम बैठ रहनेकी अिच्छा भी अनमे नहीं थी।

मैं अपनी बात क्या कहूँ ? मेरा हृदय चक्रवर्तीमय हो गया था। मुझे निद्रा नहीं आती थी, भोजन करनेकी अिच्छा तक नहीं होती थी। मेरा सारा जीवन अन्धकारमय हो गया। मेरी अिच्छा होती कि सदा चक्रवर्ती दरबार लगाअे रहे। अुसी समय अनके दर्शन होते हैं और वर्षमें अेक बार वसंतोत्सवके समयमे भी।

भाभी डाँटिमो ! मैं अबतक मर जाती । नीद और अपनी कामना-पूर्ति के अभावमें मेरा शरीर शुष्क हो गया था । पर दरबारमें चक्रवर्तीके दर्शन होते ही मेरा शरीर प्रफुल्लताके मारे पुष्ट प्रतीत होता था । असा लगता था मानो अंके नेत्र अमृतकी निधि ही है !

अस प्रकार चार वर्ष तक मैंने सहन किया । असके बाद मुझमें सहन-शीलता नहीं रही । डाँटिमो ! तुम्हारी सहनशीलताके लिये शत-शत नमस्कार हैं । मुझसे अतना प्रेम करके प्रेम-विधानको आठ वर्षतक सहन करते रहे, जीवन पर्यंत भी सहन कर सकते हो । असिलिये हम दोनोंके प्रेमकी तुलना नहीं हो सकती । हे भाभी ! असिलिये हम दोनोंका सम्बन्ध अचित नहीं । तुम प्रेमसे पूर्ण हो, मैं कपमाविहीन नारी हूँ ।

अक दिन मैं चक्रवर्तीके बिस्तरके पास पहुँची । अन्तःपुरकी स्त्रियाँ अुस दिन अुत्सव मना रही थी । महारानी अुस दिन चक्रवर्तीके यहाँ जाने-वाली थीं । अुन्होंने अस आशयकी खबर भेज दी थी । पर आधी रातके समय महारानीको मालूम हुआ कि वह अब किसी कारणवश नहीं जा सकती । यह समाचार चक्रवर्ती तक पहुँचानेके लिये महारानीने किसीको भेजा । अुस समय मैं चक्रवर्तीके कमरेके पास थी । चक्रवर्ती सो रहे थे । मेरे मनमें अेक अिच्छा पैदा हुअी । मेरे आलिननके बन्धनमें तथा मेरे चुम्बनोंकी गरमीमें जागृत चक्रवर्तीने कैसे पता लगा लिया कि अुनके आलिननमें स्थित मैं महारानी नहीं हूँ, मुझे ज्ञात नहीं । मैंने मणिमय दीपकपर गाढा कपडा ओढाकर सारे कमरेको अन्धकारमय बना दिया ।

दूसरे ही क्षण मैं दीपकके प्रकाशमें खड़ी थी । वे चक्रवर्ती मेरे प्रति प्रेमविहीन थे, पर दयाविहीन नहीं । हे डाँटिमो ! अुस अपराधके लिये फाँसीकी सजा दी जाती है । चक्रवर्ती छोड़ भी दें, पर महारानी नहीं छोडती । सजा भोगनी ही पडती है ।

मेरी चामर-ग्राहिणीकी नौकरी चली गअी । अेक सप्ताहभरमें पुत्रीको ससुराल भेजनेकी भाँति मेरे साथ फौजका रक्षण देकर, दो अूँटोंपर बड़ी संपत्ति लदवाकर चक्रवर्ती और अुनकी पत्नीने मुझे अपने माता-पिताके घर भेज दिया ।

अस समय सारा जगत अन्धकारावृत्त था । गिरि-शिखरके अेक वृक्षपर बैठा अेक अुल्लू बोल रहा था ।

२.

हिमालय-किरण

—स्व. श्री अडिवि बापिराजु

आपका जन्म ८ अक्टूबर सन १८९५ अी. में आन्ध्रके पश्चिम गोदावरी जिलेके भीमवरम् नामक अेक छोटे-से नगरमें हुआ था। आपने राजमहेन्द्रीके



गवर्नमेण्ट कालेजसे बी.अे. किया। सन १९-२१-२२ के स्वराज्य-संग्राम आन्दोलनमें भाग लेनेके कारण आपको कारावास भुगतना पड़ा। मछलीपट्टनम्की प्रसिद्ध आन्ध्र जातीय कला-शाला (राष्ट्रीय महाविद्यालय) में प्रख्यात चित्रकार श्री प्रमोदकुमार चट्टोपाध्यायके समीप आपने चित्रकलाका अभ्यास किया और साथ ही मद्रासके कालेजमें भर्ती होकर बी. अेल. की परीक्षा पास की। आपने कुछ समय तक अपने जन्म-स्थानमें वकालत की। “त्रिवेणी” नामक साहित्य,

संस्कृति, कला, पुरातत्वकी अंग्रेजी मासिक-पत्रिकाके संयुक्त सम्पादक-पदपर रहकर आपने संपादनके क्षेत्रमें भी काफी कार्य किया। सन १९३५ से ३९ तक मछलीपट्टनम्के अुक्त राष्ट्रीय महाविद्यालयमें प्रिन्सिपलके पदपर योग्यतापूर्वक कार्य किया। कुछ समय तक सिनेमा क्षेत्रमें आर्ट डाइरेक्टर रहे। फिर हैदराबादसे निकलनेवाले दैनिक “मोजान” के प्रधान सम्पादक रहे। आन्ध्र-विश्वविद्यालयसे आपके प्रसिद्ध सर्वश्रेष्ठ दो चित्रों—“नारायण राव पेशवा” और “तिक्कन सोमयाजी”पर आपको पुरस्कार मिल चुका है।

“हिमबिन्दु”, “नारायणराव”, “गानेगन्नरेड्डी”, “कोनगि”, “जाजियल्लि” ये आपके अपुन्यास हैं।

“अंजलि”, “हम्पीके खंडहर” आदि कहानी-संग्रह; “तोलकरि”, “हारती”, गीत-संग्रह और “डुक्किटेटु”, “अुषासुन्दरी”, “भोगीरलोय” रेडियो-रूपक हैं।

आन्ध्रके अनेक युवकोंको आपने चित्रकलाकी अुच्च शिक्षा दी है। २२ सितम्बर सन १९५२ को आपका स्वर्गवास हो गया।

* * *

हिमालय-किरण

अक दिन सबेरे-ही-सबेरे आनन्दस्वामीने हरिद्वारके स्नान-घाटपर अस युवतीको देखा। देखते ही अुनके हृदयमें अक भीषण टीसकी ज्वाला जागृत हुअी। अुनका शरीर काँप गया।

मुख-मण्डल लाल हो गया। अुनकी तपस्या अन्तर्धान हुअी। स्वामीजीकी दृष्टि अुनके नियंत्रणसे हटकर स्नान करनेवाली अस सौन्दर्यकी राशिवाली नारी पर जा अटकी। अस युवतीके भीगे हुअे कपड़ोंमेंसे असका सौन्दर्य झलक रहा था। शिशुता और जीवनकी दीप्ति, धूपछाँव रेशमी वस्त्रकी तरह चमक रही थी। स्वामीजीकी दृष्टि शिशुत्व अेवं मुग्धत्वके साथ झूलनेवाली अस युवतीके मुख-मण्डलपर केन्द्रित हुअी और कभी-कभी अस युवतीके कंठ, बाहु-मूल, अुरोज तथा आँखमिचौनी खलनेवाले कटि-विलासपर दौड़ने लगी।

सहज भावसे प्रशांत हो, दिव्य ज्योतिकी भांति प्रकाशित होनेवाले अस वाल-योगीका मुख-मण्डल विवर्ण हो गया।

अिसी समय बाल-शंकरके स्वरूपका स्मरण दिलानेवाले अुन आनन्दस्वामीको, जो स्नान कर रहे थे, काश्मीरी सुन्दरीने देखा।

वह सुन्दरी? श्रीनगरकी अक काश्मीरी ब्राह्मणवाला है। असका शिरोमुण्डन करानेके अभिप्रायसे अस बालाके पिता असे हरिद्वार ले आअे हैं।

छह वर्षकी छोटी अवस्थामें अुस बालाका विवाह अेक अभागेके साथ हुआ था, लेकिन वह अुस दुधमुँही लड़कीको निरीह छोड़, सदाके लिअे अिस संसारसे चल बसा ।

वह बाला संसारसे सदा अनभिज्ञ ही रही । अुसे अिस बातका दुख नही, वह पति विहीना है । जब कभी अुसकी माता अुसे अपने आलिंगनमें लेकर कहती—“ मेरी बेटी, तेरे भाग्यका सितारा डूब गया है, तेरे जीवनका आधार अितनी छोटी अुम्रमें ही टूट गया है ” तो अुसका भाव अिसकी समझमें बिलकुल न आता ।

१६ सालकी अवस्थामे वह युवती कमल जैसी विकसित हुअी । अुसके मुख-मण्डलपर वैधव्य नही दीखता था । बल्कि वह सौभाग्य-देवी मालूम होती थी ।

वह अपरिचित सौन्दर्य-राशि, शिल्प-कलाके मुन्दर नमूनेकी मूर्ति, अुस काश्मीरी ब्राह्मणके गृहको ज्योतिर्मय बना रही थी । १८ सालकी अुम्रमें तो अैसी दिखाअी देती थी मानों अुसकी ओर देखने मात्रसे अुसे नजर लग जाअेगी ।

अुस युवतीकी फूफीने कहा—“ हमारे घरमें अिस सौन्दर्यके रहनेसे वह अष्टविध पापकृत्योंका आश्रय बन जाअेगा । अिस बाल-विधवाका सिर मुँडवा देना चाहिअे । ” अुसकी माता कुढकर रह गअी ।

आनन्दस्वामीजी ? राजमहेन्द्रीमें बी. अे. पास करके, कृष्णा जिलेके कलेक्टरेटमें ४०) मासिक वेतनपर नियुक्त हुअे । २५ वर्षकी अुम्र तक रेवेन्यु अिन्स्पेक्टरी करते भीमवरममें निवास कर रहे थे । अुस समयका अुनका नाम रामचंद्राव था । वे अंक कुलीन घरानेमें पैदा हुअे थे । अुनका विवाह भी अेक मुसम्पन्न घरकी युवतीमें हुआ था । अुनका पारिवारिक जीवन शान्तिपूर्वक बीतता जा रहा था । स्वर्णमूर्ति जैसी पत्नी और दो लड़के और दो लड़कियोंका परिवार अुनके घरको मुखका आगार बना रहा था ।

अेक दिन, रातको न मालूम रामचंद्रावके मनमें कौनसी भावना जागृत हुअी कि वह किसीसे बिना कहे अुस अमावस्याकी अँधियारीमें अेका-अेक भीमवरमसे अन्तर्धान हो गअे ।

सबेरे रामचन्द्ररावका अंक पत्र देखनेको मिला । उसे देखकर पत्नीको असीम दुख होना स्वाभाविक था । सिर पीटते हुअे बच्चोंका ख्याल न कर वह भी कुअेमे गिर पड़ी । लोगोने उसे बाहर निकाला । सबको रामचन्द्ररावके लौटनेकी आशा की, लेकिन वह आशा व्यर्थ सिद्ध हुअी । मित्रोने रामचन्द्रराव को मूर्ख, कायर कहकर सन्तोष किया ।

अस समाचारसे अवगत अंक व्यक्तिने, जो काशीकी यात्राको गया था, वहाँपर रामचन्द्ररावको देखा और उसके समुरको अस आशयका अंक तार दिया । “रामचन्द्रराव यहाँपर है । शायद संन्यास ले रखा है । अुनकी पत्नी व बच्चोको लेकर जल्दी आ जाअिअे ।” सब लोग वहाँ पहुँचे । देखा, रावजी सन्याशियोंके साथ योगाभ्यास कर रहे हैं । अुन्हे देखकर अुनकी पत्नी मूर्छित हो गअी । बच्चे आँखे फाड़-फाड़कर पिताजीको विस्मयपूर्ण दृष्टिसे देखते रह गअे ।

सबने घर लौटनेकी प्रार्थना की । लेकिन रामचन्द्रराव शाकर भाष्यका अंक अपुदेश देने लगे कि “संसारसे तर जानेके लिअे वैराग्य ही अंक मात्र साधन है ।”

रामचन्द्ररावके गुरु यतीश्वरानन्दजीने सबको समझाया-बुझाया । हिमालयके बुलानेपर कौन लौट सकता है ? यही रामचन्द्रराव वहाँके आश्रममें अब आनन्दस्वामीके नामसे पुकारे जाते हैं ।

(२)

अुस युवतीको देखते हुअे आनन्दस्वामीजीका शरीर अपने नियंत्रणसे मुक्त होता जा रहा था । अुनका दिल रेलके अिजनकी भाँति धड़कने लगा । अुनका मन जैसा आज काबूसे बाहर हो गया, वैसा कभी नही हुअा था ।

सहमते हुअे आनन्दने स्नान किया और हरिद्वारके समीप स्थित आश्रममें चले गअे ।

यह कहाँका घोर पाप है ? सारा विश्व क्या रसातलमें धँसता जा रहा है ? हिमालय तो नहीं टूट रहे हैं ? अपना सर जमीनपर पटकने लगे ।

आज तककी तपस्या भग्न हो गयी। गंगोत्रीके समीप आनन्दस्वामीने तीन वर्ष तक परम तप किया था। अन्होंने प्राकृतिक सत्यको कभी मिथ्या नहीं माना था।

पिछले दिनों उनका मन चंचल रहता। “शिवोऽहं” का ध्यान और दीक्षासे पूर्ण महायोग द्वारा मन स्थिर हो गया। कुण्डलीको जगाया। पद्चक्रोंको पारकर ऊपर अठा। प्राण शक्ति विकल्प समाधि—आगेकी सीढ़ियाँ हैं।

अस नीरव अन्धकारमें अकाकी बैठे हैं। देह शिथिल है, हृदय जम गया है, कुछ सप्ताह तक चेतना-रहित हो पड़े रहे। बाह्य ज्ञान नहीं रहा। अन्तर्ज्ञानका तो कभीका अन्त हो चुका था। हुआ क्या था ?

अक दिन अचानक वह जागृत हुआ। गुरुभाअियोंका—“शिवोऽहं” “शिवोऽहं”...का जप सुनायी दिया। धीरे-धीरे फलाहार प्रारम्भ किया; दूध, रोटी लेने लगे।

गुरु यतीश्वरानन्दजीने आनन्दको आदेश दिया—“प्रथम सीढ़ी तुमने पार की है, दूसरीके लिये तैयार हो जाओ।” उनकी आत्मा महाशक्तिमें स्थित रही। उनके भालपर तेज दमकने लगा। गुरुजीके समक्ष अनेक ग्रन्थोंका अध्ययन किया, वेदान्तकी विविध वैराग्य भावनाओंको अवगत किया। सब अैसा मालूम होता था, मानो उन सबसे वह पहले ही परिचित हैं।

कैलाश पर्वतपर निकटकी अक गुफामें आनन्दस्वामीने दूसरी बार तपस्या करनेके हेतु पद्मासन लगाया। अिस बार वह जल्दी ही विकल्प समाधिमें पहुँचे। उनके शरीरमें मानो हजारों विद्युल्लताओं दौड़ गयी।

छह मास तक अखण्ड समाधि। अपार आनन्द। “ॐ” “ॐ” “ॐ”...का प्रणव मन्त्र।

आनन्दजीने अपने नेत्रद्वय खोले। उनका मुख सम्पूर्ण चन्द्रमण्डल ही था। उनके देहसे प्रकाश फूट रहा था। उनके ओंठोंसे मंद हास छूट रहा था। उनके नेत्रोंसे दिव्य ज्ञान-ज्योति निकल रही थी।

आनन्दजीको अपने गुरुदेवसे आज्ञा मिली थी—“हरिद्वारके समीप अपना आश्रम बनाओ। प्रति दिन भगवानके मन्दिरके सामने स्थित घाटपर स्नान कर उनके दर्शन करो। तदनंतर आश्रममें जाकर तप करो।”

अस सुन्दरीका झलकता हुआ मुख-मण्डल हर मिनट सामने दिखायी दे रहा था। आनन्दजी सिर घुमाकर पद्मासन लगा ध्यान करने लगे। वह काश्मीरी बाला थालीमें फल और फूल लेकर पासमें आयी और नमस्कार कर पार्श्वमें बैठ गयी। अस बालाके अंग आनन्दजीके शरीरका स्पर्श करने लगे। युवतीने आनन्दजीके भालको चूमा।

“ओह !” कहते आनन्दजी तुरन्त अठ बैठे। वहाँपर कोयी नहीं है। थाली नहीं, युवती भी नहीं है। अकेले वही है और चारों तरफ शून्य कुटीर।

तपोभग हुआ। अनेक जन्म व्यर्थ हुए। वह अब अपने गुरुदेवको अपना मुँह कैसे दिखा सकेगे। अपना सर जमीनपर पीटने लगे; रोअे। अन्होंने लाठी लेकर शरीरपर प्रहार किया। अससे शरीर फूलकर कण्ट देने लगा।

वह बाला अपनी ओर हाथ फैलाकर अत्यन्त प्रेमके साथ आगे बढ़ती आ रही है।

आनन्दजी जोरोसे हरिका नाम स्मरण करते अुन्मत्त हो गगाके किनारे दौड रहे हैं। गंगाकी धारा प्रतिध्वनित होने लगी।

“मेरी प्यारी बेटी। तेरा भाग्य ही कहाँ रहा ? अब तेरा शिरो-मुण्डन कराना ही होगा। क्या मैंने नहीं कराया ? माना, तूने केश रखे भी, अन्हें देखकर सतोष करनेवाला है कौन है ?” यह कहते-कहते निरुपमाकी फूफी असे मजबूरन खीच रही है। असकी माता मुँहपर घूँघट डाले फूट-फूटकर रो रही है। पिता पण्डित दीनानाथ अपनी पुत्रीका हाथ पकड़कर असे नाभीकी ओर खीच रहे हैं।

नाभी हँसते हुए अुस्तरेको सानपर चढ़ाता हुआ अस्पष्ट स्वरमें कह रहा है—“कितनी ही मुन्दरियोकी मुन्दर वेणियोंको निगलकर अस अुस्तरेने गगा मायीकी अर्पण किया है।”

“अरे मैं अपना सिर नहीं मुँड़ाऊँगी।” कहती हुयी निरुपमा बाघके सामने पडी हुयी हरिणीकी भाँति छटपटाती हुयी पीछे हटती जा रही थी। असे अपने पतिकी मृत्युका दुख नहीं है। असे लोग घृणाकी दृष्टिसे क्यों देखते हैं, यह भी असे मालूम न था। वह सदा अपने घर—श्रीनगरमें खेला करती थी। पिता धनवान थे। वस, वही अुनकी अेकमात्र सन्तान थी।

पण्डित दीनानाथ कट्टर सनातनी है। अपने आँमुओको रोकते, कोपका अभिनय करते अपनी पुत्री निरूपमाकी दोनों भुजाओं पकड़े जबर्दस्ती उसे नाभीके पास बैठाना ही चाहते थे कि वह युवती “स्वामीजी! मेरी रक्षा कीजिए” कहकर नीचे गिर पड़ी।

गंगाके तटपर अनुमत्तकी तरह दौड़नेवाले आनन्दस्वामी उस समय वहाँ पहुँचे। “कौन है?”—नाभीने कहा—“प्रभु! इस बदनसीब बाल-विधवाकी वेणीको गंगा माँगीको अर्पण करने जा रहे हैं।”

स्वामीजीने पासमें काश्मीर युवतीको बेहोश पड़ी देखा। तुरन्त उसे उठाकर उसके मस्तकको अपनी गोदमे रखा और “शिवोऽहं” “शिवोऽहं” जपने लगे। युवतीने आँखें खोली। लज्जासे युवती उठ खड़ी हुई और घूँघट सँवारने लगी।

पण्डित दीनानाथ स्तब्ध हो देखते रह गये। स्वामीजी प्रलयकालके रुद्रकी तरह गर्जन करते हुये शास्त्र और शास्त्रातीत विषयोंका उपदेश देने लगे—“अस अबोध बालाको कुरूपा करनेको तुम कैसे तैयार हो गये हो? किसीको क्या जबर्दस्ती वैराग्य दिलाया जा सकता है? जो वैराग्य मनमें नहीं है, वह क्या सिरके केश मुँड़ा देनेसे पैदा हो सकता है?”

पण्डित दीनानाथका मन वास्तवमें अपनी पुत्रीका मुण्डन करानेको नहीं मानता था, लेकिन समाजके डरसे ही वे तैयार हो गये थे। इसीलिअ वे स्वामीजीसे क्षमा माँगने लगे—“स्वामीजी, क्षमा कर दीजिए। जब तक मेरी पुत्री स्वयं योगिनका वेष धारण करनेकी अच्छा प्रकट नहीं करेगी, तबतक मैं उसके केशोको नहीं निकलवाऊँगा। लेकिन आप जैसे ऋषियोंके उपदेशामृत पाकर हमारा परिवार धन्य हो जायेगा।”

(३)

आनन्दजीका हृदय तूफानके समयका-सा महासमुद्र हो गया। क्या विश्वामित्रका तपोभंग नहीं हुआ था? वह तात्कालिक राव था। उसका अन्त उस सुन्दर कान्ता-परिष्वंगसे ही हुआ था। वह क्या महापाप नहीं है? तो क्या अपने कर्तव्यकी च्युति हुई? पलभरके लिअ उस युवतीका सुन्दर ते....२

वदन अुनके हृदय-पटलपरसे विलग नहीं होगा। दिव्य सुन्दरीने जब अुनका स्पर्श किया, तो अुनकी देहमे जो पुलक प्रकट हुआ, जो आनन्द हुआ, वह क्या समाधिसे प्राप्त आनन्दसे अुत्कृष्ट आनन्द है अथवा तत्समान ?

अपने पापका कोअी निराकरण नहीं है ? अपने अिस अधःपतनका अन्त कहाँ होगा ?

आनन्दजीने कितने ही देशोंका अिस अवस्थामें भ्रमण किया था। जहाँ कही गये, सबने सम्मानके साथ अुनका बड़ा आतिथ्य-सत्कार किया। स्वामीजीके मुँहपर जो मोहकी हिलोरेँ अुठ रही थी, अुन्हें विधवा स्त्रियोंने दिव्य पारलौकिक कान्ति समझा।

अिस बीच अुन्होंने कितने ही तीर्थ व पुण्य-स्थानोंका भ्रमण किया। कहाँ-कहाँ गये, अुन्हें स्वयं नहीं मालूम। यह परिव्राजकता थी अथवा अुस भामिनीमें आसक्तिपूर्ण परवशता थी, बताया नहीं जा सकता। घूम-घूमकर नेत्र खोलकर देखा तो वह काश्मीर देश ही है। श्रीनगरके अेक भवनके सामने अुन्होंने अपनेको खड़ा पाया।

स्वामीजीको घरके अन्दर ले जाया गया। अुनका आतिथ्य अेवं अुनकी सेवा की गयी। अब आनन्दजी काश्मीरी पण्डित दीनानाथके गृह-गुरु हैं। स्वामीजीके हृदयकी जड़को हिलानेवाली वह बाला अुनकी परिचर्या कर रही हैं।

जिस दिन संन्यासी आनन्दस्वामीजीने अुस युवतीकी रक्षा की थी, तबसे वह अुस बालाके साक्षात अीश्वरावतार बन गये। हिमालयके धवल शृंगोंपर नृत्य करनेवाले नटेश्वर ही मानो अुस बालाके लिये वे बाल संन्यासी बने।

सदा स्वामीजीकी सेवा करनेसे अुस बालाका जन्म धन्य हो गया।

जब अुनकी गोदमें वह पड़ी थी, अुस समय अुसका शरीर आनन्दसे परवश हो गया था, अुनके मुख-मण्डलपरका मन्द हास अैसा प्रतीत होता था, मानो हिम-शिखरपर ज्योत्सना छिटकी हुआ हो। क्या मनुष्य रूप धरे वह भगवान तो नहीं हैं ! प्रति दिन अुनकी सेवा करनेसे ही तृप्ति होगी। अुनके पैर दबाने होंगे। वे भी अुसे मुक्ति-मार्गका ज्ञान कराते, सिरपर हाथ रख आशीर्वाद देंगे !

अस तरहके विचारोंमें डूबी हुअी अस काश्मीरी बालाको “स्वामीजी पधारे हैं”—अपने पिताके ये शब्द सुनाओ दिअे। वह काँप गओी। नेत्रोंमें आनन्दाश्रु भर आओे। सारा शरीर अतिशय आनन्दके मारे हल्का हो गया। स्वामीजीने अुनकी कामना सुनी है। अुनका तप व्यर्थ नहीं गया है। अुनके गुरु स्वयं अुन्हें खोजते हुओे नहीं आओे हैं ?

स्वामीजी घरमें आओे। काश्मीरी वाला स्वामीजीके पैरोंपर गिर पड़ो और अुनकी पद-धूलि अुसने सिरपर चढा ली।

अुस नगरमें आवाल-वृद्ध स्वामीजीकी परिचर्या कर रहे है। फल, दूध, मिठाओी आदि पहुँचा रहे है। स्वामीजीको पलभरके लिओे भी अवकाश नहीं है। लोग सदा अुन्हें घेरे रहते है।

स्वामीजीने संसारकी असारता, मनकी दुर्बलता, कर्म, ज्ञान आदिकी अुत्कृष्टताका निरूपण किया। सैकड़ोंकी संख्यामें अुनके भक्त बैठे थे। स्वामीजी अुन्हें अपदेश दे रहे थे।

रातमें स्वामीजीकी परिचर्या निरूपमा ही करती रही। विस्तरपर दुपट्टे और शाल विछे थे; जपके लिओे कृष्ण-मृगकी छाल वगैरह। स्वामीजीके कपड़े धोना, फलोके छिलके निकालना, दूध गरम करना, पैर दबाना, अित्यादि निरूपमाके काम थे। अससे दोनोंको आनन्द प्राप्त होता था। भक्तिके साथ परिचर्यामें लीन पुत्रीको देख माता-पिताको सन्तोष होता। वैराग्य-पथमें चलती हुओी वह समस्त दुखोंको भूल जाओगी न ?

अितने वर्षोंकी तपश्चर्याका बल सम्भवतः और भी हो। वह बाला अुनके पास रहकर परिचर्या करती रहती तो मोहको रोक नहीं पाती। अुसके साथ कामकी कल्पना मात्रसे स्वामीजी डरते थे। तो भी अुनका मन विवश हो पतवार-च्युत नावकी तरह समुद्रमें कूदनेको तैयार था।

स्वामीजी किसी-न-किसी वहाने अुस युवतीका स्पर्श करते थे। अुसके केश सँवारते और आध्यात्मिक रहस्योका बोध कराते समय अुसे बीच-बीचमें हृदयसे लगाते।

स्वामीजीपर अुसका मोह नहीं, स्वामीजी ही अुसके देवता है, सर्वस्व है। स्वामीजीकी आज्ञा हो तो वह अुन्हें अपनी देह तक अर्पण कर सकती है,

अपने पिताके हृदयपर कटार भोंक सकती है और झेलम नदीमें भी कूदकर प्राण त्याग सकती है। वह अपने सर्वस्वका त्याग कर सकती है। परन्तु स्वामीजीको छोड़कर बपणभर भी वह नहीं रह सकती।

अक दिन स्वामीजीने पूछा—“बेटी ! मेरी परिचर्या क्यों करती हो ?”

“अपने देवताकी परिचर्या करना क्या आश्चर्यकी बात है ?”

“सब अपने लिअे आप ही देवता है। मेरा महत्व ही क्या ?”

“अस रहस्यको समझनेके अपरान्त सब अपने लिअे आप ही देवता हो सकते हैं। तबतक गुरु ही देवता है।”

“लेकिन सब प्रकारकी अत्कृष्टताओसे पूर्ण व्यक्ति ही गुरु कहलाने योग्य है, न कि मेरे जैसे”

“पापका शमन हो। अँसा न कहिअे। आप स्वयं भगवानके ही अवतार है।”

आनन्दस्वामीकी सारी तपस्या नष्ट हो गयी।

किसी अक मुहूर्तमें आनन्दजी अपनी अिच्छाओंको रोक नहीं सके। परिणामतः निरुपमा अुनके आलिंगनकी बलि पड़ गयी।

वह संधान-मुहूर्त पवित्र था, या पाप-पूर्ण था ? अुसी रात्रिको अुन्होंने लज्जासे सिर झुकाकर, भयकंपित हो, हृदयमें पश्चात्तापने दावानल रूप धारण किया और वे घर छोड़कर भाग खड़े हुअे।

निरुपमाने अपने जन्मको धन्य माना। वह अँसी तेजस्विनी बनी, मानो अुसे भगवानके दर्शन हुअे हों। अुसके तेजको कोअी नहीं पा सकता था।

प्रातःकाल होते ही पिताने पूछा—“बेटी, स्वामीजी कहाँ है ?”

निरुपमा—“तपस्या करने गअे है।”

माता—“कब गअे है ?”

निरुपमा—“बहुत ही सबरे।”

पिता—“बेटी ! तेरा मुख-मण्डल प्रज्वलित हो रहा है। क्या स्वामीजीने तुझे अपुदेश दिया है ? वड़े-बड़े ऋषि-मुनियोकी तपश्चर्यासे भी प्राप्त न होनेवाला महाभाग्य तुझे अपने पूर्वजन्मके सुकृतके कारण प्राप्त हुआ है।”

तेजीके साथ पीछा करनेवाले भयंकर शेरकी पकड़मेंसे छूटकर भागनेवाले हिरणकी तरह आनन्दजी हिमालय-पहाड़ोंमें भाग गये। सारा संसार अन्हें अन्धकारमय प्रतीत हुआ और ऐसा मालूम होता था मानो हिमालयका शिखर टूटकर अुनके अूपर आ गिरा हो।

शुभ्र हिमालय पर्वत-पंक्तिको देखकर अुन्हें मलिन अेवं सड़े-गले अपने जीवनका स्मरण हो आया। अुन्होंने संन्यास ही क्यों धारण किया ? तीव्रताके साथ चलनेवाली हृदयकी धड़कनके आवेगको वे रोक न सके। तेजीसे अुस महान पर्वतकी घाटीमें वे कितनी दूरीपर जा गिरे हैं, अिसका अुन्हें पता तक नहीं।

वहाँ बहनेवाले झरनोकी ध्वनि सुनायी दे रही थी। वृक्ष और पत्थर भी अुनके साथ बहते आ रहे थे। ऐसा लगता था, मानो अेक ही मिनटमें सिर फूटकर टुकड़े-टुकड़े हो जाअेगा और फिर अुनका स्वरूप ही कहीं दिखायी नहीं देगा।

“शिवोऽहं ! शिवोऽहं !!”....कहते-कहते आनन्दस्वामी बेहोश हो गये।

निरुपमा दिन-प्रति-दिन महातेजस्विनी होती जा रही है। अुसके मुख-मण्डलकी कान्तिको कोयी भी देख नहीं पा रहा है।

वह शीघ्र ही विश्वको अेक शिशु प्रदान करने जा रही है। अिस बातका पता जब घरके लोगोंको लगा तो अुसकी माता सिर पीटने लगी और बोली—“मेरी बेटी, तुमने घरको ही डुबोया। कयी पीढ़ियों तक हमारे परिवारोको मुक्तिसे दूर कर दिया। मुसकुराती क्यों हो ? क्या वह दुष्ट संन्यासी ही है न ?”

माताका दुख अुसकी समझमें नहीं आया। अुसने अपराध ही क्या किया है ? केवल स्वामी द्वारा अुपदेशित मन्त्रका पठन मात्र किया है। अुस दिन वह अपनी बेटीको देख नहीं सकी।

अेक सप्ताहमें यह समाचार पण्डित दीनानाथको भी मालूम हो गया। अुनके भी क्रोधकी सीमा न रही। संन्यासीकी दुष्टताका स्मरण करके अुनके मनमें बार-बार ये विचार अुठते थे कि संन्यासीके सिरके हजारों टुकड़े

कर दिअे जाअें। अश्रुधारा बहाते हुअे पण्डित दीनानाथ रोने लगे, और बोले—“हे भगवान, आपने कैसी भयानक विपत्ति मेरे सामने खड़ी कर दी ? पवित्र परिवारपर अैसा कलंक !”

वे पुनः क्रोधसे पागल हो अुठे और कहने लगे—“दुष्ट, भ्रष्टा लड़की ! तू अुस संन्यासीके जालमें फँस गयी ? स्त्री यदि सच्चरित्रा हो तो पुरुष कर ही क्या सकता है ? अुसी दिन अिसके सिरका मुण्डन करा दिया होता तो अच्छा था। अुस दुष्ट संन्यासीने वेदान्तका व्याख्यान देकर रोक दिया। अिस विश्वमे कैसा पाप भरा है !”

“अव हमें क्या करना चाहिये ? अिस दुष्टाको झेलममें क्यों न डाल दिया जाअे ? अथवा फिर अिसे विष ही क्यों न दे दिया जाअे....?” किन्तु फिर अेक दूसरा विचार अुनके मनमे आया कि अकेली सन्तान है। बड़ी प्रतीक्षाके बाद पैदा हुयी है। हे भगवान, अपने हाथोंसे अुसका गला कैसे घोंटा जाअे ?

बेटीके पास पहुँचे। अुसके प्रफुल्ल बदनको देख काँप गअे। अिस बालाके मुख-मण्डलमे अुन्हें काशीकी अन्नपूर्णाके दर्शन हुअे। बेटी, तुमने यह कर्म किया ? अुनकी पत्नीने शायद गलत समझा हो ?

“बेटी क्या कर रही हो ?”

“स्वामी द्वारा अुपदेशित मन्त्रका पारायण कर रही हूँ।”

अुस दुष्टने कैसा व्यर्थ मन्त्र दिया होगा।

“स्वामीजी तो स्वयं भगवानके अवतार हैं।”

“नहीं, तुम समझती नहीं।” हमारे परिवारको ही अुसने नरक-कूपमें ढकेल दिया है।”

आपने अिसके पूर्व जो कहानियाँ मुनाअीं, अुनमें व्यास महर्षिने धृतराष्ट्र और पाण्डुको कैसे प्रदान किया था, पिताजी ?

“म। म म.....प।”

“परम तेज सर्वत्र व्याप्त रहता है। पाप और पुण्यका आरोपण मन ही करता है।”

“.....” सिर झुकाकर खड़े रहते हैं।

दूसरे दिन सारा काश्मीरी ब्राह्मण परिवार काशी-यात्राके लिये निकल पड़ा। वहाँसे रामेश्वरम् जाते हुअे रास्तेमें मदुरा, श्रीरंगम, काँचीपुरम, तिरुपति, कालहस्ती अत्यादि तीर्थोंका पर्यटनकर यह परिवार कालीघाट (कलकत्ता) पहुँचा।

एक दिन शुभ मुहूर्तमें निरुपमाने एक पुत्र-रत्नको जन्म दिया। वंश-प्रतिष्ठाको दूषित करनेके लिये पैदा हुअे अुस मलिन रक्त-पिण्डको हुगली नदीमें फेंक देनेका पण्डितजीने निश्चय किया। दूसरे दिन पण्डितजीने कमरेमें प्रवेशकर देखा—बालकको बगलमें लिये निरुपमा सो रही है। वह बालक महान तेजसे प्रकाशमान है।

किसी अज्ञात वाणीने गम्भीर स्वरसे अुनके कानोंमें शब्द गुँजा दिये—
“पागल ब्राह्मण ! तुम्हारे कोअी सन्तान नहीं है। भगवानने अिस बालकको तुम्हें प्रदान किया है।” अिस वाणीको सुनकर पण्डितजी चौक पड़े और सोचने लगे—“लोग क्या कहेंगे ? समाजमें बदनामी होगी सो अलग। अैसी हालतमें अपना मुँह कैसे दिखाया जाअे ? तब फिर क्या कोमल फल जैसे अिस शिशुका अन्त कर दिया जाअे ? यह तो अुससे न होगा। वह कसाअी नहीं।”

पण्डितजीने विचार किया कि यदि किसीको पालनेके लिये दे दिया जाअे तो ?

पर अिस कलंकको लेगा कौन ? अुन्हें ही पालना होगा ? यदि यह कहा जाअे कि किसीके बच्चेको पालनेको लाअे है, तो लोग क्या कहेंगे ? लोगोंको यह कहकर समझाया जा सकता है, यह तो अनाथ बालक है।

+

+

+

स्वामीजीको जब होश आया तो अुन्होंने अपनेको अुस घाटीकी झाड़ियोंमें लटकते पाया। अुस झाड़ीने अुनके प्राण बचाअे। सारा शरीर दर्द कर रहा है। सिर फटा जा रहा है। वह हिल-डुल नहीं सकते हैं। झाड़ियोंकी शाखाओंने अुन्हें झुलाया। नीचे गहराअीमें बहनेवाली नदी अपनी कलकल ध्वनिके संगीतसे अुनकी पीड़ा दूर कर रही है।

बड़े प्रयत्नके उपरान्त स्वामीजी झाडीसे बाहर आये। परन्तु ऊपर भी चढ़ नहीं सकते और नीचे भी नहीं जा सकते। असा क्यों? क्या भगवानने उनको कैदमे तो नहीं डाल दिया? कुछ भी हो, अन्हें डर ही क्या है? अन्त हो जाये तो और भी अत्तम है। पद्मासन लगाकर घोर तपस्या की।

श्रीनगरमे काश्मीरी पण्डित दीनानाथका पालित शिशु अन्के महलमें बालकृष्णकी भाँति बढ़ रहा है। निरुपमादेवी योगिनी हो गयी हैं और अन्होंने अपना सिर मुँडा लिया है। बन्धु-बान्धव सभी दीनानाथजीको कलकत्तेमें प्राप्त ब्राह्मण बालकको देख आश्चर्य-चकित हो रहे हैं। कुछ लोगोको बालकके रूपको देखकर सन्देह हुआ, परन्तु दिव्य स्वरूप तपस्विनीकी भाँति दिखायी देनेवाली निरुपमादेवीको देखकर अन्हें डर हुआ और दीनानाथ पण्डितके कथनपर सबने विश्वास कर लिया।

निरुपमादेवी तपस्यामें लीन हो गयी हैं। स्वामीजीका अपदेशित वह मन्त्र ही अन्का परम मार्ग है। असे अपने पुत्रपर ममता नहीं है। दोपहरके समय पास-पड़ोसकी औरते पालकीसे, नावसे और कुछ पैदल आती और निरुपमादेवी द्वारा भगवद्गीताके रहस्योको सुनकर फूल अुठती।

कुछ समयके उपरान्त आनन्दस्वामीजी हिमालयसे अुतर आये और काशीमे रहने लगे। सिरमे जटाजूट, लम्बी भव्य दाढी और मूँछे बढ़ी हुयी हैं। वस्त्र फटे हुये हैं। सीधे जाकर आनन्दजी अपने गुरु यतीश्वरानन्दजीके पैरोपर पड़े। वह महानुभाव मुस्कुराये और आशीर्वाद देते हुअे बोले—
“वत्स! तुम्हें जो अनुभव प्राप्त हुआ, वह परा शक्तिका चिद्विलास है। गिरकर अुठे हो। पापी जगतको आँखे भरकर देख लिया। प्रारब्ध विच्छिन्न हो गया है। हिमालयका, गौरीशंकर शिखर तुम्हारा साधना-पीठ होगा।”

दो मासके उपरान्त अेक दिन प्रातःकाल पण्डित दीनानाथ जप कर रहे थे। अुस समय आनन्दजी आये और अन्के सामने खड़े हो गये। पण्डितजीने आँखे खोलकर देखा। पहले पहचान नहीं पाये। कैलाश पर्वतपर विहार करनेवाले देवताओमेसे कोअी अेक देवता समझा। आँखें मलकर देखा और कंपित कण्ठसे मन्त्रोच्चार प्रारम्भ किया।

आनन्दस्वामीजीने पूछा—“पण्डितजी, कुशल है?”

दीनानाथजीने उस स्वरको पलभरमें ही पहचान लिया— “स्वा स्वा...मी...जी ! ”

“हाँ, हिमालयसे चलकर काशीमें गुरुजीके दर्शन किए और पुनः हिमालयमें जानेके पूर्व आपके दर्शन करने यहाँ चला आया हूँ।”

पहले तो पण्डितजीको आश्चर्य हुआ, पर अब क्रोधने उस स्थानको ले लिया। अन्होंने गरजकर पूछा—“मेरी पुत्रीके लिये तो नहीं आये ? ”

“पण्डितजी ! श्रीश्वर हम सबकी रक्षा करें। मैंने महान पाप किया और उसका फल भी भोगा।”

“महा पाप किया ! और उसका फल भोगा !! तुमने उसका फल ही कहाँ भोगा ? तुम संन्यासी हो ? छी: दुष्ट, क्या तुम आदमी भी हो ? मेरे सामनेसे हट जाओ, वरना तुम्हारा सिर फोड़ दूँगा।”

स्वामीजी मुस्कुराते रहे, और थोड़ी देर बाद बोले—“पण्डितजी, मैंने तुम्हारे प्रति जो घोर अपराध किया है, उसके लिये किसी भी प्रकारकी सजा तुम दे सकते हो। तुम अपना वाञ्छित दण्ड देकर मुझे पापसे मुक्त करो।”

“छी: दुष्ट, मेरे घरसे चले जाओ। तुम्हारे सिरके टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा।” महा रौद्र रूप धारणकर वगलमें पड़ी लाठीको लेकर दीनानाथजी स्वामीजीपर टूट पड़े।

स्वामीजीने सिर झुकाया।

पण्डित दीनानाथको ऐसा लगा मानो अन्के पैरोको किसीने पकड़ लिया हो। सिर झुकाकर देखा कि अन्के दौहित्र, पालित पुत्रने ‘ठुमक-ठुमक’ चालसे आकर और “दादा ” “दादा ” कहते हुअे हाथ फैला दिये हैं।

पतिके क्रोधपूर्ण वचनोंको सुनकर रसोअीसे अन्की पत्नी वहाँ आयीं और निरुपमादेवी अपनी तपस्या समाप्तकर पिताजीके पास अुपस्थित हुअी।

स्वामीजी आँख बन्दकर सिर झुकाअे वहीपर खड़े रहे। वे वहीं समाधिमें तन्मय हो गअे। अन्के मुख-मण्डलसे सहस्र ज्योतियाँ फूट रही थी। वहाँपर खड़े समस्त लोगोंको कोअी दिव्य संगीतकी श्रुति सुनाअी दी।

अपने गुरुदेव, अपने स्वामीको देख निरुपमाका शरीर पुलकित हो अठा और अपनेको भूलकर वह सीधे जाकर स्वामीजीके पैरोंपर गिर पड़ी। निरुपमाकी माताने अपना घूँघट सँवारा और सिर झुकाकर स्वामीजीको नमस्कार किया।

स्वामीजीके शरीरसे कोअी ज्योति निकलकर चतुर्दिक फैल गयी।

पण्डित दीनानाथके हाथोंसे लाठी छूटकर नीचे गिर पड़ी। अनुके पैर लड़खड़ाने लगे। “प्रभु, कृपा कीजिए।” कहते-कहते वे जमीनपर गिर पड़े और मूर्च्छित हो गये। आनन्दस्वामीजी अुस महान आनन्द-समाधिमें खड़े ही रह गये।

हिमाच्छादित शृंग, अुन्नत पर्वत-पंक्तियाँ, नन्दन वनकी समता करने-वाली घाटियाँ, सुगन्धिको फैलानेवाली चित्र-विचित्र पुष्प-लताओं, वृक्ष-समूह, निर्मल नीलाकाश, विभिन्न प्रकारके रंग, अुन सबने मिलकर वातावरणमें अेक प्रकारका वैचित्र्य पैदा कर दिया था।

आनन्दस्वामी अुस देव-पर्वतमें घुसते जा रहे हैं। हेमन्तका वह पवित्र दिन परम निर्मल होकर प्रज्वलित हो रहा है।

परमेश्वर-स्वरूपको प्राप्त यह महा पर्वत-पंक्ति जगतकी तपोभूमि है। समस्त धर्मावलम्बियोंको यहाँपर मुमुक्षु (मुक्ति पानेके अिच्छुक) होना पड़ेगा। हे पर्वतेश्वर ! तेरी किरण विश्वके हृदयको अपनी अनुपम कान्तिसे पूर्णकर पुलकित कर रही है। “शिवोऽहं” “शिवोऽहं” कहते आनन्दस्वामीजी अुन अगम्य पर्वत-पंक्तियोंमें घुसते जा रहे हैं।

“शिवोऽहं ! शिवोऽहं !! शिवोऽहं !!! ” की ध्वनि अुन पर्वत-मालाओंको प्रतिध्वनित करने लगी।

* * *

३.

नौका-यात्रा

—श्री पालगुम्मि पद्मराजु

प्रारम्भमें आप रसायन-शास्त्रके प्राध्यापक रहे। लेकिन बहुत ही जल्दी आप अेक सफल कहानीकारके रूपमें सामने आ गये। अस ल्यातिके



कारण आज आप सिने-क्षेत्रमें कार्य करने-वाले प्रज्ञाशाली हैं। आपकी 'गालिवान' (तूफान) नामक कहानीको विश्व कहानी प्रतियोगितामें द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ है। आपने बहुत कम कहानियाँ लिखीं, पर जो भी लिखीं, वे सब अुत्तम कोटिकी रचनाओं हैं। आपकी 'पडव प्रयाणम्' (नौका-यात्रा) चेकोस्लोवेकियामें प्रकाशित अेक कहानी-संग्रहमें दी गयी है। आपकी कहानियोंकी विशेषता विभिन्न व्यक्तियोंकी मानसिक चित्त-वृत्तियोंका वर्णन है।

वर्तमान समयमें विशेष रूपसे प्रचार प्राप्त 'व्यावहारिकता' नामक वादके आधारपर विशेष परिस्थितियोंमें मानवका व्यवहार कैसे परिवर्तित होता है, असका चित्रण आपकी कहानियोंमें देखा जा सकता है।

* * *

नौका - यात्रा

सूर्यास्त हो गया है। सारा जगत चिन्तित-सा ज्ञात होता है। नौका पानीपर धीरे-धीरे सरकती जा रही है। नौकाके दोनों ओर जल 'कल-कल' ध्वनि कर रहा है। जहाँ तक दृष्टि जाती है, सारी दुनिया सुनसान दिखायी दे रही है। कहीं किसी प्राणीकी कोआी हलचल नहीं दिखायी देती। परन्तु अक प्रकारकी ध्वनि जैसे देहसे स्पर्श कर रही है—कानोंको असका अनुभव नहीं हो रहा है, मनके भीतर वह पूर्ण रूपसे कम्पित होता दिखायी दे रहा है। असा लगता है कि जीवनके अन्तिम समयकी अुदासीनता, पूर्ण रूपसे अक शान्त निराशा मनमें समा गयी है। दूरपर अस्पष्ट रूपसे दिखायी देनेवाले वृक्ष माया-जालकी भाँति जैसे निश्चल नौकाके आगे-आगे बढ़ रहे हैं और पासके पेड़ जैसे बिखरे बाल भूतोंकी भाँति पीछे-पीछे चल रहे हैं। नौका नहीं, जैसे नहरके तट हिल रहे हैं। मेरी दृष्टि मानो पानीकी गहराआीका पता लगा रही है, जिसपर प्रतिबिंबित अन्धकारको चीरते हुए रातके नक्षत्र जैसे लहरोंपर धीरे-धीरे झूला झूलते-झूलते आँखें खोले ही सो गये हैं।

अब हवाका संचार नहीं। नौकाके पिछले भागमें चूल्हेमें आग जल रही है। कभी-कभी वह प्रज्वलित हो अुठती है, तो कभी-कभी बुझ-सी जाती है। अक जवान नावमें आये हुए पानीको बाहर फेंक रहा है। नौकामें कआी प्रकारके बोरे हैं। धान, गुड़, नमक, अिमली आदि। मैं नावकी

छतपर चित लेटा हुआ हूँ। नावके भीतरसे चुरटका धुआँ और वार्तालापकी ध्वनि धीरे-धीरे चतुर्दिक फैल रही है। गुमाश्तेके कमरेमें अंक छोटा-सा दीपक टिमटिमा रहा है। नाव चली जा रही है।

किसीने पुकारा—“अँ नाववाले ! नावको अस किनारेपर लाओ; अस किनारेपर।”

नावके किनारे लगते ही दो व्यक्ति अुसपर चढ़े। नौका अुस तरफ जरा-सी झुक गयी।

“छतपर बैठेगे”—अंक युवतीका स्वर था।

“अितने दिनतक कहाँ रही ? दिखाओ नही पड़ी ?”—पतवार सँभालनेवाले व्यक्तिने पूछा।

“मैं अपने आदमीके साथ विजयनगर, विशाखपट्टणम् घूमने गयी थी। अप्पन्न कोंडा भी गया था।”

“अब कहाँका अिरादा है ?”

“मण्डपाक जा रहे हैं। भाओ, तुम तो अच्छे हो न ? गुमाश्ता वही पुराना है क्या ?”

“हाँ।”

मर्द छतपर अस्त-व्यस्त लेट गया। अुसके मुँहसे चुरट नीचे गिर गया, तो अुस स्त्रीने अुसे अुठाकर बुझा दिया।

“अँ ! अुठके बैठ जाओ न ?”

“चुप रह, शैतान कहींकी। क्या तुम समझती हो, मैंने पी रखी है। शैतानी करोगी तो तुम्हारी मरम्मत कर दूँगा।”

वह करवट बदलकर पड़ा रहा। अुस युवतीने अुस अघेड़के शरीरपर अंक कपड़ा अुढ़ा दिया और अंक चुरट निकालकर जलाया। सलाओकी सीकके प्रकाशमें मैंने अुसका चेहरा देखा। अुसका वर्ण श्याम और मुख लाल दिखाओ दिया।

अुसके स्वरमें मर्दका स्वर मिला हुआ था। अुसके बोलते समय अँसा मालूम होता था कि वह परिचिता है और हमें मना रही है। यद्यपि मुख-

मंडल विशेष मुन्दर नहीं है। जूड़ा बिखरा हुआ है, तो भी अुसके चेहरेपर अेक मलमनसाहत झलकती है। अुस अन्धकारमें भी अुसके नेत्र जागृता-वस्थाकी सूचना देते हुअे चमक रहे हैं। सींककी रोशनीमें बगलमें लेटे हुअे मुझको अुसने देख लिया है।

“यहाँपर कोअी लेटे है।”—कही वह अपने पतिको जगाने लगी।

“सो जाओ, चिल्लाओगी, तो तुम्हारी पीठ तोड़ दूँगा।”—कर्कश स्वरमें अुसने अुत्तर दिया और बहुत कोशिश करनेपर जरा सरका।

अितनेमे गुमाश्ता दिया अूपर अुठाकर नावके पार्श्वमें खड़ा हो गया। बड़े जोरसे चिल्लाकर अुसने पूछा—“अै रंगी! यह कौन है?”

“बाबूजी, पडाल है, मेरा आदमी।”—रंगीने अुत्तर दिया।

“पडाल! अुतारो...वह चोरका बेटा है। तुम्हे कुछ भी अकल नही? फिर अुस दुष्टको नावपर चढ़ा लिया। अेक नम्बरका पियक्कड़ है।”

“मैने जरा भी नही पी है। कौन कहता है, मैने पी है।”—पडालने कहा।

“अरे! अिसको अुतारो! अिसे चढ़ने ही क्यों दिया? बहुत पीता है यह।”

“बहुत नहीं, जी, थोड़ी-सी पीता हूँ।”

“अरे, चुप रह! बाबूजी, हम मण्डपाकके पास अुतर जाअेंगे।”—रंगीने कहा।

“गुमाश्ताजी, नमस्ते। आपकी दया है। मैने आज नही पी है, बाबूजी!”—जोरसे पडाल बोला।

“शोर मचाया, तो मै नहरमें फेंकवा दूँगा। सावधान!”—गुमाश्ता कहकर कमरेमें चला गया।

पडाल अुठ बैठा। वास्तवमें वह पिया हुआ मालूम नही होता था।

“नहरमे फेंकवाअेगा। सुअरका बच्चा।”—धीमे स्वरमें पडालने कहा।

“रे, चुप भी रह। सुन लेगा।”

“कल सबरे तक नावकी हालत देखने दो सालेको। मेरे सामने बेटा, रीब गाँठने चले है।”

“अँह ! अुस तरफ कोअी लेटा हुआ है।”

“कौन ? . . . सो रहा है वह।”—और पडालने चुस्ट जलाया।

पडालकी मूँछें अटपटी हैं। चेहरा लम्बा और छाती चौड़ी है जो सदा फूली रहती है। रीढ़की हड्डी तो धनुषकी भाँति झुककर फिर खड़ी हो जाती है। संक्षेपमे अुसका परिचय दें, तो वह दुबला-पतला और बेहद लापरवाह मालूम होता है।

नाव सन्नाटेको चीरती हुआ आगे जा रही है। अब नावके पिछले भागमें आग नहीं सुलग रही है। मल्लाह थालियोंको साफ करते हुआ आपसमे बातें कर रहे हैं।

हवा ठंडी नहीं है। तो भी मैंने गमछा ओढ़ लिया है। अुस अनंत अन्धकारको अुस असहाय स्थितिमें अपने शरीरको समर्पित करनेमें मुझे डर लग रहा है। हवा तेज है। कोमल नारी-स्पर्शकी भाँति नाव जलको कितनी मृदुलतासे स्पर्श करती जा रही है। अवर्णनीय मृदुलता, जैसे विराट नारीत्व अुस रात्रिमे पूर्ण रूपसे समाविष्ट है। अुस आलिंगनमे मुझे चिर कालकी गाथाओं याद आती हैं। अनादि कालसे पुरुषका लालन-पालन करनेवाले नारीत्वकी कथाओं।

थोड़ी-सी दूरीपर दो चुस्ट लाल-लाल जल रहे हैं; अुन्हें देखनेपर अैसा प्रतीत होता है कि मानो जीवन भार रूपमें वहाँ बैठा चिन्तामें निमग्न चुस्ट पी रहा है।

“आगे कौन-सा गाँव आ रहा है ?”—पडालने पूछा।

“कालदारी।”—रंगीने जवाब दिया।

“ओह, अभी बहुत दूर है।”

“आज सावधान रहो। नही-नही, सुविधा देखकर बात करो। क्यों मेरी बात नही सुनोगे ?”—रंगीने अनुनय-विनय अवं याचनाके स्वरमें कहा।

“रह-रहकर मिनकती है, छिनाल !”—पडालने कहा और अुसकी बगलमें चिकोटी काट ली।

“अुगी ! जान गअी ! !”—रंगी धीमेसे चीखी । फिर आकाशकी ओर मुँह अुठाकर वह अंकटक अन्धकारकी ओर देखने लगी । अुस स्पर्शको शाश्वत रूपमें बनाअे रखनेके ललअे संभतवः अुसने मुँह अुठाया था ।

मुझे धीरे-धीरे नीद आ रही है । सारी नाव सो रही है और पानीपर खिसकती जा रही है । मुझे थोड़ी दूरपर वे दोनों ‘फुस-फुस’ कर रहे हैं । मुझे नीद तो आअी है, लेकिन पूरी तरहसे नहीं । मुझे जात है कि नाव चल रही है, पानी खिसकता जा रहा है और पेड़ पीछे चले जा रहे हैं । नावको कोअी खे नहीं रहा है । नावमें सभी झपकलयाँ ले रहे हैं । रगी मेरी बगलसे होकर पतवारके पास जाती है और वही बैठ जाती है ।

“भाअी, कैसे हो ?”—रंगीने पूछा ।

“तुम कैसी हो ?”—माँझीने पूछा ।

“मेरे आदमीने कितने ही मुन्दर स्थान दलखाअे हैं । हम सलनेमा गअे हैं । जहाज देखें हैं । जहाज मानो साधारण नाव नहीं । वह हमारे गाँव जैसा बड़ा होता है । पतवार अुसका कहाँ होता है ? ओह, क्या बताअूँ ?”—अलस तरह रंगी बहुत देर तक अुसे वलचलत्र-वलचलत्र बातें बताती रही और वे बातें लोरलयाँकी तरह मुझे सुलाती रही ।

“अै लड़की, मुझे नीद आ रही है !”—माँझीने कहा ।

“लाओ, पतवार तब तक मै सँभालती हूँ । तुम वहाँसे जाओ भाअी !”—रंगीने कहा ।

नाव फिर धीरे-धीरे सरकती जा रही है । चुपचाप अुस नलस्तब्धता-को बनाअे रखते हुअे रगीने अपने ठंडे स्वरमें गाना शुरू कलया —

कहाँ है, वह मेरा, कहाँ है ?

खाना थालीमे रखकर

बैठे देखते रहनेसे

संधयाकी छायाकी भाँतल

आँखें नहीं झपतीं ।

आह, बलच्छूकी भाँतल

डक मारनेवाली यह सर्द हवा

रंगीके कंठमे मर्द जैसा संगीत है। अुस गीतसे वहाँ लेटे हुअे सभी प्राणी अूँघने लगे। पिछले युगकी प्रेम-गाथाअे जैसे विचित्र रूपसे व्यथाअें भरकर अुस गीतमे कपित हो रही थी। जैसे वह गीत पानीकी बाढ़ हो और अुसमे अुफान आ जाअे तो सारा संसार अुसमें अेक छोटी-सी नौकाकी भाँति तैरने लगे। मानव जीवन जैसे अिस प्रणय और विपादके नशेमें चूर-सा हो रहा है।

मुझसे थोड़ी ही दूरपर पडाल सिरपर चूड़ियाँ बाँधे बैठा है। लेकिन मुझे अैसा प्रतीत होता है कि अुसके और रंगीके बीचमे जैसे अेक युगका अन्तर है। वह छतपरसे अुतरकर नावके भीतर चला जाता है। मैं अकेले चित होकर लेटा रहता हूँ। रंगी अुसी तरह गाअे जा रही है—

मंदिरके पीछे गलीमे
अेक औरत है।
बिना आवाज किअे
तुम अुसके पास चले गअे।
वह युवती कौन थी,
मेरे प्रियतम !
जवानीसे भरी मैं ही तो थी।

मुझे नींद आने लगी है। रंगीका गीत जैसे कअी लोकोंकी यात्रा करके लौटता है और पुनः धीरे-धीरे मेरे हृदयको स्पर्श करने लगता है। और मुझे नींद आ जाती है। निद्रामें प्राकृतिक प्रणय मेरे सामने अुछलने लगता है। ग्रामीण कृषक युवतियाँ अपने प्रियतमोसे आँख-मिचौनी खेलती हुअी गानेमें निमग्न है। सर्वथा अनजान अेक स्वप्निल जगत मेरे सामने खुल जाता है। अुसमे रंगी और पडाल कअी रूपोंमें घूम रहे है। धीरे-धीरे गानेका स्वर मेरे स्मृति-पटलसे तिरोहित होता जाता है और निद्रा मेरे मनके द्वारोको धीरे-धीरे बन्द कर देती है।

(२)

नावमें थोड़ी-सी हलचल होती है। मैं आँख मलते हुअे अुठ बैठता हूँ। नाव किनारेपर आ लगी है। दो लालटेनें लिअे मल्लाह घबराहटके साथ नावपर चढ़-अुतर रहे हैं। किनारेपर रंगीको दो व्यक्ति कसकर पकड़े हुअे हैं। अुनमे अेक गुमाश्ता है जिसके हाथमें कोड़ेकी तरह बटी हुअी मोटी रस्सी है। रंगीपर शायद खूब मार पड़ी है। मैं तुरन्त नावसे अुतरकर किनारे पहुँचता हूँ और दरियाप्त करता हूँ कि हुआ क्या ?

—“वह चोर भाग निकला है। बहुत-सा माल अुड़ा ले गया है। इसी शैतानने नावको यहाँ किनारे लगा दिया था। यही दुष्टा पतवार सँभाले हुअी थी”—गुमाश्ताने क्रोध और निराशापूर्ण शब्दोंमे कहा।

—“क्या अुठा ले गया है ?”—मैंने पूछा।

—“दो गुड़के और तीन अिमलीके बोरे। मैं जानता था। इसीलिअे कहा था अुस लुटेरेको नावपर मत चढ़ाओ। मालिक सारा नुकसान मेरे सिरपर मढ़ेगा। न जाने कहाँ अुठा ले गया।”

—“बाबूजी, कालदारीके पास।”

—“चुप, शैतानकी बच्ची ! कालदारीके पास हम जगे हुअे थे।”

—“तो निदडवोलुके पास अुतारा होगा।”

—“यह अभी अस तरह नहीं बताअेगी। कल अत्तिलिमें अिसे पुलिसके हवाले कर देगे। चढ़ो नावपर चढ़ो।”

—“बाबूजी ! बाबूजी !! मुझे यहीपर छोड़ दीजअे।”

—“नखरे मत दिखाओ। चलो। चढ़ो।”—और गुमाश्ताने अुसे नावकी ओर ढकेल दिया।

दो मल्लाहोंने अुसे जोर लगाकर नावपर चढ़ाया।

—“सभी सोअक्कड जमा हो गअे हैं। माल-असबाबकी रक्षाकी किसीको चिन्ता नहीं। अुसके हाथमें पतवार सौपनेको किसने कहा था ? तुम लोगोकी अकल मारी गअी है।”—गुमाश्ता सबपर अपना क्रोध अुतारकर अपने कमरेमे चला गया।

रंगीको छतपर चढ़ाया गया। अंक माँझीको अुसके पहरेपर तैनात कर दिया गया ताकि वह भाग न सके। मैं भी छतपर चढ़ गया।

नाव फिर रवाना हो गयी। मैंने चुस्ट जलाया।

—“बाबूजी, अंक चुस्ट दिलाओगे?”—रंगीने घनिष्ठता जोड़ते हुअे कहा।

अुसने चुस्ट जलाया और मल्लाहसे पूछा—“हे भाभी! मुझको पुलिसके हवाले करनेसे क्या फायदा?”

माँझीने जवाब दिया—“गुमास्ता नहीं छोड़ेगा।”

मैंने पूछा—“पडाल तुम्हारा पति है क्या?”

—“हाँ, वह मेरा आदमी है। —रंगीने जवाब दिया।”

—“अिसे वह भगा ले गया था, जी! अिससे अुसकी शादी नहीं हुअी। अुसके पास अंक औरत और है। अब वह कहाँ है री?”—मल्लाहने पूछा।

—“कोव्वूरुमें है। अब भी अुसकी देहमें और जवानी कायम है।..... मेरी जैसी मार खाअी होती, तो वह भी मेरी ही अैसी हो गअी होती।”

—“तो तुम अुसके साथ क्यों रहती हो?”—मैंने पूछा।

—“वह मेरा आदमी है जी!”—रंगीने कहा, मानो सारा गुर अुसी शब्दमे हो।

—“तो वह अुस औरतके पास जाता है?”

—“मेरे बिना वह नहीं रह सकता। वह राजा आदमी है मालिक! वैसा आदमी कही नहीं मिलेगा।.....”

बीचमे मल्लाह बोल अुठा—“बाबूजी, अुसकी करतूत आपको नहीं मालूम। अंक वार अुसने अिस रगीको झोपड़ीमे बन्द करके आग लगा दी थी। यह बेचारी जलकर भी वच गअी। अिसका भाग्य बहुत बलवान है।”

—“बाबूजी, अुस समय वह मिल जाता, तो मैं अुसका गला ही घोंट देती। जलकर मैं अंक खंभेपर वेहोश पड़ी थी बाबू!”—और वह मुड़कर चोली अुठाती खड़ी हो गअी। मुझे अंक बड़ा सफेद दाग अुस अन्धकारमें भी अुसके शरीरपर साफ दिखाअी दिया।

—“अितनी यातनाओं पानेपर भी अुसके पीछे पागलकी तरह तुम क्यों पडी रहती हो ?”—मैने पूछा ।

—“करूँ क्या ? जब वह सामने आ जाता है, तो सब भूल-भालकर मेरा दिल पिघल जाता है । वह कितना दयनीय होकर अुस वक्त बोलता है । आज संध्याको जब कोव्वूरसे हम चले तो रास्तेभर वह गिड़गिड़ाता रहा—रंगी, चलो, अिस नावपर चढे और कुछ माल अुतार लें । मेरे बिना यह काम संभव नहीं था । पगडंडियोसे होकर हम मडुगु पहुँचे ।”

—“माल कहाँ अुतारा ?”

—“मुझे अिसका पता नहीं है जी !”

हँसते हुअे मल्लाहने कहा—“चोरकी नानी ! हमारी आँखोमे भी धूल झोकना चाहती है !”

रगीका चेहरा देखनेकी मेरे मनमे वड़ी अुत्सुकता थी । लेकिन अुस निविड़ अन्धकारमे वह जादूगरनीकी भाँति अदृश्य-सी ज्ञात होती थी ।

नाव धीरे-धीरे आगे बढ़ती जा रही है । अर्धरात्रिके बीत जानेपर हवा ठंडी होती जा रही है । पेड़के पत्ते हिल रहे हैं । मल्लाह नावको खेते जा रहे हैं । मुझे अब नीद नहीं आ रही है । पहरा देनेवाला व्यक्ति थोड़ी देरमे ही झपकी लेता-लेता सो गया है । रंगीने शायद अब भाग निकलनेका प्रयत्न बिलकुल छोड दिया है । वह मजेसे बैठी-बैठी चुरट पी रही है ।

—“तुम्हारी शादी नहीं हुअी ?—मैने पूछा ।”

—“नहीं, वचपनमें ही पडाल मुझे भगा ले आया था ।”

—“तुम्हारा घर कहाँ है ?”

—“जीडुपालेम । . . अुस समय मुझे यह नहीं मालूम था कि यह पियक्कड़ है । . . . अब तो मै भी पीती हूँ । वैसे पीना कोअी गुनाह तो नहीं है, लेकिन पीनेके बाद नशेमे आनेपर वह मेरी चमड़ी अुधेड़ देता है, अिसीका मुझे दुख है ।”

—“तो अुसे छोड़कर चली क्यों नहीं जाती ?”

—“मार पड़नेपर तो मैं भी यही सोचने लगती हूँ। लेकिन वैसा आदमी दूसरा नहीं। आप नहीं जानते, जब वह पिअे नहीं रहता है, अकदम मक्खनकी तरह कोमल रहता है। मेरे बिना उसका दिल टूट जायेगा और वह मर जायेगा।”

असुकी बाते मुझे बड़ी विचित्र मालूम हुअी। मेरी समझमे नहीं आया कि अुन दोनोंके बीच यह कैसा बन्धन या सम्बन्ध है ?

रंगीने फिर कहना शुरू किया—हम दोनोंने बहुत कोशिश की कि कोअी-न-कोअी काम ठीकसे जमा ले। लेकिन हम असफल ही रहे। आखिर अस तरह चोरी करनेपर मजबूर हुअे। मेरी अम्मा, अभी परसों ही मरी है। वह मुझे बहुत गालियाँ देती थी। अक दिन पडाल मेरी झोपडीमे अक और औरतको भी ले आया था। वह अुसे भी मेरे साथ ही अपनी झोपडीमे रखना चाहता था। मैंने अुस औरतकी अैसी मरम्मत की कि पडालने बिगड़कर मुझे भी अैसा मारा कि मेरी भी हालत खराब हो गअी। फिर वह अुसके साथ चला गया। फिर आया तो मैंने अुसे खरी-खोटी सुनाअी और घरमे घुसने नहीं दिया। तब देहलीके पास बैठकर वह बच्चेकी तरह रोने लगा। यह देखकर मेरा दिल पिघल गया। मैं अुसके पास गअी, तो मुझे गोदमें लेकर अुसने मेरी माला (हार) माँगी। मेरे पूछनेपर अुसने बताया कि वह औरत अिसे चाहती है। मारे गुस्सेके मैं अपनी सुध-बुध खो बैठी। होश आनेपर मैं जी भरकर अुसे कोसती रही। असपर वह रोने लगा। रोते-रोते वह कहने लगा, अुसके बिना मैं जी नहीं सकूँगा। मेरे गुस्सेका पारा फिर तो और चढ़ गया। देहलीपरसे अुसे ढकेलकर मैंने दरवाजा बन्द कर दिया। दरवाजा खटखटाते-खटखटाते जब वह थक गया तो चला गया। अुस दिन मुझे बहुत देरतक नीद नहीं आअी। मैं झपकियाँ ले रही थी कि अितनेमे झोपडीमें आग लग गअी। बाहरसे साँकल लगाकर अुसने झोपडीमें आग लगाअी थी। कोअी भी मददके लिअे नहीं आया। आधी रातका समय था। मेरा सारा शरीर झुलस गया। दरवाजा ढकेलते-ढकेलते मेरा होश जाता रहा। अितनेमे बाहरसे किसीने दरवाजा खोला। दूसरे दिन पुलिस अुसे पकड़ ले

गयी। मुझसे पूछा, किसपर सन्देह है ? मैंने साफ कह दिया कि पडालपर मेरा कोअी सन्देह नहीं है। वह छूटकर संध्या समय मेरे पास आया और फूट-फूटकर रोने लगा। वह जब भी पीता है, जरूर रोता है। बाकी समय उसे रोना नहीं आता। हमेशा हँसता ही रहता है। अंक बूँद गराव गलेमे अतारी नहीं कि वस वच्चेसे भी ज्यादा रोने लगता है। ” मैंने अपनी माला उसे देते हुअे पूछा कि तुम उसके साथ चोरी करनेमें भाग ही क्यों लेती हो ?

—“ क्या कहूँ ? बताअिअे ? ”—वह गड़गड़ाने लगता है।

—“तुमने कहा था कि वह तुम्हें विजयनगर आदि शहरोंमे ले गया था।”

—“ वह सब सरासर झूठ है। मेरे अपूर मल्लाहोंका पूरा विश्वास है। अिसके पहले भी अिस नावपर दो बार और चोरी हो चुकी है। ”

—“ तुम्हें पुलिस पकड़ेंगी तो क्या करोगी ? ”

—“ कुछ भी नहीं कहूँगी, मुझे पकड़कर वह करेगी क्या ? अंक दिन पीटेगी, दूसरे दिन छोड देगी। मेरे पास चोरीका माल तो है ही नहीं। क्या मालूम कौन ले गया है ? ”

—“ पडालको भी तो आखिर पकड़ेंगी। वह चोरीके माल सहित पकड़ा जाअेगा तब ? ”

—“ वह नहीं मिलेगा। अिस समय तक माल बिक भी गया होगा। उसे वचानेके लिअे ही मैं नावपर रहती हूँ। ”—अुसने गहरी साँस ली। फिर धीमे स्वरमे कहने लगी—“ यह सब माल अुसी औरतको प्राप्त होगा। अुसपर जवतक अुसका मन लगा रहेगा, तब तक अुसे छोड़ेंगा नहीं। मुझे ये सब तकलीफे अुसीके कारण सहन करनी पड़ रही है। वह चुड़ैल मेरा खून पी रही है। ”

रंगीकी अिन बातोंमें मुझे अुत्तेजनाकी गंध नहीं लगी। बल्कि मुझे यह लगा कि अुसने पडालको यथार्थ रूपमें स्वीकार किया है। पडालके लिअे वह सब कुछ करनेको तैयार है। वह कोअी आदर्श नारी नहीं, आदर्श पतिव्रता भी नहीं, प्रेमिका भी नहीं। वह है कअी विचित्र, संकुचित भावनाओं, अीर्ष्या, अनुरागों और भी अनेक तत्वोंसे परिपूर्ण नारीका अंक हृदय। तो भी

वह हृदय सबका परिणाम बनकर अकेल पर लगा हुआ है। अपने पुरुषके लिये वह निरन्तर तप रही है। उसका कोई निश्चित अभिप्राय नहीं है कि उसका पुरुष सज्जन बनकर नीति-मार्ग पर चले। उसने पडालको उसके सभी गुणों-अवगुणोंके साथ स्वीकार किया है।

तेज हवा बहनेके कारण नाव तेजीसे आगे बढ़ी जा रही है। प्रातः-काल हुआ ही चाहता है। थकावटको दूरकर दुनिया जागने जा रही है। कहीं-कहीं खेतों पर पहरा देनेवाले किसान मेंड़ों पर चलते दिखायी दे रहे हैं। भोरके तारोंका अभी अदृश्य नहीं हुआ है। रंगी अव्यक्त भावनाओंमें विभोर होकर घुटने मोड़े पड़ी है और अकटक अनन्तकी ओर निहार रही है।

“वह मेरा है! जहाँ कहीं भी क्यों न घूमे-फिरे, मेरे पास आनेसे वह नहीं रह सकता।”—मन-ही-मन वह अपनेको समझा रही है। उसमें एक आशा, विश्वास तथा धीरज झलक रहा है। यह वाक्य उसके समूचे जीवनका निचोड़ प्रतीत होता है।

मैं भक्ति, भय तथा दयासे इस शब्दको सुनकर चुप रह जाता हूँ। सबेरे तक हम दोनों उसी तरह बैठे रहते हैं।

नावपरसे उतरनेके पहले अपनी जेबसे एक रुपया निकालकर मैं उसके हाथ पर रख देता हूँ और जल्दी-जल्दी अपने कदम उठा देता हूँ। उसके अन्तरकी प्रतीक्षामें खड़ा नहीं रहता।

उसके बाद उसकी हालत क्या हुई, मुझे नहीं मालूम।

* * *

४.

ममता

—श्री टी. गोपीचन्द

‘विप्लव’ कवि नामसे विख्यात श्री गोपीचन्द स्वर्गीय श्री त्रिपुरनेनि रामस्वामीजी चौधरीके ज्येष्ठ पुत्र हैं। कल्पना और आदर्शोंमें ये अपने



पितासे भी कहीं आगे बढ़ गये हैं। वकालत-की परीक्षा उत्तीर्ण करनेपर आपने वकालत नहीं की। अंग्रेजी और तेलुगु साहित्योंका गहरा अध्ययन करके उसमें लिखना भी प्रारम्भ किया। आपका कथन है कि भावोंमें विप्लवके बिना देशकी मुक्ति नहीं है। आप ‘कला कलाके लिये नहीं, बल्कि समाजके लिये’ को मानते हैं। आन्ध्रके जनपदोंके जीवनका वास्तविक चित्रण आपकी रचनाओंकी विशेषता है। ये

आन्ध्रमें लेखक, कहानीकार एवं उपन्यासकारके रूपमें ही नहीं, बल्कि सिने-लेखक एवं निर्देशकके रूपमें भी विख्यात हैं। अबतक आपके सात कहानी-संग्रह, तीन उपन्यास और दो आलोचनात्मक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

“असमर्थुनि जीवयात्रा” और “परिवर्तन” आपके प्रसिद्ध उपन्यास हैं।

* * *

ममता

बूढ़ा जोगय्या लाठी टेकते हुअे नहरके किनारे जामुनके पेड़के नीचे आ खड़ा हुआ। सूर्यकी किरणोंसे बचनेके लिये माथेपर हाथ रखकर उसने खेतकी ओर दृष्टि दौड़ायी। खेतकी मेंड़ोंपरके सभी बबूलके पेड़ोंसे वह चिर-परिचित है। वे पेड़ भी जोगय्याके हमअुम्र हैं और बढ़ते जा रहे हैं। हाल ही में उनमेंसे दो वृक्षोंको हल बनानेके निमित्त कटवा डाला गया था। उन पेड़ोंके कटवा डालनेके कारण जो जगह खाली हो गयी है, वह जोगय्याको किसी अभावकी याद दिलाती है। उस स्थानको देखनेपर वह अपने दो जवान बेटोंके खो जानेका अनुभव करता है।

वृद्ध जोगय्या गहरी साँस लेकर सिरपर बँधे कपड़ेको बिछाकर जामुनके पेड़के नीचे बैठ गया। उसके तीन पुत्र हैं। बड़ा पुत्र नरसम्पा खेतका काम देखता है। द्वितीय पुत्र कपड़ेकी दूकानसे कुछ कमाता है। तीसरा लड़का वेकटसुब्बय्यया अँग्रेजी पढ़ रहा है। इनके अलावा दो पुत्रियाँ भी हैं। उसके सभी वच्चे उससे प्रेम करते हैं। जोगय्या अपने पुत्र-पुत्रियोंको देखे बिना भी रह सकता है। किन्तु अपने खेतको देखे बिना उसे चैन नहीं मिलता। जोगय्याकी आन्तरिक अिच्छा है कि उसकी सारी सन्तानें खेतका ही काम देखें। क्योंकि उसकी दृष्टिमें वे सभी कृषि-कार्यके लिये ही पैदा हुअे हैं। इसलिये वह अपने द्वितीय पुत्रकी कपड़ेकी दूकानके विषयमें

शायद जलनका अनुभव करता है। कभी-कभी वह कहा करता है, लड़का तो बुद्धिमान है, पर पत्नीकी बातोंमें आकर वह अपने निजी कामको भूल गया है। जोगय्याके यहाँ इस समय सौ अकड़ जमीन है। उसमेंसे अधिकांश भाग उसीने कमाया है। इसलिये उसपर जोगय्याके मनमें गर्वका अनुभव होना स्वाभाविक ही है। खेतको वह अपने प्राणोके समान मानता था। अक बार जोगय्याके विपक्षियोंने उसके खेतमें आनेवाले पानीको रोक दिया, तो जानकी भी परवाह किअे बिना उसने अपने हाथों बाँधको तोड़ दिया था। और इस तरह उसके खेतमें पानी आने लगा। फिरसे कोअी पानीका आना रोक न दे, इसलिये वह लाठी लेकर मेंडपर खड़ा हो गया। उसके अग्र रूपको देखकर सारा गाँव काँप गया था। दरारोसे भरा हुआ उसका खेत जब गटागट पानी पीने लगा तो वह अैसा खड़ा हो गया था मानो माता अपने शिशुको स्तन्य-पान कराते हुअे परवशतामें बैठी हो। जोगय्याके लड़के जब बड़े हुअे तो अुन लोगोंने उससे कहा था—“अब तुम बूढ़े हो गअे हो। अब अीश्वरका भजन करो और आराम करो। हमारे रहते तकलीफ क्यो अुठाते हो ? ” अैसी सलाह देनेवाले बेचारे क्यो जानें कि खेतीके कार्य करते रहनेमें जोगय्याको कैसा असीम मुख प्राप्त होता है।

अेक मास पूर्व जोगय्याकी पत्नी बीमार पडी। उसके दस दिन पहलेसे ही वह कराह रही थी, पर इसपर जोगय्याने कोअी ध्यान नहीं दिया। यदि कोअी इस ओर उसका ध्यान आकृष्ट करता तो वह यह कहकर टाल देता कि रोग मनुष्योंको ही होता है, वृक्षोंको नहीं। उसने स्वप्नमें भी यह नहीं सोचा था कि इस प्रकार अचानक हमला करके बीमारी उसकी पत्नीको अुठा ले जाअेगी। इसलिये जब उसके बड़े पुत्रने कहा—“तुम घरपर ही माताकी देखभाल करते रहो, मैं सिचाअीका काम देख लूँगा।” तो जोगय्या घरपर नहीं रह सका। उस समय खेतके लिये आवश्यक पानीका मिलना भी कठिन था। उसपर यदि कोअी आकर नहरकी धाराको अपने खेतमें बहा ले तो उसका बडा पुत्र देखता रह जाअेगा। वह बुद्धिमान है, परन्तु दूसरोंके सामने दबता है। खेतको पानी नहीं मिला तो वह सूख ही जाअेगा। फिर लाख कोशिश भी करें, फायदा ही क्यो है ? यह सोचकर जोगय्य

गाँवके वैद्यसे अपनी पत्नीको दवा दिलाकर खेतपर चला गया। जोगय्या गाँवसे बाहर भी पहुँच नहीं पाया था कि अधुरसे अुसके पुत्र द्वारा भेजा गया नौकर दौड़ता आया और बोला —“ शत्रु भाले-लाठी लेकर लड़नेको तैयार है, आपका पुत्र नरसय्या देखकर खड़ा रह गया है।”

जोगय्या द्रुत गतिसे खेतकी ओर बढ़ा। अुसने नहरके बाँधको तोड़कर पानीको अपने खेतमें बहा लिया। विपक्षी दल देखता रह गया। अपने खेतमें बहती धाराकी ध्वनिको सुनते ही जोगय्या प्रसन्नताके मारे सब कुछ भूल-सा गया। बीच-बीचमें अुसके पुत्र नरसय्याने अपनी माँकी बीमारीका अुसे स्मरण दिलाया। पर पूरे खेतकी सिचाई समाप्त होने तक घर जानेसे अुसने अिन्कार कर दिया। लाचार होकर नरसय्याको घर लौट जाना पड़ा।

प्रातः होते ही अुसे खबर दी गयी कि वह घर जाये। अुसे मालूम था कि अुसकी पत्नीका सम्बन्ध अुससे सदाके लिये समाप्त हो गया है। लेकिन खेतका वह थोड़ा-सा भाग अभी सिचाईसे बाकी रह गया था। अुसे छोड़कर वह बीचमें घर नहीं जा सका। खेतकी सिचाईका कार्य पूरा करके जोगय्या बड़ी आतुरताके साथ घर पहुँचा। अुसने देखा कि अुसकी पत्नी अन्तिम घड़ियाँ गिन रही है। अुस हालतमें भी वह घर-गृहस्थीकी बातें कह रही थी। वह बड़बड़ा रही थी—“ तीसरे पुत्रकी शादी देखना चाहती थी, परन्तु तुमने मेरी बात नहीं सुनी। दूसरी बहू तो मेरी बात सुनती ही नहीं, अिस-पर अुसने अपना क्रोध प्रकट किया। बड़ी बहूको मक्खन निकालना नहीं आता था। मैं ही मथकर मक्खन निकालूँगी।” यह कहते-कहते वह अुठनेका प्रयत्न करने लगी। अिस बातका अन्तिम घड़ीमें भी अुसे बड़ा दुःख था कि अुसके मरनेके बाद अिस गृहस्थीकी क्या दशा होगी।

जोगय्याने सान्त्वना देते हुअे कहा—“ अिन सब बातोंसे फायदा ही क्या है। तुम निश्चिन्त रहो।” किन्तु अुसकी पत्नी अन्ततक कुछ-न-कुछ फुसफुसाती ही रही। अन्तमें अधिक पीड़ाका अनुभव करते हुअे अुसने जोगय्याके हाथको अपने हाथमें लिया और अुसके प्राण-पखेरू सदाके लिये अुड़ गये।

×

×

×

×

जोगय्याकी पत्नीका देहान्त हुअे पूरा अेक महीना हो गया है। पत्नीकी बीमारी तथा अुसके प्राणोका ख्याल न करके जोगय्या जिस खेतकी रक्षामें लगा हुआ था, अुस खेतमे कुली आज घास छाँट रहे हैं। अुनमे औरतें हैं, पुरुष हैं—सब आनन्दसे गा रहे हैं। जोगय्या जामुनके पेड़से सटकर बैठा है। पहले जैसे अुसका मन अव स्थिर नहीं है। अपनी पत्नीके मरते समय अुसने जो पारिवारिक ममता दिखायी, अुसे भूलनेका प्रयत्न करनेपर भी वह भूल नहीं पा रहा है। वह जानती थी कि कुछ मिनटोंमे अुसके प्राण निकलनेवाले हैं। अुस समय वह निद्रासे जगी जैसी बाते करती रही। अिस संसारका नाता सदाके लिये छोड़नेवालीको अिन सबसे क्या मतलब ? अिसी प्रकार सब लोगोंको अेक-न-अेक दिन अिस संसारके नातेको तोड़ना पड़ेगा। तो फिर अिससे अितनी ममता ही क्यों रखी जाअे ?

खेतसे गाना सुनायी देने लगा। जोगय्याने आँखें खोलकर अेक वार खेतके चारो ओर दृष्टि दौड़ायी। अुस दिन अुसका पोता भी अुसके साथ खेतमे आया था। वह पूछने लगा—“दादा ! हमारा खेत कहाँ है ?” सौ अेकड़ जमीनके विशाल खेतको दिखाकर जोगय्याने कहा—“तुम्हे जो कुछ भी दिखायी दे रहा है, वह सब हमारा ही है।” यह कहते हुअे अुसे मनमे गर्वका अनुभव होने लगा। जब वह अिस गाँवमें बहुत समय पहले अपने बैल बेचने आया था और अुसने अुस गाँवके जिस आसामीको बैल बेचे थे, अुसीका बादमें वह दत्तक दामाद बन गया था। अुसके चरित्र तथा व्यवहारसे प्रसन्न होकर अुस आसामीने जोगय्याको अपनी पुत्री देकर अुसको अपने घरमे रख लिया था। अुस दिनसे जोगय्या दिल लगाकर काम करने लगा। वह जब अिस घरमे आया था, तब अुसके ससुरकी जायदाद पाँच अेकड़ मात्र थी। जोगय्याने अपने ससुरके देहान्तके समय तक सौ अेकड़ जमीन अिकट्ठी कर ली थी, परन्तु जमीनकी वृद्धि करते समय अुसे जो आनन्द तथा अुल्लास था, वह आज नहीं है। रोज खेतपर जाकर कुली और नौकरोंको डाँटना, खेतके चारों तरफ देख आना, अुसका दैनिक कार्यक्रम हो गया था। पहलेका आनन्द तो आज नहीं है, परन्तु यह आदत मात्र शेष रह गयी थी। जोगय्या जामुनके वृक्षसे हटकर अुसी तरह बैठा रहा।

सूर्यकी किरणें जामुनके पत्तोंके बीचसे जोगय्याके मुख-मण्डलपर नाचने लगीं । आँख खोलकर देखनेपर उसने पाया कि कुली खेतमे नहीं है । सब कुली पेड़ोंसे बँधी भोजनकी गठरियोंको खोलकर खानेका उपक्रम कर रहे हैं । कुछ लोग भोजन समाप्त करके मेड़ोंपर लेटनेकी तैयारीमे हैं ।

जोगय्याने गरजते हुअे कहा—“अठ जाओ !” असपर सब कुली यह कहकर हँसने लगे—“अस बुढ़ापेमें भी जोगय्या कैसे फुर्तीले है ।” अकने कहा—“अभी खाने बैठे हैं मालिक !” धीरे-धीरे अक-अक करके सभी कुली खेतमे चले गये ।

जोगय्याने अक वार गाँवकी तरफ देखा । रोज दुपहरके समय उस जामुनके वृक्षके नीचे खानेकी आदत है उसे । उसकी पोती प्रति दिन वहीं भोजन लाकर खिलाती है । उसने दूरपर भोजन लेकर आती हुअी अपनी पोतीको देखा । अन्धेरा छाया हुआ है । पानी बरसे तो क्या होगा ! उसे अपने भीग जानेकी चिन्ता नहीं है । पर यदि उसकी पोती भीग जाअे तो ! उसे स्मरण हो आया कि वर्षाके अधिक होनेपर वे दोनों कटहलके वृक्षके नीचे बनी झोपड़ीमे जा सकते हैं । वह झोपड़ी उस समयकी बनी है, जब उसने अस खेतको खरीद लिया था । तबसे वह धूपमे सूखती, वर्षामें भीगती हुअी उसी प्रकार खड़ी है ।

“दादा ! भोजन लाओ हूँ ।” पोतीने भोजन-पात्रको नीचे रखकर उसपर बँधे कपड़ेको हटाया और यह कहकर वह खेतमे दौड़ गयी—“दादा ! जब तक तुम भोजन करते हो, तबतक मैं खेतमे हो आऊँगी ।” जोगय्या धीरेसे अुठा और नहरके पास जाकर उसने हाथ-मुँह धोया और फिर भोजन करने बैठ गया ।

×

×

×

खेतमे कुली घास काट रहे थे । वह लड़की कुछ देरतक मेड़पर खड़ी रही । सब कुली “छोटी साहिबा” के सम्बोधनसे उसका परिहास करने लगे । लहँगको पैरोसे टकरानेसे बचाते हुअे उसे हाथमे पकड़कर खेतकी मेड़परसे वह अपने दादाकी ओर दौड़ने लगी । रास्तेमे उसका पिता मिला । उसने पूछा, “जरीका लहंगा पहन आओ हो, खेतमें उसपर कीचड़ नहीं लगेगा ?”

लड़कीने जवाब दिया—“दादाने अिसे पहनकर आनेको कहा था। अिस लहँगेको पहने हुअे मुझे दादा देखना चाहते है।”

“तो दादाने नही देखा?”

लड़कीने अुत्तर दिया—“भूल गअे है।”

“बेटी! दादाजी भोजन कर चुके?”

“परोसकर आयी हूँ।”

“वे कहाँ है?”

“वही जामुनके पेड़के नीचे।”

दोनों जामुनके वृक्षके पास चले गअे। आकाशमें अन्धेरा फैलता जा रहा था। वर्षा होनेकी सम्भावना थी। नरसय्याको यह पसन्द नही था कि अुसके पिता साठ वर्षकी आयुमे भी खेतका काम देखनेका परिश्रम अुठाअे। खेतपर भोजन मँगाना तो अुसे कतअी पसन्द ही नही था। नरसय्या अुस गाँवकी पंचायतका मुखिया है। वह प्रतिष्ठाके साथ जीवन बिताना चाहता है। पर कहनेसे फायदा ही क्या है? अुसकी बात अुसका पिता माने तब न? जोगय्या कहता है, खेतपर भोजन करने मात्रसे प्रतिष्ठा घट नही जाती।

मेघ गरजने लगे। बिजली कौधने लगी। वर्षाकी बूँदें ‘टप-टप’ करके गिरने लगी। द्रुत गतिके साथ नरसय्या जामुनके वृक्षके पास आ गया। अुसके पिता वही पेड़से सटकर बैठे हुअे थे। लाठी और पगड़ी अेक ओर पड़ी हुअी थी। आँखें मूँदकर जोगय्या गहरी चिन्तामें मग्न दिखाअी दे रहे है। मनुष्य सदा सोचनेवाला प्राणी है। चाहे आवश्यकता हो या नहीँ, परन्तु अुसके सोचनेकी क्रिया बन्द नही होती। जोगय्या अपनी मुट्ठीको नाकसे सटाअे अुसमें रखी हुअी वस्तुकी गन्ध ले रहे हैं। अुनकी मुट्ठीमें क्या है? फूल? नही। तम्बाकू? वह भी नही। मिट्ठी.....बस.....केवल धरती माताकी मिट्ठी, जामुनके वृक्षके नीचेकी काली मिट्ठी।

नरसय्याने व्यग्र चित्त होकर पुकारा—“पिताजी! पिताजी!” बड़ी नीरसताके साथ अुसके पिताके मुँहसे ‘बेटा’यह शब्द निकला। मुट्ठी ढीली होकर हाथ झुकने लगा और मिट्ठी जोगय्याके हाथसे गिरने लगी। जोगय्याकी वह शरीररूपी मिट्ठी मिट्ठीमें मिल गअी। “पिताजी! ...पिताजी...!”

पिताजीसे फिर अुत्तर नही मिला।

* * *

५.

सपनेकी सचाओ

—श्री कोडवटिंगंटि कुटुंबराव



आप द्वितीय अुत्थान-कालके लेखकोंमें अग्रणी माने जाते हैं। आप बहुमुखी प्रतिभाके लेखक हैं। आप वैज्ञानिक दृष्टिकोणके माध्यमसे जीवनको समझनेका प्रयत्न करनेवाले प्रज्ञाशाली हैं। अन्य लेखकोंमें निराशा-निरुत्साह दिखाओ देता हैं तो आपमें आशा और अुत्साह दिखाओ देते हैं। वास्तविक जीवनके आनन्दका आस्वादन कराते हुअे आपने अपने साहित्यके माध्यमसे युवकोंको अपने अुत्तम भविष्यका निर्माण करनेके लिए आवश्यक साहस प्राप्त करनेकी दिशामें प्रयत्न करनेका सन्देश दिया है। सामाजिक अपराधों अेवं अन्यायोंका सामना करनेमें आप सदा तत्पर रहते हैं और असु गन्दगीको दूरकर स्वस्थ बनानेकी आकांक्षा रखते हैं। आपकी कहानियोंमें तीक्ष्ण विमर्शना-दृष्टि गर्भित होती है। आपने सैकड़ोंकी संख्यामें कहानियाँ लिखी हैं। आपने अनेक अपुन्यास लिखे हैं। उनमें “चदुवु”, “प्रेमिचिन मनिषि”, “आडजन्म”, “अरुणोदयम्” और “पंच कल्याणि” मुख्य हैं। आपके कओ रेडियो रूपक रेडियोसे प्रसारित हो चुके हैं। उनमें “सवति तल्लि”(सौतेली माँ)“ओरान मंचू” अित्यादि अनेक भाषाओंमें रूपान्तरित हो प्रसारित हो चुके हैं। विज्ञानशास्त्र (अेम. अेस. सी.) का अध्ययनकर आप वैज्ञानिक नहीं बने, बल्कि आपने लेखक बनना अधिक पसन्द किया। फिर भी आपकी रचनाओंमें सर्वत्र वैज्ञानिक दृष्टिकोण देखा जा सकता है। “हिरोशिमा”, “मानव वंशवृक्ष”, “ग्रहोंकी अुत्पत्ति” आपके अँग्रेजी अनुवाद हैं। “प्राणी और विश्व” अित्यादि मौलिक वैज्ञानिक ग्रन्थ हैं। आपकी गणना प्रगतिशील लेखकोंमें की जाती है।

* * *

सपनेकी सचाओ

किसीके द्वारा जगानेका अनुभवकर जोगाराव बिस्तरपरसे अठ बैठा । सारा वातावरण सुनसान है । सावधानीसे देखनेपर केवल लीलाके साँस लेनेकी ध्वनि सुनाओ दे रही है । निचले हॉलकी घड़ीने तीनकी घण्टी बजाओ ।

जोगाराव अपने सपनेका स्मरण करते हुअे पुनः बिस्तरपर लुढ़क गया । फिरसे निद्रा आनेकी सम्भावना असे प्रतीत नहीं हुओ ।

असके सपनेमें ओओ विशेषता नहीं है । न मालूम क्यों दस वर्षके पूर्वकी घटनाअें पुनः स्वप्नमें दिखाओ दी हैं । कठिनाओओंसे भरे वे दिन, वह झोपड़ी, चारपाओ, और कागजकी हरिकेन लालटेन ! अस समय वह लीलासे अपरिचित था । लीलाका नाम भी अस समय नहीं जानता था । तो आज स्वप्नमें वह दिखाओ दी । जोगारावने स्वप्नमें अस झोपड़ी, टूटी-फूटी चारपाओ, हरिकेन लालटेन और लीलाको बड़े प्रेमसे देखा था । स्वप्नको देखते समय असका मन कैसा निर्मल था !

अपनी गरीबीमें जोगाराव पत्र-पत्रिकाओंमें लेख और कहानियाँ भेज करता था । असके आलोचनात्मक लेखोंकी प्रशंसा करनेवाले पाठक भी थे । लेखक और समीक्षकके रूपमें जोगारावने थोड़ी-सी ख्याति प्राप्त की थी । उन दिनों अपनी किसी कहानीके लअे पारिश्रमिकके रूपमें पाँच रुपये 'पत्र-पुष्प' प्राप्त होते तो असे कैसा आनन्द प्राप्त होता ? वे पैसे जोगारावके

हाथोंमें जादूका खेल दिखाते। प्रति दिन चार आने पैसोंसे अपना पेट कैसे भरें? कभी महीनों तक यही क्रम चलता रहा। वह स्वयं ही भोजन बनाता, जिसमें प्याज, मिर्च, नमक और तेल मिलाकर कुछ खाता, फिर मट्ठेमें नमक और नीबू मिला गलेसे नीचे अतारता—अत्यन्त आनन्द होता। कम पैसोंमें अपनी आवश्यकताओंकी पूर्तिके अन्वेषणमें ही वास्तविक आनन्द है। जोगाराव इस आनन्दसे परिचित था। परन्तु उसे पहचान नहीं पाया।

जोगाराव और लीलाके शहरमें आनेके अपरान्त अन्हें कभी दिनों तक अच्छा भोजन उपलब्ध नहीं हुआ। चार अड़ली, साम्बार, आधा कप काफी भी मिल जाता तो उसके लिये काफी था, किन्तु अतना भी प्रति दिन नसीब होना कठिन था। रातको कैरियरमें पाँच आनेका भोजन मँगाकर दोनों अपना पेट भरते।

लीलाको सिनेतारिका बनानेका स्वप्न यथार्थ होनेपर भी, अपनी दूसरी कामनाकी पूर्तिकी कल्पना जोगारावने कम की थी। दोनों स्वप्न साकार हुअे। सत्य निकले। लेकिन जोगारावको इस रात्रिके समय आनन्दकी प्राप्ति क्यों नहीं है? इस बातकी वह आत्म-परीक्षा करने लगा।

जोगारावको इस समय जो दुखी बनानेवाली स्थिति है, उसका “व्यथा” जैसा बड़ा भाव भी निकाला नहीं जा सकता है और न लिवरकी गड़बड़ी जैसा छोटा अर्थ ही। इस असन्तुष्टिका कारण यदि लीलाको माना जाये तो इस असन्तोषको दूर करनेमें जोगारावके सामने कभी रास्ते हैं। लेकिन अतन रास्तोंका अन्वेषण करके जोगाराव आत्म-वंचना नहीं कर सकता है। लीला और उसके बीचका जो सम्बन्ध है, वह पिछले तीन-चार सालोंमें बहुत कुछ बदल गया है। यह सत्य होते हुअे भी लीलाको दोष देना निरर्थक है। क्योंकि गत आठ वर्षोंसे वह लीलाका कभी प्रकारसे ऋणी बना हुआ है।

लीला किसी व्यक्तिकी पत्नी नहीं। वह वेश्या परिवारकी है। उसके माता-पिता जीवित हैं। लेकिन उसके पिताने लीलाके साथ पिता जैसा व्यवहार नहीं किया। १२ वर्ष पूरा होनेके पहले ही उसने लीलाको बाजारमें रखा। उसमें मानसिक वांछनाओं (भौतिक कामनाओं) के अुत्पन्न

होनेके पूर्व ही घृणित अिन्द्रियानुभूति अुद्भव होनेके कारण वह पुरुषोके प्रति द्वेष करना मात्र जानती है। पुरुषोंकी मित्रतासे वह अनभिज्ञ है। अिस अभावकी पूर्ति जोगारावने की। अुसके द्वारा लीलामे स्त्रीत्व परिपूर्णत्वको प्राप्त हुआ। लीलाने जोगारावके प्रभावको पूर्ण रूपसे स्वीकार ही नहीं किया, अपितु अुसे अिस बातका गर्व भी हुआ कि मानो विश्वका अेक श्रेष्ठ पुरुष अुसका अपना हो गया है। अुसके अूपर विश्वास रखकर अुसके साथ नरक तक भी जानेका जोगारावने निश्चय किया। अितना होते हुअे भी लीला कभी जोगारावके हाथका खिलौना नहीं बनी। वह अुसका प्रतिबिम्ब तो है ही नहीं और न लीलाको अपना प्रतिबिम्ब बनानेका प्रयत्न ही जोगारावने कभी किया।

लीलाको सिनेमामे अभिनय करनेका अवसर प्राप्त हुआ तो वह केवल जोगारावके प्रयत्नके कारण ही। अुसने लीलाके प्रति पूर्ण विश्वासका परिचय दिया। किसी-न-किसी तरह लीलाको अभिनेत्री ही बनानेकी वेदना जोगारावके मनमे न होती तो वह सफल न हुआ होता, लेकिन अुसके मनमें जो अटल विश्वास था कि लीला आज नहीं तो कल अवश्य अेक प्रसिद्ध सिनेतारिका बन जाअेगी। जोगाराव लीलाको साथमे लिअे हुअे सिने-निर्माताओके पीछे कभी दौड़ा नहीं, और न वह निर्माताओके पास जाकर अनुनय-विनयके साथ गिड़-गिड़ाया ही। निर्माताओंने लीलाके प्रति विश्वास प्रकट न किया तो जोगारावने कभी अुनकी निन्दा नहीं की। अुसके मनमें यह धारणा थी कि अुसे निर्माताओंके पास ले जानेपर निर्माताओंका ही नुकसान होगा। वही अभिप्राय अेक-दो निर्माताओमे भी पैदा हुआ। अस्तु, पहले लीलाको अेक-दो छोटे रोल मिले।

जोगारावने लीलाको सब प्रकारकी स्वतन्त्रता दे रखी थी। मानवोंपर लगनेवाले बन्धनोमेसे किसी प्रकारका कोअी बन्धन लीलापर लागू नहीं था। स्वभावसे ही लीला विहग जैसी रही। जोगारावने अुसे स्वतन्त्रता-प्राप्त विहग बनाया।

निर्माताओकी प्रवृत्ति शिकारी जैसी होती है। वे जल्दवाजीमें बन्दूक दागकर चिड़ियाको हाथसे जाने नहीं देते। अुनकी धारणा थी कि यदि वे अपनी ओरसे अधिक अुत्सुकता न दिखाअेंगे तो लीला सस्तेमें मिलेगी। यदि

वे अधिक अत्युत्कृष्टता दिखाएंगे तो उसकी दर भी बढ़ सकती है। इसलिये वे सहस्रों आँखें खोले जाल लिये लीलाको फँसाने के ताकमें बैठे रहे। इसी बीच अंक निर्माता लीलाको बुक करने आया। शायद उसकी “तारिका” ने अधिकाधिक रुपये अँठने के विचार से टाल-मटोल करना शुरू कर दिया था। कन्ट्राक्ट फार्म पर हस्ताक्षर करते समय पूर्व निर्णय को ठुकराकर उस तारिकाने बड़ी मोटी रकम की माँग की होगी। इससे पहले उस तारिका से तीन कन्ट्राक्ट फार्म पर हस्ताक्षर के प्रसंग आये थे। उससे तंग आकर निर्माता मोटरकार पर दौड़े-दौड़े लीला के पास गये और उन्होंने उससे कहा—“यह परसो मेरे द्वारा प्रारम्भ किए जाने वाले पिकचर में हीरोइन पात्र का कन्ट्राक्ट है। इसपर केवल संख्या मात्र नहीं दी गयी है। कहो, तुम कितना चाहती हो? यदि मुझे तुम्हारा काम पसन्द आया तो मैं तुम जितना कहोगी, देने को तैयार हूँ, अन्यथा पिकचर बनाना ही बन्द कर दूंगा।”

कन्ट्राक्ट फार्म लेकर जोगाराव ने लीला के हाथ में दिया और हस्ताक्षर करने की जगह की ओर संकेत करते हुए हस्ताक्षर करने को कहा।

निर्माता ने पूछा—“रकम कितनी लिखी जाये?”

लीला ने उत्तर दिया—

“आप अपने निर्णय के अनुसार दीजिये। नुकसान होने पर हमें रुपये देने की जरूरत नहीं। आप हमारे यहाँ आये हैं। हम आपके यहाँ नहीं गये हैं। कोई भी अतिथियो से मोल-भाव नहीं करता।”

व्यापारी के भीतर की मानवता ने जोर मारा। मन में छह हजार से आठ हजार तक का निर्णय करने वाले निर्माता ने अब दस हजार की रकम भरते हुए कहा—“मैं जो रकम देना चाहता था, उससे मैंने दो हजार अधिक लिखे हैं। यदि लीला मन लगाकर काम करेगी तो मेरे ये दो हजार रुपये अधिक दिअे हुए बसूल होने में कोई सन्देह नहीं है।”

अतः वार्तालाप के पश्चात् निर्माता ने छुट्टी ली। ताकमें बैठे दो अन्य निर्माताओं ने उस निर्माता को गालियाँ दी और उन लोगों ने भी दस-दस हजार के कन्ट्राक्ट लिखाये। इसके बाद वे कभी दिनों तक अपनी मूर्खता पर पश्चात्ताप करते रहे।

असके बाद लीलाकी अन्नतिसे जोगारावका सम्बन्ध न रहा। अस वर्ष असने छह कन्ट्राक्टोंपर दस्तखत किअे हैं। अनमेसे प्रत्येक तीस हजार रुपयेका है। पिछले साल ही अेक लाख रुपये लगाकर यह भवन खड़ा करवाया है। असमे जोगारावका कोअी हाथ नही है। अन दो-तीन वर्षोंमे सवाक्-चित्रपटपर लीलाके सौन्दर्यका खूब विकास हुआ। लीलाका अभिनय दिन दूना रात चौगुना सफल होता रहा। किन्तु असकी अस अन्नतिका मेकपमैन, फोटोग्राफर, दर्शक, प्लै-बैक-गायक, सिनेरियो-लेखक अित्यादिके सहयोगमें है। असमे जोगारावका हाथ बिल्कुल नही है।

सिनेमा संसारमे अपने पैर मजबूतीके साथ जमानेके बाद लीला कअी विषयोंमे पहलेकी अपेक्षा पीछे रह गअी। असने भगवान वेंकटस्वामीकी (बालाजी) मनौतियाँ पूरी की। अभिषेक कराया। पिछले दो-तीन सालोमे दो-तीन ज्योतिषियोंका पोषण कर रही है। अन सबके अलावा अपनी अन्नतिमे योग देनेवालोकी कृतज्ञता और अपनी अन्नतिमे बाधा अपस्थित करनेवालोपर विजय भी वह अपने ही अुद्योगो अेवं अकथ परिश्रमसे प्राप्त कर रही है।

लीलाको देखकर जलनेवाले और असके पतनकी कामना रखनेवाले भी असपर दूषित प्रचार कर रहे हैं। असे डरा-धमकाकर भी जो लोग अससे रुपये अैठ नही पा रहे हैं, वे पत्र-पत्रिकाओंमे असकी निन्दा करने लगे हैं। लीला अन सब परिस्थितियोंसे घबरा गअी। लेकिन जोगाराव असे बराबर धीरज बँधाता रहा।

वह कहता—“तुम्हारे पेशेमे तुम्हारी अपख्याति बाधा अपस्थित नही कर सकेगी। तुम्हारे पतिके स्थानपर जबतक मैं हूँ, तबतक कोअी भी तुम्हारा कुछ बिगाड़ नही सकता। जो पत्थर फेकेगा, वही घायल होगा।”

जोगारावके अस प्रकार धीरज बँधानेपर लीलाका अुत्साह द्विगुणित हो अुठता और अब तककी अर्जित सफलतापर असकी छाती गर्वसे फूल अुठती।

असे पदोंपर देखने मात्रसे लाखों प्रेक्षकोंको परवशता प्राप्त होती, लेकिन असका आर्लिगन भी जोगारावको विचलित नही कर सका। अेक समय लीलाको जो लावण्य और सुन्दरता प्राप्त थी, वह अब नहीं रह गअी है।

अनियमित, क्रमविहीन निद्रा तथा आहारवाला अभिनय तथा प्रेमविहीन काम-तृप्ति उसके सौन्दर्यको नष्ट कर रही है। उसका सहज सौन्दर्य क्रमशः घटता जा रहा है। पर उसके स्थानपर अब कृत्रिम सौन्दर्य दिन-प्रति-दिन बढ़ता जा रहा है।

दो मास पूर्वसे लीलाका सिनेमा क्षेत्रोंमें अब अंक नया अध्याय प्रारम्भ हो गया है। उसके साथ कुछ और लोगोंने मिलकर अंक पक्वचर तैयार करनेका निश्चय किया है। जोगारावको यह कतली पसन्द नहीं है। लेकिन अिससे लीलाके निरुत्साहित होनेके लक्षण देखकर जोगारावने अिस योजनाका कोली विरोध नहीं किया। अिस चित्रका निर्वहन अननुभहीन और अधिक लोगोका हाथ होनेके कारण चित्र निर्माणके पूर्व ही लीलाके बीस हजार रुपये खर्च हो गये, और लीलाको पतातक न चला। जोगारावने अिस मामलेमें दखल देना अुचित न समझा। वह स्वयं कहानीकार था। अुसकी अन्तिम कहानीको प्रकाशित हुअे पाँच-छह वर्ष पूरे हो गये हैं। स्वयं अंक अच्छा कहानीकार होते हुअे भी जोगारावने लीलाके अभिनय करनेवाले चित्रोंकी कहानियोंकी ओर ध्यान नहीं दिया।

जोगाराव लीलाके व्यवहारोमें किसी दृष्टिसे भी हस्तक्षेप करना पसन्द नहीं करता था। अुसने लीलाके मित्रों और अुसके सैर-सपाटोंकी कभी अालोचना नहीं की। अुसने लीलासे कभी यह भी नहीं पूछा—“कहाँ गली थी? कहाँसे आ रही हो?” अिस विषयमें लीलाके प्रति द्वेष भी अुसके मनमें नहीं था, क्योंकि लीलाने अपना हृदय किसी दूसरेको कभी नहीं सौपा।

जोगारावपर लीलाका अब भी स्नेहभाव है। पर लीलासे जोगाराव केवल अुसकी कमाओकी कामना रखता है। जोगारावको आवश्यक स्नेह देनेके लिअे भी अब लीलाके पास समय नहीं है। वह अिस समय कलाकी अुपासना भी नहीं कर रही है। अिस समय अभिनय करना लीलाके लिअे कला नहीं, पेशा नहीं, बल्कि अंक व्यापार-मात्र रह गया है। वह अिस समय चित्र निर्माणमें वितरकों द्वारा कान्ट्राक्ट लेना, अन्य नर-नारियो द्वारा काम कराकर अधिकाधिक लाभ प्राप्तिमें लगी हुली है।

लीला क्या करती है, कब करती है, कैसे करती है—अस विषयकी जानकारी प्राप्त करनेकी जिज्ञासा पैदा करनेवाली बात जोगारावके मनमें कभी नहीं आती। सेठ-साहूकारोसे मिलने वह अन्य स्थलोपर भी जा आया करती है और अपने समस्त प्रयत्नोके वारेमे वह जोगारावको मुनाती भी रही है। लेकिन वह उसकी सलाहकी प्रतीक्षा नहीं करती। तब वह यह सब उसे क्यों मुनाती है, यह जोगारावकी समझमें नहीं आता।

जोगाराव लीलाके धनका गुलाम नहीं बना है। यदि वह ऐसा बन जाता तो कोही झंझट नहीं थी। लेकिन आनन्दकी प्राप्तिके लिये जीवनसे लड़ना है तो लीलाके लिये अक समस्या पैदा करनी होगी। जोगाराव यह निर्णय नहीं कर सका कि लीलाको उसने ही सिनेतारिका बनाया था। अब लीला उसकी आकांक्षाओकी पूर्ति कर रही है। लेकिन वह जिस प्रकारका फल प्राप्त कर रही है, वह जोगारावके लिये वाछनीय नहीं है। यद्यपि लीलाका उसमे कोही दोष नहीं है, फिर भी वातावरण ही ऐसा कुछ बना हुआ है। वह लीलाको छोड़कर अपने पैरोंपर खड़ा हो? जीवनमें प्रवेश करना है तो उसका ठीक समय लीलाके पतनके बाद ही है। लेकिन उस हालतमे लीलाको त्यागना कहाँतक न्यायसंगत है।

घडीमें पाँच बजते मुनकर जोगाराव बिस्तरपरसे उठ बैठा। पता नहीं क्यों? उसे अचानक बचपनकी अक घटना स्मरण हो आती। चारपाओके सामने दर्पणमे अपनी आकृतिको देखते ही अपने भाओका स्मरण हो आया। वह कओ साल पूर्व चार महीने तक चारपाओपर पड़ा रहा। तन्दुरुस्तीके ठीक होनेपर उसे फिरसे चलना सीखना पड़ा। वास्तवमें वह भी ऐसी दशामे नहीं है? लीलाकी कमाओपर जीवन विताना छोड़कर अपने पैरोंपर खड़े रहनेका प्रयत्न करनेपर क्या वह गिर न जाओगा? अवश्य गिर जाओगा।

जोगाराव लीलाके पलंगके पास जाकर बैठ गया और उसने लीलाके शरीरपर हाथ रखा।

लीलाने करवट बदली। लेकिन वह उठी नहीं।

“ली ला! अयू!”

“अँ जगाओ मत। निद्रा पूरी नहीं हुओ है।”

“मैं गाँव जा रहा हूँ।”

“कहाँ ? किस गाँवमें ?” आँखें मूँदे निद्रामें ही लीलाने पूछा।

“कहीं ? किसी गाँवमें।”

“क्यों ?” लीलाने जबरदस्ती आँखें खोलकर पूछा।

“कुछ विशेष बात नहीं। थोड़े दिनतक घूमनेकी अच्छा है।”
लीला अठ बैठी। लेकिन थोड़ी देर तक चुप रही।

“कब जा रहे हो ?”

“आज ही।”

“कहाँ ?” फिरसे पूछा।

“कुछ पता नहीं। अभीतक निश्चय नहीं किया।”

“कुछ सूझता नहीं क्या ? है न ? ओह !”

“हाँ।”

“फिर कब आओगे ?”

“जब अच्छा होगी।”

लीलाका मुँह विवर्ण हो गया। अब उसे होश आया। उसने कल्पित अत्साहका अभिनय करते हुअे कहा—“अंक काम करेंगे। जरा फुरसत होते दोनों ही जाओगे।”

“तुम्हें कभी फुरसत नहीं मिलेगी। तुम्हें हाथ भर काम है। मैं ही बेकार आदमी हूँ।”

लीलाने मुँह सिकोड़कर कहा—“क्या अपमान लगता है ?”

“मुझे स्वयं मालूम नहीं। लेकिन मुझे असा प्रतीत होता है कि मैं बेकार पड़ा हुआ हूँ।”

“वहाँ जाकर करेंगे क्या ?”

“अभी तक सोचा नहीं।”

“मेरे बारेमें क्या सोचा है ?”

“तुम्हें किस बातकी कमी है ?”

“तो क्या यह अपयश अठाऊँ कि तुमने मुझे त्याग दिया है ? ”

जोगारावने हँस दिया और कहा—“तो तुम्ही कहो कि तुमने ही मुझे छोड़ दिया है। ”

“कौन मुझसे आकर पूछेगा ? ”

“तो जाने दो, मैं ही कहूँगा। ”

थोड़ी देर तक दोनों चुप रहे।

“अचानक मेरे ऊपर तुम्हें अितना क्रोध ही क्यों हुआ ? ”

“क्रोध ? कभी नहीं हुआ। मैंने कभी तुम्हें कुछ नहीं कहा। तुमने मेरी जो भलाही की, वह दूसरा कौन करेगा ? ”

“तो फिर जाना ही क्यों ? ”

“तुमने कुछ किया, असलिये नहीं, बल्कि असलिये है कि मैं कुछ नहीं कर रहा हूँ। ”

“क्यों नहीं करते ? कोअी-न-कोअी काम करनेको मैंने कअी बार कहा था। तुम्हारा न करना क्या मेरा ही दोष है ? ”

“लीला ! तुम अपने विषयको छोड़, दूसरेपर क्यों नहीं सोचती ? करनेको अच्छा काम भी तो हो ? ...तब न ? ”

“अब भी वह झंझट रहेगी। फिर अकारण ही वहाँ जाकर तकलीफ क्यों अठाते हो ? ”

जोगारावने पुनः हँस दिया और कहा—“यदि मैं कुछ न कर सकूँगा तो फिर नहीं आ सकता हूँ क्या ? तुम रोकोगी भी नहीं न ? ”

यह बात लीलाके मनमें चुभ गयी। उसे क्रोध भी हुआ और अुसने कहा—“तुम्ही ये बातें करते हो। मैं तो तुम्हें यहीपर रह जानेको कह रही हूँ न। ”

“आज तक हमारे बीचमें कभी झगड़ा नहीं हुआ। आज भी नहीं होना चाहिये। दोस्तोंके रूपमें रहे, वैसे ही रहेंगे ? ”

थोड़ी देर तक सोचकर लीलाने पूछा—“दूसरी कोअी मिल गयी क्या ? ”

“अभी तक नहीं। तुम्हारे प्राप्त होनेके बाद दूसरी कोअी मेरा मुँह नहीं देख सकती। सिनेतारिकाओंके पति कैसे चरित्रवान होते हैं, तुम्हें नहीं मालूम ? ”

लीलाने ओंठ काटते हुअे कहा—“यह सब मुझे अच्छा नहीं लगता । ”

जोगारावके सामने वह दूसरे लोगोसे कब कैसा व्यवहार करना जानती थी। लेकिन अब जोगारावके विरुद्ध बोलनेमे वह कुछ-का-कुछ जवाब दे रही है।

“मैं अपने बारेमे सोचूँ तो अपनेपर ही मुझे घृणा होती है। अनि सात-आठ वर्षोंमे मैं नालायक बन गया हूँ। असलिये अब तुझे ही सोचना है।”

“ओह ! साढ़े पाँच वज गअे हैं। मैं अभी आअी।”—अैसा कहती हुअी लीला चली गअी। जोगारावको असि बीच आत्म-चिन्तन, मनन करनेका अवसर मिला। अुसके मनमे पहले केवल यह भावना पैदा हुअी थी कि कही-न-कही अवश्य जाना चाहिये। लेकिन अुस भावनाको अेक रूप देनेके अभिप्रायसे ही जोगारावने लीलाको बातोंमे घसीटा था। असि सम्भाषणके बाद अुसने पूरी तरहसे जानेका ही निश्चय किया। वापस लौटकर लीलाने देखा—जोगाराव नहीं है। कही चले गअे हैं। अुसका मनीबेग कोटकी जेबमें ही है। अुसे भी बिना लिये वह चले गअे हैं।

अपनी वेदनाको न रोक सकनेके कारण लीला रो पडी। किसीने भी अुसका अैसा अपमान नहीं किया था। अुसने अपने मनसे प्रश्न किया—“मैने किया ही क्या है ? मेरे द्वारा कौन-सा अपराध हुआ है ? मुझे असि प्रकारकी सजा क्यों दी गअी है ? ” लेकिन अनि प्रश्नोका समाधान कौन करे ?

जहाँ भी देखा, जोगारावका स्मरण दिलानेवाली चीजे पडी हुअी है। अनि वस्तुओंके देखनेपर कअी तरहकी प्राचीन स्मृतियाँ जाग अुठती है और अुसकी वेदना अधिकाधिक गहरी होती जाती है। मृत व्यक्तिके बारेमें जैसा स्मरण किया जाता है, अुसी भाँति अपने जीवनसे सम्बन्धित विषयोंका वह स्मरण करने लगी। गत दो-तीन वर्षोंकी घटनाअें ही याद हो आअी हों, अैसी बात नहीं, बल्कि कअी सालोकी घटनाअे ताजी होने लगी।

लीलाने अपने जीवनमें अकेले जोगारावसे ही सच्चा प्रेम किया था। नाम और प्रतिष्ठाके आधारपर होनेवाला जोगारावके साथका यह प्रेम क्रमशः लुप्तप्राय हो गया। यह सत्य है कि लुप्त होनेवाले प्रेमका मूल्य अधिक ही होता है। गुजरे हुअे दिनोंमें जो आनन्द प्राप्त हुआ था, वह अब नहीं रहा।

यदि उस दिन रातमें उसे अकेले ही घरपर सोना पड़ता तो उसे कितनी व्यथा होती ! पर उस रातको शूटिंग थी, वह बेकार हो गयी। दूसरे दिन वह अस्वस्थताका बहाना कर घरपर ही रह गयी। प्रातःकाल तीन बजे घर लौटी, बिना मेकअप आदि धोअे चारपायीपर पड़े-पड़े रोती रही और उसे नींद आ गयी।

दूसरे दिन वह घरपर ही रही। टेलीफोन करनेवालों तथा घरपर आअे हुअे लोगोंको उसने कहलवा दिया कि वह घरपर नहीं है। जोगारावको भूलना ही यदि उसका अुद्देश्य है तो उसने बड़ी भूल की है।

तीसरे दिन जब वह शूटिंगमें गयी तो उससे जोगारावके बारेमें पूछा गया। उसने गाँवका बहाना किया। उस दिन भी सारी शूटिंग व्यर्थ गयी। सारे शहरमें यह समाचार बेतारके तारकी तरह फैल गया कि जोगाराव लीलाको छोड़कर चले गअे हैं। लीला सभीसे कहती रही कि वह कामसे बाहर गअे हैं, जल्दी ही लौट आअेगे।

जोगारावको गअे १५ दिन हो गअे हैं। अधर लीलाके मनमें दिन-प्रति-दिन जोगारावके लौटनेकी आशा अेक ओर बढ़ रही है तो दूसरी ओर उसके वापस न लौटनेकी निराशा भी बढ़ती जा रही है। लीलाके बहुत-कुछ दिमाग लड़ानेपर भी उसे कुछ नहीं सूझा कि वे कहाँ हैं, कैसे रहते हैं, क्या करते होंगे और अुन्हें खर्चके लिअे रुपये कहाँसे मिलते होंगे ?

अिस विश्वमें अपराधकी कल्पनाकर बिना किसीके द्वारा दण्डित हुअे सजा भोगनेवाले लोग भी हैं और दण्डके अनुभवकी कल्पनाकर सजाका पता न पा, अपराधकी कल्पना करनेवाले लोग भी हैं। लीलाने निश्चय किया कि उसने जोगारावके प्रति कोअी बड़ा अपराध किया है। उसका निश्चय दिन-प्रति-दिन दृढ़से दृढ़तर होता गया।

लीलाने कभी काम किये थे। जोगारावने प्रायः सबको भुला दिया था। तो भी वे अब महान अपराध बनकर लीलाको पीड़ित करने लगे।

जोगारावसे उसे कभी बातें कहनी थीं। उसके जाते समय उसके उपकारकी कृतज्ञता लीलाने प्रकट नहीं की। बल्कि जोगारावने ही लीलाके प्रति कृतज्ञता प्रकट की थी। उसने केवल अपने बारेमें ही सोचा है। जोगारावके सम्बन्धमें कभी नहीं सोचा है। इस बातका स्मरण जोगारावने दो बार दिलाया था। लेकिन लीलाने ध्यान ही नहीं दिया।

एक दिन लीला कोभी पत्रिका अलुट रही थी। उसमें उसे जोगारावका नाम दिखायी दिया। “प्रत्यक्ष नरक” नामसे जोगारावने कोभी कहानी प्रकाशित करायी थी। उस छपे हुए नामकी ओर लीलाने अनेक बार देखा। वह विश्वास नहीं कर सकी कि यह नाम अुन्हींका है। यद्यपि उसे मालूम है कि वह कहानी जोगारावने ही लिखी है। इस नामकी ओर देखते समय उसे ऐसा लगा मानो जोगाराव समक्ष खड़े होकर उसकी निन्दा कर रहे हैं। उसने इस कहानीको पढ़नेकी कभी बार कोशिश की, लेकिन आँखोंके सामने अक्षर धुंधले-से दीखने लगे और वह समाचार दिमागमें बैठता भी नहीं था। विचारोंका प्रवाह जारी रहा।

कहानी समाप्त करके बहुत देर तक वह एक ही दिशामें अंकटक निहारती हुयी विचारोंमें डूबी रही। टेलीफोनकी घण्टीकी आवाजसे उसका ध्यान भंग हुआ।

टेलीफोन करनेवालेने पूछा—“जोगाराव ? ”

लीलाने तुरन्त जवाब दिया—“घरपर नहीं है जी ! ” उसे इस बातका ध्यान न रहा कि नौकर आकर टेलीफोन अुठा लेगा।

“कौन बोल रहे है जी ? अधर जोगारावने कहानियाँ नहीं लिखीं थीं, इस बार बहुत ही सुन्दर कहानी लिखी है। उन्हें बधायी दे रहा हूँ। उनसे कहियेगा।”

अस आदमीने अपना नाम तक नहीं बताया और टेलीफोन रख दिया।

टेलीफोनके रखते ही लीलाके मनमें अंक विचार आया; जिसमें यह कहानी छपी थी, डाइरेक्टरीमें उसने उस पत्रिकाके कार्यालयका नम्बर देखा। उसने पूछा—“क्या आप कृपा करके अपनी पत्रिकाके कहानीकार—जोगारावका पता बता सकते हैं?”

कार्यालयवालोंने बड़े सन्तोषके साथ पता बताते हुअे पूछा—“कहानी कैसी है जी?”

“बहुत ही भद्दी है।”—कहकर लीलाने टेलीफोन रख दिया।

झोपड़ीमें टूटी-फूटी चारपायीपर लेटे सिरहानेकी ओर हरीकेन लालटेनकी रोशनीमें पढ़नेवाले जोगाराव आहट पाकर चौंककर अठ बैठे और आगन्तुककी ओर देखकर अन्होंने कहा—“ओह! तुम हो?”

अस झोपड़ीमें लीलाने प्रथम बार पैर रखा था।

“मेरा स्वप्न! मेरा स्वप्न!!”—कहकर जोगाराव अद्विग्नकी भाँति चिल्ला अठे।

वे क्या बोल रहे हैं, यह लीलाकी समझमें नहीं आया। वह आश्चर्य-चकित हो जोगारावकी ओर देखती हुअी अुसी प्रकार खड़ी रही।

* * *

६.

हवाकी मछलियाँ

—श्री अ. आर. कृष्ण



आप युवक लेखक और कहानी-रचनामें अत्यन्त पटु हैं। रंगमंच-क्षेत्रमें आपका प्रयास स्तुत्य है। हैदराबाद सरकार द्वारा चलाओ गओ कहानी-प्रतियोगितामें आपकी कहानी 'हवाकी मछलियाँ' (गालि चेपलु) को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ था। यही अिनकी प्रतिभाका सुन्दर परिचायक है। तेलंगानेके तरुण कलाकारोंमें आपका अपना विशिष्ट

स्थान है। समाजकी वर्तमान स्थितिका यथार्थ चित्रण तथा व्यक्तियोंकी मनोभावनाओंका प्रतिबिम्ब आपकी रचनाओंमें सर्वत्र देखा जा सकता है।

* * *

हवाकी मछलियाँ

अस संसारमें कुछ ऐसे लोग हैं जो अचानक परिस्थितियोंके वशीभूत होकर किसी बड़ी जिम्मेदारीको अपने सिरपर लेते हैं और उसकी पूर्तिमें अपनेको भूलकर कर्तव्यके पालनमें निमग्न हो जाते हैं। ऐसा करते समय वे अपने मनमें यह भी समझते हैं कि उस कार्यके निभानेमें वे ही समर्थ हैं। उनके अभावमें वह कार्य पूरा हो ही नहीं सकता। वे अस नये कार्यसे अपने निजी कामोंमें होनेवाले नुकसानोंका ख्याल न करके जिम्मेदारीको निभानेमें दत्तचित्त हो जाते हैं।

चिन्नम्माके विषयमें भी ठीक ऐसा ही हुआ। उस दिनकी शामको रथमें छोटे बाबूको बगलमें बैठाकर चिन्नम्मा सैर करने चली। अिनके पीछे दो अंग-रक्षक खड़े थे। कोचवान तेजीसे गाड़ी हाँक रहा है। उस रथमें चार अरबी घोड़े जुते हुए हैं। रथ राजपथमें जा रहा है। वहीं अेक घटना हुअी। वह मामूली नहीं, बड़ी विचित्र घटना है। उस घटनाने बहुत-सी बीती हुअी बातोंको चिन्नम्माकी आँखोंके सामने ला खड़ा किया।

चिन्नम्माका जन्म तो अुत्तम कुलमें ही हुआ है; परन्तु गरीबोंके लिअे जाति-भेद कहाँ ! घोर दारिद्र्यमें ही चिन्नम्माके पतिने उसकी छोटी-सी अवस्थामें आठ महीनेके बच्चेका भार उसके कन्धोंपर छोड़कर अस संसारसे

सदाके लिये आँखें मूँद ली थी। जीविकाका कोअी रास्ता न पाकर चिन्नम्मा अपनी ३५ वर्षकी अुम्रमें जमीदार रामप्रसादके यहाँ चौका-बर्तनके कामपर नियुक्त हुअी। अुस समय छोटे बाबूकी अवस्था पाँच महीनेसे कुछ कम थी। छोटे बाबूको दूध पिलाना, स्नान कराना आदि काम चिन्नम्माको ही करने पड़ते थे। रानी बच्चेको जन्म देकर तो बैठ गअी, पर पालन-पोषणका भार चिन्नम्मापर आ पड़ा।

चिन्नम्माने अपने आठ महीनेके पुत्रको अपने छोटे भाअी रामय्याको देखरेखमें छोड़ दिया, और रोज दिनमें अेक बार जाकर वह अुसे देख अवश्य आती तथा दिनभर जमीदारके यहाँ छोटे बाबूकी देखरेख करती। अिसी शर्तपर ही तो अुसने जमीदारके यहाँ नौकरी पाअी थी। छोटे बाबूको दाअी होनेके कारण अुसे खाने और कपडोंकी कोअी कमी नहीं थी, और वहाँ अुसे अुचित गौरव भी प्राप्त होता जा रहा था। किन्तु साल-भर पूरा होनेके पूर्व ही रानीने वातरोगसे कुछ ही घडियोंमें अिस संसारसे सदाके लिये छुट्ठी ले ली। अिस प्रकार अचानक घटनेवाली घटनाकी स्वप्नमें भी किसीने कल्पना नहीं की थी। खासकर जमीदार साहबने तो यह सोचा ही नहीं था कि बड़ी तपस्याके बाद अुत्पन्न हुआ यह लाल अितनी शीघ्र ही मातृप्रेमसे वंचित हो जाअेगा। अपनी प्रियतमा रानीके वियोगने जमीदारको मर्माहत किया और यह समस्या जटिल बनकर अुनके सामने अुपस्थित हुअी कि अुस अबोध बच्चे (युवराज) का लालन-पालन कैसे हो ? धन-धान्यका अुन्हें कोअी अभाव न था। यद्यपि वे सभी साधनोंसे समृद्ध थे, पर चिन्ता तो अिस बातकी थी कि यदि अुस अबोध बालकको यह पता लग जाअे कि वह मातृ-विहीन है, तो अुसके कोमल हृदयपर कितनी बड़ी चोट पहुँचेगी—अिसकी वह कल्पना नहीं कर सकते थे। अुन्होंने निश्चय किया कि शान्तिमय जीवन व्यतीत करते हुअे अपने अेकमात्र पुत्रको बड़ा बनाना ही अब अुनके जीवनका प्रधान लक्ष्य होगा। अपने अिस लक्ष्यकी प्राप्तिके लिये जमीदारने अन्य कोअी अुपाय न पाकर चिन्नम्माको बुलाकर कहा—“चिन्नम्मा ! तुम कर तो दाअीका काम रही हो, पर तुम अिस कामको जिस प्रकार कर रही हो, अुस प्रकार कोअी निजी माता भी नहीं कर सकती।

मुझे मालूम है, छोटे बाबूपर तुम्हारा कितना गहरा प्रेम है। मैं तुमसे यही चाहता हूँ कि भूलसे भी कभी छोटे बाबूको यह मालूम न हो कि उसकी माता नहीं है और पाल-पोसकर बड़ा बनानेका भार भी मैं तुम्हें ही सौंप रहा हूँ।”—यह कहते-कहते जमींदार साहब बच्चेकी तरह फफक-फफककर रोने लगे। वे अंक बड़े जमींदार होते हुए भी अंक मामूली दाईकी सामने अितने दीन बनकर याचना कर रहे हैं। यद्यपि यह अंक आश्चर्यकी ही बात है; फिर भी जमींदारकी इस याचनामें उसे कोअी आश्चर्य मालूम नहीं हुआ, बल्कि उसे इस बातका बड़ा आनन्द हुआ कि अपने बच्चेके मातृत्वकी जिम्मेवारी लेनेवालेके सामने यह अपना हृदय खोलकर रख रहा है। जमींदारकी आँखोंमें आँसू देखकर चिन्नम्माका हृदय तड़प उठा और वह समझ गयी कि पत्नीके वियोगने उसके हृदयपर कितना गहरा धाव किया है। इसलिये चिन्नम्माने बिखरे हुए साहसको बटोरकर कहा—“बाबूजी, मेरे रहते छोटे बाबूको मातृत्वका अभाव नहीं खटकेगा।” चिन्नम्माकी अन बातोंको सुननेपर जमींदारको कुछ शान्ति मिली।

अस दिनसे परिस्थितियोंने चिन्नम्मामें बहुत बड़ा परिवर्तन कर दिया। जमींदारकी आज्ञासे सभी लोग उसे “चिन्नम्माजी” कहकर पुकारने लगे। आजतक वह दाईी मात्र थी, परन्तु अब उसने युवराजके मातृत्वका भार अपने कन्धोंपर ले लिया है। इससे उसे नया ओहदा प्राप्त हुआ है और अब उसपर अंक महत्वपूर्ण अन्तरदायित्व आ गया है। तबसे चिन्नम्माके कार्योंमें यद्यपि कोअी विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है। किन्तु उसकी कल्पनाओंमें परिवर्तन अवश्य हो गया है। अब उसे अपने पुत्रको दिनमें अंक बार देख आनेका भी अवसर प्राप्त नहीं होता। पल-भरके लिये वह छोटे बाबूसे दूर हो जाती तो वह रोने लगता है। बच्चेका रोना सुनकर चिन्नम्माको जमींदार साहबकी आँखोंके आँसू याद आते हैं। वह मनमें सोचती है कि मैं जमींदार साहबकी इससे अधिक और क्या सहायता कर सकती हूँ कि दिअे हुए अपने वादेकी पूर्तिमें व्यस्त हूँ। जिम्मेदारीके बोझके मारे वह अब सिर भी अूपर नहीं उठा सकती है।

असका छोटा भाभी आज, पूरबकी ओर, बहुत दूर अपने शहर जा रहा है। अब चिन्ममाका क्या कर्तव्य है ? अपने पुत्रके साथ भाभीका अनुकरण करना या जिस जिम्मेदारीको सिरपर लिया है, उसे पूरा करके कृतकृत्य होना ? कोभी भी माता क्या अपने पुत्रको दूर देशोमें भेजकर सन्तोषकी साँस ले सकती है ? अक ओर अपने कलेजेका टुकड़ा, असहाय, अनाश्रय पुत्र ? दूसरी तरफ छोटे बाबू मातृविहीन और जमींदारके प्राणप्रिय पुत्र ! विचारोंके असि द्वन्द्वमें असका मन तड़पने लगा। वह कुछ निश्चय नहीं कर सकी कि वह क्या करे। अपने पुत्रके लिअे तो वही अकमात्र माता है। पर छोटे बाबूको सैकड़ों माताओं मिल सकती हैं। जमींदार साहबके पास तो धन, नौकर—चाकर, वाहन, वस्त्र सब-कुछ हैं; किन्तु अपने गुदड़ीके लालके लिअे ये सब कहाँ ! निश्चय ही उसे अपने पुत्रके साथ जाना चाहिअे। पर मैंने जो वादा किया है, असका क्या होगा। चिन्ममाके हृदयमें विचारोंकी आँधी अुठ रही है। वह असमें तिनकेकी भाँति अधिर-अुधिर अुड़ रही है। सारा ससार उसे अन्धकारमय दिखायी दे रहा है। अस अन्धकारमें जमींदारके नेत्रोंकी आँसूकी वे बूँदें कमल-पत्रोंपरके मोतियों जैसे ओस-कणोंकी तरह चमक रही हैं। चिन्ममा अपनी वेदनाको रोक न सकी। असका कोमल हृदय अिन दारुण समस्याओंके सामने पराजित हो गया। वह तिलमिला अुठी। वह सोचने लगी कि अस संसारमें कितने ही जी रहे हैं और कितने ही मर रहे हैं। मुझे भी अस भव-सागरकी कठिनाअियोंसे टकराते हुअे अक दिन मरना ही होगा। मेरी जिन्दगी ही क्या ? पर छोटे बाबूको तो महाराजाओंके घरोंमें पैदा होनेका सौभाग्य प्राप्त है। अस छोटे बाबूके लिअे मुझे अपने मातृत्वका दान करना ही होगा। त्यागमे जो सुख अेवं सन्तोष प्राप्त होता है, ओह ! मेरी अनुपस्थितिमें छोटे बाबू अक पल-भर तक भी नहीं रह सकेंगे ! छोटे बाबूको कमजोर होते देख जमींदार साहब भी.....अुनके नयनोंके वे आँसू.....! बच्चेकी तरह अुनकी की हुअी याचना.....अिन सब विचारोंके बोझको चिन्ममा सह न सकी। असके पास जो धन था, उसे अपने छोटे भाभीके हाथमें देकर तथा अपने पुत्रकी देखभालका भार उसे सौंपकर वह जमींदारके यहाँ लौट आयी।

ते. ... ५

अस दिनकी रातको चिन्नम्मा अपनी विवशताका स्मरण करते-करते सो गयी। अक लहर—जैसे स्वप्नमें असका पति यह कहते दिखायी दिया—“चिन्नम्मा ! तुम पानीमें रहनेवाली मछली हो, हवामें कितनी देर तक अड सकती ? ” यह दृश्य देखते ही वह अठ बैठी। बगलमें अक मुलायम मखमलकी गद्दीपर छोटा बाबू सो रहा है। अस कोमल हृदयको सुख-दुखका अनुभव नहीं होता है। कैसी विचित्र है यह दुनिया ! “खाड़ीके किनारे चलते समय आरम्भमें भयका अनुभव होता है, पर चलते-चलते साहसका संचार होता है।” चिन्नम्माने मनको शान्त किया और अपने कलेजको मजबूत बनाया।

अस मानसिक आन्दोलनमें ही चिन्नम्माने दिन, सप्ताह, महीने और साल बिताये। जब छोटे बाबूकी अवस्था दस सालकी थी, अस समय चिन्नम्माका भायी रामय्या अपने भानजेको लेकर वापस आया। चिन्नम्माने पुत्रको अपने विचारोके कुछ विरुद्ध ही रखा। वह नटखट बनता जा रहा है। पढाई-लिखाईमें असका मन नहीं लगता। सभ्यतासे कोसों दूर कहाँ चिन्नम्माका पुत्र ! और असका पालित कहाँ ‘छोटे बाबू’ ! अस वक्त अगर वह ‘छोटे बाबू’ को छोड़कर अपने पुत्रके साथ जाती, तो जमींदारका पुत्र भी इसी प्रकार नटखट बना होता। असके वहीं रहनेके कारण ही तो ‘छोटे बाबू’ पढ-लिखकर सभ्य बन सका ? चिन्नम्माको अस बातका घमण्ड था कि भले ही अपना पुत्र आवारा निकले, पर राज-परिवारका लड़का ‘छोटे बाबू’ सुशिक्षित और सभ्य बन गया है।

चिन्नम्माने निश्चय किया कि अबतक असने जो कुछ किया, ठीक ही किया है। क्योंकि चिन्नम्माका भाग्यपर भरोसा था। वह भाग्यवादिनी थी। यद्यपि कर्मसिद्धान्तका ज्ञान उसे न था, फिर भी असका यह विश्वास था कि आदमीका बनना-बिगड़ना उसकी सफलता-असफलता आदि भगवानके हाथमें है। मानव उसकी दृष्टिमें केवल निमित्त मात्र है। उसकी धारणा थी कि असका पुत्र यदि उसके साथ भी रहता तब भी वह आवारा ही निकलता। इसीलिअे भगवानने उसे अस बड़े ओहदेको देकर जमींदारके यहाँ पहुँचाया है और अपने पुत्रका त्याग कराकर छोटे बाबूके साथ रहनेका आदेश दिया है। इससे उसे लोगोमें गौरव प्राप्त हुआ और वह त्यागकी मूर्ति बनी।

अपने पुत्रके वापस लौटनेपर भी चिन्नम्मामें कोअी तबदीली नही हुअी । वह पहलेकी भाँति कभी-कभी रामय्याके हाथमे कुछ धन देकर लड़केकी देखभाल करनेको कहती । कभी-कभी लुक-छिपकर भाअीके पास जाकर और अपने पुत्रको देखकर वापस लौट आती । समय-समयपर वह अपने भाअी रामय्याके हाथमें लड़केकी देखभालके लिअे जो धन दे आती, असे अपने भानजेको न देकर रामय्या ही अड़ाअे जा रहा है--अिसका सन्देह चिन्नम्माको जरूर था । पर वह कर ही क्या सकती है ?

छोटे बाबूकी अुम्र २५ वर्षकी हो गअी है । अभीतक अुसे अिस बातका पता नही होने दिया गया कि अुसकी माता नहीं है । जमीदार साहबका सुव्यवस्थित प्रबन्ध तथा चिन्नम्माकी होशियारीने छोटे बाबूको अपनी माताकी मृत्युकी खबर न होने दी ।

जमीदार साहब रथमें अपने पुत्रको बगलमें बिठाकर प्रति दिन सैर करनेको जाते थे । अेक दिन जमीदारकी अनुपस्थितिमें चिन्नम्मा छोटे बाबूको लेकर सैर करने निकली । कोचवान राजपथपर गाड़ीको हाँकते जा रहा है । चिन्नम्माका यह विचार था कि नगरके बाजारोके गुजरनेपर छोटे बाबूको नगरकी विशेषताअे दिखाअी जा सकती है । गाड़ीको मार्केट होते हुअे सामनेवाली गलीसे गुजरना था, लेकिन किसीकी मृत्यु हो जानेके कारण लाशको ले जानेवाली भीड़ सामने आ धमकी । अतः कोचवानने गाड़ी अेक ओर करके रोक दी । मृत व्यक्ति कोअी धनवान मालूम होता है । लाशके साथ बड़ी भीड़ लगी हुअी है । बीच-बीचमें लाशको ढोनेवाले कन्धे वदल रहे हैं । अुसी भीड़मेसे अेक व्यक्ति, जो अुस मृत व्यक्तिका रिश्तेदार मालूम होता है, रेजगारीकी थैलीसे पैसे निकालकर अर्थीपरसे पैसे फेंकता जा रहा है । अब पहलेकी भीड़से दुगने भिखारी कहीसे आ धमके और फेके हुअे पैसे, आने-दुअन्नी, चवन्नी व अठन्नियोंको चुनने लगे । अेक ही मिनटमें भिखारियोंने सड़कपर गिरे हुअे पैसोको चुनकर अटीमे खांस लिया और फिर दूसरी लड़ाअीके लिअे सन्नद्ध हो गअे ।

गाड़ीमें बैठे हुअे छोटे बाबूको यह घटना अजीब-सी लगी । अुसने आजतक अिस तरहकी विचित्रता नहीं देखी थी । अेकका रुपये-पैसे अुंडेलना

और बाकी सबका बड़ी प्रतीक्षाके साथ अंक दूसरेको ढकेलेते हुए अन्हें चुन लेना, विचित्र बात नहीं तो क्या ? अिस घटनामें छोटे बाबूने विनोदका अनुभव किया । चिन्नम्माको अिस घटनासे आश्चर्य नहीं हुआ, बल्कि अंक दूसरा दृश्य अुसके स्मृति पटलमें अुपस्थित हुआ । जमींदारके यहाँ अंक कोनेमें कभी मछलियोंको फेंका जाता तो कहींसे चीलें आकर अंक पलमें अुन सभी मछलियोंको अुड़ा ले जाती है । यह सब अंक क्षणमें हो जाता है । अुन चीलोमे और अिन भिखारियोंमे क्या अन्तर है ? अिस प्रकार विचार-परम्परामें मग्न चिन्नम्माका छोटे बाबूकी पुकारने स्वप्न भंग किया ।

गाड़ीकी बगलमें खड़े होकर गुदड़ोंसे लिपटा हुआ अंक अर्ध नग्न युवक, जिसकी मुट्ठीमे आने-पैसे है, चिन्नम्माके आँचलको खींचते हुए “अम्माँ !”—कहकर पुकार रहा है । वह कितने समयसे पुकार रहा है—पता नहीं । चिन्नम्माने अुसे देखा और पहचाना । अिसी अवधिमें पीछेवाले अंग-रक्षणने चाबुकसे अिस युवककी पीठपर प्रहार किया और गाड़ी भी द्रुत गतिसे अुसी क्षण आगे बढ़ी—ये दोनों काम अंक साथ हुए ।

“अम्माँ ! कहकर पुकारनेवाला वह युवक कौन है ?”—छोटे बाबूने प्रश्न किया ।

“कोअी भिखमंगा होगा ।”—चिन्नम्माने जवाब दिया । यद्यपि अुसने अैसा कह तो दिया, परन्तु अुसकी अन्तरात्माने अिसका विरोध किया । रह-रहकर अुसके मनको ये विचार कचोटने लगे कि अपनी ही कोखसे पैदा हुए हृदयके टुकड़ेको वह भिखमंगा कह रही है ।

‘छोटे बाबू’ कुछ पूछ रहा है और वह कुछ और जवाब दे रही है । अभी-अभी बीती घटना अुसे धमकी दे रही है । बीती कहानी अुसकी आँखोंके सामने विजलीकी भाँति कौंध गयी ।

गाड़ी कहाँ-कहाँ घूमकर घर लौटी है, समय और स्थलका भान चिन्नम्माको नहीं हुआ । “मेरा ही पुत्र, भिखमंगा !” ये ही बातें अुसके कानोंमें गूँज रही हैं । अुसीके लड़केका चित्र अुसकी आँखोंके सामने घूम रहा है । अुसके जिन्दा रहते हुए अुसीकी आँखोंके सामने अपने पुत्रपर चाबुककी मार ! ओह अिस घृणाको वह कैसे सहन करेगा ?

‘अस अपमानका बदला लेनेको वह कैसे अद्यत न रहेगा ? अस संसाररूपी रंगमंचपर अपने जीवनका मैं जो पार्ट अदा कर रही हूँ, यह और किस प्रकारके दुष्परिणामोंको ला खड़ा कर देगा। हे भगवान ! तू ही रास्ता दिखा।

खिड़कीके सामने खड़ी होकर चिन्ममा अंकटक अनन्त आकाशकी ओर निहार रही है। बगीचेके अंक कोनेसे तीतुबु (अलूक, अल्लू) (यह पक्षी अधिकतर श्मशानमें घूमा करता है। असके दिखाओ देनेपर मृत्युकी आशंका की जाती है।) पक्षी बोलते हुअे अड़ता जा रहा है। अस अमावस्याकी रात्रिमें असे निर्मल आकाश और फूलों जैसे नक्षत्र दिखाओ दे रहे है। अब असकी दृष्टि विषय-परिज्ञानकी ओर दौड़ी। वह सोचने लगी—अस आकाशमें नक्षत्र जैसे दीपकोंको किसने जलाया ? आजन्म गरीबिनको किसने युवराजके मातृत्वका पद प्रदान किया ? मुँह माँगा धन भाओको देते रहनेपर भी अपने पुत्रको भिखारी बनाकर बाजारोंमें कौन घुमा रहा ह ? हम तो केवल नियतिके पुतले मात्र है। अपना पार्ट पृथ्वीके रंगमंचपर अदा करना हमारा कर्तव्य है। असका ध्यान न मुलझनेवाली अलझनकी गुथीसे हटकर छोटे बाबूकी ओर गया। वह पुस्तकको अपनी छातीपर छोड़कर सो रहा है। असकी बगलमें दीपक अपने प्रकाशको फैलाकर अन्धकारको दूर कर रहा है। चिन्ममाने पुस्तक हटाकर छोटे बाबूपर दुपट्टा ओढा दिया और कमरेमें जाकर विचार-सागरमें गोते लगाते-लगाते वह निद्रादेवीकी गोदमें खुराटे लेने लगी।

अतने लम्बे समयके बाद चिन्ममाको फिर स्वप्नमें अपना मृत पति दिखाओ दिया। आज भी वह असी स्वरमें, असे चेतावनी देता हुआ कह रहा है—“चिन्ममा ! मैंने कहा था न ! अड़नेवाली मछलियाँ हवामें थोड़ी देर तक ही अड़ सकती है। फिर अन्हें पानीमें कूदना ही होगा। यह सम्पत्ति और गौरव तुम्हारे लिअे स्थिर नहीं है। तुम्हारे भरोसेपर जिस लड़केको मैंने तुम्हें सौपा था, असे तुमने आवारा बना दिया। अनाथ, अनाश्रित कर दिया। असे भीख माँगने तथा लाशोंपरके वारपर फेके हुअे पैसे अठानेको बाध्य किया ! ”

चिन्नम्मा काँप रही है। वह सोचने लगी कि पराअे स्थानपर काफी समय बितानेके कारण वह अपने स्थानसे, अपनी स्थितिसे बहुत दूर आ पड़ी है। उसे याद आने लगा उस दिनका अपनी आँखों देखा वह दृश्य। ओह ! उसका ध्यान सहसा ही अपने पुत्रके भिखमंगा बनकर गली-गली मारे फिरनेकी दुरवस्थाकी ओर गया। 'अम्मा' कहकर पुकारनेपर उसे चाबुककी मार खानेकी स्थिति अत्यन्त होनेका कारण खुद वही तो है। हाँ, वही है ! उसकी लापरवाही और असावधानीने ही तो पुत्रको गुण्डा, भिखमंगा बननेका अवसर दिया। इसीलिये चिन्नम्मा स्वप्नमे दिखायी देनेवाले अपने पतिसे निवेदन कर रही है कि उसे कर्तव्यसे पराङ्गमुख होनेकी स्थितिसे शीघ्र ही अुबारा जाअे।

हठात किसीके कूदनेकी आहट पाकर चिन्नम्मा अुठ खड़ी हुअी और छोटे बाबूकी तरफ बढ़ती आ रही है। उसे पहचानकर चिन्नम्मा बड़े जोरसे चिल्लाअी—“गोपी ! ” उसकी आवाज चारों तरफ गूँज अुठी। ‘छोटे बाबू’ जग गअे और पहरेदारोंने गोपीको पकड़ लिया। अस दृश्यको देखकर चिन्नम्मा अेक अिच भी आगे नहीं बढ़ सकी। वह अेकदम भौचक-सी रह गअी और पागलकी तरह अस्फुट स्वरमें गुनगुनाने लगी। कितने समयके बाद उसने अपने पुत्रको नाम लेकर पुकारा था ! अचानक उसके पतिका चेहरा उसकी आँखोंके सामने चमकते देख वह काँप अुठी।

पहरेदार गोपीको नीचे ले गअे। वह चिल्लाता जा रहा है। उसमें शायद प्रतिशोधकी भावना आग अुगलती होगी। परन्तु वह मूक है। अधर छोटे बाबू पूछ रहा है कि—“अिस भिखमंगेको तो हमने बाजारमें कही देखा था। यह मेरे कमरेमें क्यों आया है ?” अितने ही में अेक नअे पहरेदारने कह दिया कि यह भिखमंगा नहीं, बल्कि चिन्नम्माका लड़का है। छोटे बाबूको विश्वास नहीं हुआ। उसने उस नअे पहरेदारके गालपर तीन-चार चपत जमा दिअे और असली बातको जाननेके लिये उसने चिन्नम्माके कमरेमें प्रवेश किया।

चिन्नम्मा अेकटक देख रही है कि छोटे बाबू उससे कुछ पूछनेके लिये अुसीकी ओर आ रहे हैं, किन्तु यह नहीं तय कर पा रही है कि वह क्या जवाब देगी ? सबेरा होते-न-होते जमीदार साहब भी आ जाअेंगे। अुन्हें वह क्या अुत्तर देगी ? अुनसे अुसने वादा किया था। अेक ओर उसका पति

अुसे ताना मार रहा है। दूसरी ओर जमींदार साहबके आनेका समय निकट होता आ रहा है। अधर अुचित समाधानके लिये 'छोटे बाबू' दरवाजा खटखटा रहे हैं। अधर चिन्तम्माके किये हुअे अपराधका बदला लेनेके लिये आया हुआ अुसका पुत्र 'गोपी' सभी अुसपर अेक-अेक करके हमला कर रहे हैं। वह आगे और अिस हवामें अुड़ नहीं सकती है। अिन फिसलनेवाली सीढ़ियोंपर वह चढ़ भी नहीं सकती है।

नक्षत्रोंको निहारनेवाली अिस तिमंजले मकानके अूपरसे अुस अन्धकारमें किसी बोझिल वस्तुके नीचे गिरनेसे " धम्म " की आवाज हुअी। जमींदार साहबके यहाँके सभी लोग चौंक अुठे। अपनी कल्पनाके द्वारा बनाअे हुअे महलोंको टूटते हुअे देख चिन्तम्माने अपने दोनों नेत्रोंको खोलकर जगतकी ओर निहारा। अुसकी खुली हुअी आँखें खुली-सी ही रह गयीं।

दूसरे दिन बंगलेमें लौटे हुअे जमींदार साहबने सारी कहानी सुन ली और अुनके मुँहसे अचानक निकल गया--" बेचारीकी क्या दशा! "

* * *

७.

प्रणय - कलह

—श्री मुनिमानिक्यम् नरसिंहराव

साहित्य-समिति द्वारा प्रकाशमें आनेवालोंमेंसे आप भी अंक हैं। पारिवारिक जीवनके सुख-दुखोंका अनुभवकर उसके चिरन्तन आनन्दको कहा-



नियोंके रूपमें प्रदान करनेके लिये आपने जिस गृहणीकी अपूर्व सृष्टि की, वह है—
“कांतम्”। “कांतम्” नामक पात्र तेलुगु-पाठकोंके लिये सुपरिचित हो गया है। मध्यवित्त परिवारके गार्हस्थ जीवनकी मधुर घटनाओंको आपने अपनी कहानियोंमें मंजुल शैलीमें चित्रित किया है। आपकी विशिष्टता है—सुकोमल हास्य। आपके सात-आठ कहानी-संग्रह

प्रकाशित हो चुके हैं। “अुपाध्यायुडु”, “तिरुमाळिग” और “वक्कुरेखा” इनके अपन्यास हैं। ये हास्य-लेखकके रूपमें विशेष विख्यात हैं। आपको “कांतम् कथल” (कहानी-संग्रह) पर “तेलुगु भाषा समिति” का पुरस्कार मिला है।

आप बी. अ. एल. टी. हैं। आपने बहुत समय अध्यापन-कार्यमें बिताया, किन्तु आजकल आप आकाशवाणी, हैदराबादमें काम कर रहे हैं।

* * *

प्रणय - कलह

मेरी स्त्री जबसे ससुरालमें आयी, तबसे अभी तक अकेल बार भी अउसने प्रणय-कलहका अभिनय नहीं किया। अिस 'प्रणय-कलह' शब्दको मैंने काव्योंमें पढ़ा और अनेक मुखोंसे सुना। अिसलिये मुझे अपनी पत्नीमें 'प्रणय-कोप' पैदा करनेकी अुत्सुकता हुअी। समय-समयपर मैंने कहा भी—“क्यों कांतम् ! तुमने कभी प्रणय-कोपका अभिनय नहीं किया ?” तो वह जवाब देती—“समय आने दीजिये। अपने आप हो जायेगा।” अिस तरह दिन बीतते गये। हमने कभी प्रोग्राम बनाकर शास्त्रोक्त पद्धतिसे प्रणय-कलह नहीं किया।

लोगोंको कहते सुना, लेकिन प्रणय-कलह कैसे किया जाये, मुझे भी नहीं मालूम। अपनी पत्नीको नायिका मानकर प्रणय-कलह करनेको कहूँ, तो बेचारी अुसे कैसे कर पायेगी ? अिसलिये वात्स्यायन कामसूत्रको मँगाकर अुसके 'प्रणय-कलह' विधानका मैंने आद्यन्त अध्ययन किया। यह ऐसा-वैसा विषय नहीं है, सत्यनारायण व्रतकी जैसी तैयारीका काम है अिसमें।

नायकको भोजनके अपरान्त शुक और सारिकासे बुलवाना है। मेरे मुहल्लेके चतुर्दिक खाली जमीन होनेके कारण मील, डेढ़ मीलकी दूरीमें कहीं तोते और मैना दिखायी नहीं देते।

शास्त्रकारों द्वारा कहे गये नियमोंका अल्लघन करनेको मेरा मन नहीं कहता। चाहे कितने भी कठिन कार्य क्यों न हों, शास्त्र-विधिके अनुसार प्रणय-कलहका निर्वाह करनेका मैंने निश्चय किया। हम तो बड़े होते जा रहे हैं, आगे फिर कौन यह मोल लेगा? असलिये भोजनके उपरान्त सिरपर तौलिया डाले कड़ी धूपमें अपनी स्त्रीके मना करनेपर भी मैं चार मीलकी दूरीपर स्थित बगीचेमें चला गया। वहाँ धूम-फिरकर बड़े प्रयासके बाद शुक और सारिकाओंको बुलवाया और शाम तक घर पहुँच गया।

असके बादके कार्यक्रमके बारेमें विचार किया—‘तदन्ते... संमर्जन-पुष्प प्रकरम्,’ शयन रचना.....अनकी तैयारी होनी है।

अनका क्रमशः प्रबन्ध करता आया हूँ। उसमें शयनगृहको संचारित सुरभि धूपवाला जो नियम है, उसके पालन करनेके निमित्त दो पैसेकी अगरबत्ती खरीद लाया हूँ।

सन्ध्याके भोजनके समय अिस प्रणय-कलह विधानको अुसे समझाकर अिस कार्यक्रमको सफल बनानेका विचार किया, लेकिन “प्रत्त” अर्थात् विवाहिता स्त्रीको काम-शास्त्र ग्रहणका अधिकार नहीं है। अैसा सोचकर चुप रहा।

भोजनके समय कान्तम्ने पूछा भी—“अैसी क्या बात है कि भोजनके समय भी आप चिन्तामग्न हैं?” किन्तु कान्तम्के अिस प्रश्नका मैंने कोअी अुत्तर नहीं दिया।

अब शयन-रचना करनी है। पुस्तक खोल मेजपर रखकर अेक-अेक विषयको ध्यानसे पढ़ना और अुसी तरह प्रबन्ध करना—यही कार्यक्रम है।

कामसूत्रमें कहा गया है, “शयन-मन्दिर खट्वाश्रय-प्रतिपादिका स्तरणतूलिका आदिसे अलंकृत रहना चाहिये।” अिस वाक्यमें मुझे अेक शब्दका अर्थ नहीं मालूम हुआ। पास कोअी संस्कृतका विद्वान या विद्यार्थी भी नहीं था। अब क्या किया जा सकता था, अतः अुसको छोड़ दिया।

हंसतूलिकातल्पपर शयन रचना हो। अपने हंसतूलिकातल्प—याने साधारण चारपाअीपर सफेद चादर बिछा दी। आगे लिखा है—“शिरोभागे कूर्चस्थानम्” पहले मुझे अुसका अर्थ मालूम नहीं हुआ। ‘कूर्च’ शब्द मैंने

शायद कही सुना है। मेरे मनमे आया प्रणय-कलहमें “कूर्च” किसलिअे ? फिर नीचे लिखी टीका देखी तो “कूर्चस्थानम्” माने कुर्सी लिखा है। भले शास्त्रकारने मुझे बचाया। ठीक हमारे हसतूलिकातलपके शिरोभागमें ही बैठकी कुर्सी है। अब शयन रचना पूर्ण हो गयी।

शयन-मन्दिरकी सजावट असिके बादका कार्यक्रम है। शयन-गृहमें अेक वेदिका हो। सम्भवतः अुस युगमें टेबुल न रही होगी, अिसीलिये वेदिका कहा है। हमें क्या चिन्ता ? कमरेमें बढ़िया मेज है।

“नीलोत्पलावगुण्ठित वीणचित्रफलक, पुस्तकम्” और फूलकी मालाअें हो। वीणाके बदले मेरी पुत्रीका फिडेल है। चित्रफलक भले ही न हो, चित्र तो है। “पुस्तकम्” कहा है। अेक क्या सैकड़ों हैं कम्पोजीशन पुस्तकोको मिलाकर।

अेक आध घण्टेमें कान्तम् सब कुछ ठीक कर देनेवाली है। मैंने कुर्सीपर बैठकर प्रणय-कलह विधान फिर अेक बार पढ़ा। अुसमेंसे मुख्य विषयोंको अनुक्रमणिकाके रूपसे कागजपर अंकित किया।

प्रणय-कलहका प्रथम अध्याय या दृश्य है प्रेयसीको क्रुद्ध करना किसी सौतका नामोल्लेखन—सौतके नामका अुच्चारण करे—सकेत रूपसे सौतको लक्ष्यकर प्रशंसापूर्ण संभाषण या अुस सौतको ताम्बूल आदिका भोजना जिसे प्रेयसी सहन न कर सके, ये ही प्रणय-कलहके कारण हैं।

क्रुद्ध होनेपर नायिका द्वारा “वाचा” (वचनों द्वारा) कार्यतः (कार्यों द्वारा) कलह पैदा करना है। सिरके केशोंको फैलाना, पलंगसे अुठकर पृथ्वी-पर लेटना, धारण किअे अुठे पुष्पों, मालिकाओं, जेवरोंको अुतार देना अित्यादिको द्वितीय सूत्र बतलाता है। यह बड़ा कठिन कार्य तो नहीं है, क्रुद्ध होना है। बस, अिससे सहस्र गुना मूल्यवान काम कर देती है मेरी कान्तम् !

और तृतीय दृश्यमें “अनुनय, शयनारोहण पादताडनम्, अनन्तरम् अश्रुकरणम्, द्वारदेशगमनम्। युक्तिके साथ नयमानम्, प्रसन्नता आलिंगनम्, अन्तमें संयोगम्।” ये ही विधियाँ हैं। अिन सबमें कठिन कार्य प्रथम दृश्यमें प्रणय-कलहके लिअे कारण पैदा करना ही है। राजा-महाराजाओंके लिअे अष्ट भार्याअें या अष्टादश भार्याअें होती हैं। अिसलिअे सौतकी प्रशंसा

करना सुलभ तथा संभव है। अंक ही नारीके साथ गृहस्थीको घसीटनेवाले अंक साधारण व्यक्तिके लिये यह कैसे साध्य होगा? यदि असा नहीं है तो किसी परनारीकी प्रशंसा करके कलहका अंकुर बोया जा सकता है। अुसके बाद मेरी स्त्रीके करनेवाले अपद्रव या हंगामाके लिये वह सूत्रकार कहाँ तक जिम्मेदार हो सकता है?

यह अंक बड़ी समस्या हो गयी है। अिसका हल क्या हो, यह मैं सोच ही रहा था कि अितनेमें चूड़ियोंकी झनझनाट सुनायी दी। मेरा दिल अेकदम बैठ गया। अंक हाथमे लिये हुअे रजतपात्रसे पूरित और दूसरे हाथकी लड्डूभरी थाली लिये कान्तम् आ ही गयी।

कुछ लोग प्रेयसीको रमा रम्याकार, चतुरवचनी, चारुचिकुर, विमूल्या-लंकार और न जाने और क्या-क्या कहकर पुकारते हैं। परन्तु मेरी स्त्री साधारण हल्के रंगकी साड़ी पहने ही आयी। अुसके अुज्ज्वल नयन नहीं, मामूली आँखें हैं। झुर्रियोंसे पूर्ण कपोल। फिर भी विरक्त न होकर प्रणय-कलह प्रारम्भ करनेका निश्चय किया।

अुसके आते ही अुसके समक्ष जाकर कामसूत्रके अनुसार कहना होता है—
“प्रेयसी! तुम्हारे लिये तड़प रहा हूँ। मेरी स्थिति जानते हुअे तुमने देरी क्यों की?” मैंने भी अुसी प्रकार कहना शुरू किया।

कान्तम्को अुस दिनका कार्यक्रम अभीतक नहीं मालूम था। अिसलिये अुसने कहा—“क्यों, क्या हो गया है? परिहास चेष्टाओं न कीजिये। कोयी सुनेगा तो हँसेगा।”

शामको शुक और सारिकाओंको बुलवाया गया। कामसूत्रमें वर्णित प्रेयसीकी विधियोंका स्मरण कराया गया। अुसने कहा—“शुक क्या है और सारिका क्या है? आपके अिन अनर्गल प्रलापोंका अर्थ मुझे नहीं मालूम।”

“कुछ नहीं कान्तम्! अितनी विकल होकर क्या देख रही हो? मैं मामूली आदमी ही हूँ। यों ही हँसी-मजाकमें कह रहा था।”

“अपने बच्चे ही हम लोगोंके लिये तोते और मैना हैं। अभीतक मैं अुनसे बोलती ही रही।”

“यहाँ आओ, बैठो।”

वह मेरी शैयापर ही बैठ गयी। अब प्रणय-कलहके कारणकी कल्पना करनी थी। सारी कठिनायी अुसीमे थी। सौत या परस्त्रीसे परिपयकी प्रशंसा करूँ तो समझ लीजिये, गृहस्थी डूब गयी। इस झंझटसे बचनेके लिये प्रणय-कलहका दूसरा कारण बना लिया गया।

“कान्तम् ?”

“अँ.....।”

“हमारी सीताको देखनेके लिये.....”

“सीता है कौन ?”

“सीताको नहीं जानती ? मेरी फुफेरी बहन।”*

“हाँ.....तो ?”

“सीताको देखनेके लिये कल जा रहा हूँ।”

“जाजिये, इसमें मेरी आज्ञाकी क्या आवश्यकता थी !”

“आज्ञाके लिये नहीं, यों ही कह रहा हूँ। सीता बहुत रूपवती है। मैंने उसके साथ विवाह भी करना चाहा था। लेकिन भाग्यने साथ न दिया। मालूम होता है कि भगवानकी भी अच्छा नहीं थी।”

“अब क्या हुआ ? चार बच्चों सहित आयेगी। प्रयत्न तो कीजिये।”

“मेरा कहना यह नहीं। यह तो तुम मानती हो न कि वह अत्यन्त सुन्दर है ?”

“क्यो नहीं ! वह तो तारिका है। आप सब अेक ही वंशमें पैदा हो गये हैं न ? अेक ही श्रेणीके हैं।”

मेरे खयालमें आया, सीताकी सुन्दरताके प्रशंसापूर्ण वाक्य कहकर कान्तम्को बदसूरत कहकर व्यंग्य करूँ तो अुसे आवश्य क्रोध आ जायेगा। तब अविच्छिन्न रूपसे प्रणय-कलह चल सकेगा।

*आन्ध्रमें फुफेरी बहनके साथ विवाह होता है। किन्तु अब यह प्रथा हटती जा रही है।

“वह (सीता) चार बच्चोंकी माता है। फिर भी उसका सौन्दर्य जरा भी कम नहीं हुआ। कपोल पिचके नहीं। अुरोज.....”

“बस, बस, अब बन्द कीजिए।”

“अुसके गालोकी चिकनायी.....अुसके केश.....”

“ये कैसी बातें हैं? परायी स्त्रीके बारेमें ऐसी बातें सुनते मेरा हृदय जल.....”

“आया है क्रोध?

“हाँ.....”

“तो जल्दी अुठकर जमीनपर धीरेसे गिर जाओ। प्रणय-कलह प्रारम्भ करेंगे।” अपना संकल्पित कार्यक्रम निष्कण्टक पूर्ण होनेकी आशासे सन्तोषके आवेगमें मैंने कहा।

“आप पागल तो नहीं हुअे? ढकेलते क्यों हैं? नीचे गिर जानेको मुझे क्या पड़ी है?”—अुसने भावपूर्ण चमकनेवाले नेत्रोंसे कहा। मेरा आशय यह नहीं है। प्रणय-कोपके अुत्पन्न होनेके कारण सत्यभामा वरुथिनी, प्रभावती आदि नायिकाओं नीचे गिर गयी थी। तुम जमीनपर नहीं गिरोगी तो प्रणय-कलह कैसे होगा?”

“न हो, तो न सही। अब कौन-सा अुपद्रव मचनेवाला है? पागलकी चेष्टाओं! धक्के देकर गिराते क्यों हैं? आज....आपको कुछ.....ठहरिये, मैं अपने बिस्तरपर जाती हूँ।”

“जाओ तो सही.....”

“आज आपको क्या हो गया है?.....अुन लाट साहबोकी (फिरंगियोकी) दोस्ती कर रहे हैं? क्लबमें बहुत देर तक रह रहे हैं। मेरी बदनसीबी.....”—कहती वह दूसरे बिस्तरपर जाकर लेट गयी।

अबतक तो मेरा प्रणय-कलह सफलतापूर्वक चला। द्वितीय दृश्यमें नायिकाको विवृद्ध क्रोधमें लाकर मालिकाओं तथा अन्य अलंकारोको देना होता है। मैंने सोचा, क्रोधित हो गयी है, वह कार्य भी कर देगी। लेकिन यह क्या, वह गम्भीर हो, रूठकर चुपचाप लेट गयी है। अुसकी वेणीमें गुंथे

हुअे गुलाबके फूलने मुझे देख मानो अपने नेत्र लाल-लालकर लिअे है। मैंने ही जाकर अुस फूलके टुकड़े-टुकड़े करके बिखेर दिया। अिसके बाद कान्तम्के पार्श्वमें बैठकर पुस्तककी बातोंका पठन किया—“कान्तम् ! देखो, मेरी गलतीको माफ करो। तुम्ही रूपवती हो। सन्तानवती होनेपर भी तुम्हारे कपोलोंपरकी चिकनायी कम नहीं हुअी। तुम्हारे सिरके बाल भी अभी अधिक सफेद नहीं हुअे है। हे शरत्कालके पूर्ण चन्द्रमाके समान मुखवाली सुन्दरी ! हे तरुणवयविलासिनी ! अुठो। शयनारोहण करो।” कान्तम् मेरी तरफ पागलकी नाओं देखने लगी। वह भयकम्पित जैसी मुझे मालूम हुअी। मैंने कहा—“कान्तम् ! तुम्हें कोअी भय नहीं, मेरे बिस्तरपर आ जाओ।”

“यह सब क्या है आपका व्यवहार ? मैंने किया ही क्या था ? आपने ही तो अभी धक्का देकर मुझे गिरा दिया और आप ही माफी माँग रहे है ? ”

“वैसा मैं कभी नहीं करूँगा। आओ, मेरी भूलपर ध्यान न देकर क्षमा करो।”

“मैं क्षमा किसके लिअे करूँ ? यह सब क्या है ? चलिअे।”

“ठहरो ठहरो अुठो मत। प्रणय-कलह क्रमानुसार पूर्ण हो जाअे। अभी तुम्हें अेक काम करना होगा।”

“क्या है वह ? ”

“मेरे किअे हुअे अपराधोंका स्मरणकर मेरी मध्य पीठपर कही धीरेसे अेक लात मारो। अिससे प्रणय-कलहका पात्र परिपक्व होने लगेगा। अुसके बादमें मेरा गिड़गिड़ांना, तुम्हारा कुछ समय तक अनुकरण करना, तदुपरान्त शयनारोहण—यही कार्यक्रम बाकी है।

“यह सब काम अभी ही हो जाना चाहिअे ? ”

“नहीं तो प्रणय-कलह पूर्ण नहीं होगा।”

“अैसा होना ही चाहिअे, यह कहाँ लिखा है।”

“ग्रन्थमें देखो, ये ही कामसूत्र है। अिसीलिअे मैं यह सारी तकलीफ अुठा रहा हूँ। “अूँ”—कहते हुअे धीरेसे अेक ठोकर मारी।”

“बात यह है, महाराज ! मैं दुनियाकी बात अधिक नहीं जानती । तभीसे यह सोचकर मैं बहुत भयभीत हो गयी हूँ कि आपका दिमाग खराब हो गया है । खराब पुस्तकें पढ़कर मुझे रुला रहे हैं । ये सब असह्य कार्य करनेको कहते हैं । ”

“तो तुम्हारी राय क्या है ? प्रणय-कलह आधा तो समाप्त हो गया गया है । मध्यमें है । अब क्या इसमें विघ्न करोगी ? ”— गद्गद् कण्ठसे मैंने कहा ।

“प्रणय-कलह चलाना है ! चलाऊंगी, अच्छी तरह चलाऊंगी ! अधर आओ तो । ”

मुझे अपने पास बुलाकर उसने शिक्षक द्वारा किसी नटखट विद्यार्थीको दण्ड देनेकी मुद्रामें मेरा कान पकड़कर अँठते हुअे कहा—“फिर कभी अँसा नाटक रचेंगे ? ”

“ओह ! ”

“कहिअे, आगे कभी अँसा अभिनय नहीं करेंगे ? क्यों ? ”

“ओह ! ”

“फिर कभी नहीं करेंगे न ? ”

“अँहूँ अँहूँ छोड़ दो । ”

* * *

मृग-जल

—श्री के. सभा

तरुण पीढ़ीके कहानीकारोंमें आपका नाम आदरके साथ लिया जाता है। अध्यापकका काम करते हुए आपने देहाती जीवनका पूर्ण अनुभव



प्राप्त किया। किसान और अनुकी समस्याओंपर आपने सैकड़ों कहानियाँ लिखी हैं। तेलुगु लोक-साहित्यके क्षेत्रमें आपने प्रशंसनीय कार्य किया है। आपने तेलुगु लोक-गीतोंका बहुत बड़ा संग्रह तैयार किया है और उन्हें पत्र-पत्रिकाओं तथा रेडियो द्वारा जनताके सामने रख रहे हैं। आपने यह सारा संग्रह देहातीमें घूमकर अन्हींके मुंहसे सुनकर किया है। आपके अपन्यासोंमें 'भिक्षुकि' और 'देहांतकुडु' मुख्य हैं।

बालकोपयोगी अपन्यासोंमें 'चन्द्रम्', 'सूर्यम्' और 'राधाकृष्ण' उल्लेखनीय हैं। निम्न वर्गके लोगोंका जीवन आपकी रचनाओंमें पढ़ते ही बनता है। 'नागेलु', 'वाहिनी' और 'प्रजा राज्यम्' नामक पत्रोंका आपने कुछ समय तक सम्पादन किया। अिस समय आप साप्ताहिक 'आन्ध्र प्रभा' में कार्य कर रहे हैं।

* * *

मृग - जल

सुदर्शन बड़ा सहृदय, अुच्च आदर्शोवाला अवं विश्व भ्रातृत्वका आकांक्षी था। आरंभमें अुसने जीवन-पर्यन्त ब्रह्मचर्यका पालन करना चाहा, परन्तु परिस्थितियोंने अुसका साथ नहीं दिया। बन्धु-मित्र, माता-पिता—सभीकी अिच्छा थी कि सुदर्शन विवाहके सूत्रमें बँध जाअे। अुनका यह चाहना सहज अेवम् स्वाभाविक भी था। असके अलावा वांछित वधूके साथ विवाहकी स्वीकृति देना बड़ी विशेषता है।

कहावत प्रचलित है कि मित्रता, शत्रुता व रिस्तेदारीके लिअे समानता-का होना बहुत ही आवश्यक है। सुदर्शनके विवाहमें यह समानता सोलहों आने ठीक बैठी थी। सावित्री बहुत अंशोंमें सुदर्शनके लिअे योग्य पत्नी थी। सुदर्शनके भावोंमें और सावित्रीकी कल्पनाओंमें विशेष अन्तर नहीं था। यदि था भी तो बहुत ही कम।

सावित्री अपने विवाहके बादसे अपनेको सुदर्शनकी विचार-धाराके अनुकूल बनानेका भरसक प्रयत्न करती आ रही थी। वह सदाचारोंका पालन करनेवाली थी, परन्तु कुछ विषयोंमें वह स्त्रीत्वसे भिन्न दिखायी देती थी। कालेजमें पढ़ते समय अुसके हृदयमें यह भावना बद्धमूल हो गयी थी। दशहरेके अुत्सवोंके अवसरोपेर कालेजमें वैज्ञानिक समारोह हुअे थे। अुनमें अुस समय अनेक विद्यार्थियोंके व्याख्यान भी हुअे थे। अुनमें “स्त्री-स्वातंत्र्य”

भी अंक चर्चाका विषय था। उस संदर्भमें सावित्रीके भाषणके बाद जीवानंदमूने अपने भाषणमें स्त्रियोंकी बड़ी अवहेलना की। महिलाओं बच्चोंको जन्म न देकर क्या पुरुषोंसे जननेको कहेंगी? यह प्रश्नकर वह अपस्थित व्यक्तियोंकी शाबाशी लेकर बैठ गया था। उस दिनसे सावित्रीके हृदयमें सन्तानके प्रति अंक प्रकारकी घृणाकी भावना पैदा हो गयी थी। बच्चोंकी मल-शुद्धि करनेवाली स्त्रियोंको देखनेपर वह नाक-भौं सिकोड़ती।

घरमें भी भाओके बच्चे थे। अन्हें भी वह सदा अपने पास नहीं आने देती। यदि कभी उन बच्चोंको अपने हाथोंमें लेती तो गोदमें तौलिया बिछाकर दो मिनट बिठाती फिर वापस कर देती।

पाँच-छह बच्चोंकी माताको देखनेपर सावित्रीका मन विचलित हो उठता। उन बच्चोंसे झेलनेवाली यातनाओंके प्रति वह सहानुभूति दिखाती। विवाहके पहले वह सदा विचित्र भावनाओंकी भँवरोंमें लीन रहा करती। वह यही सोचा करती कि विवाह करना ही नहीं चाहिये और यदि करना ही पड़े तो सन्तान न हों। आदि. . . . आदि।

वह सुदर्शनसे बहुत कम मिला करती थी। सावित्रीके मनमें सुदर्शनके प्रति पहले आदरका भाव जगा और वही बादको प्रणय-रूपमें परिणत हुआ। अन्तमें दोनोंका विवाह होकर ही रहा।

सुदर्शन हमेशा संसारका सुधार करना चाहता था। उसे अपने अतीत विषयोंके बारेमें चिन्ता करनेकी धुन सवार हो गयी थी। सावित्री उसकी कल्पनाओंको और निकट खींचती। दोनोंकी भावनाओं अँची थी, जिसमें कोओ सन्देह नहीं।

अनु दोनोंको अधिक आकर्षित कर सकनेवाली समस्या थी सन्तान-निरोध। देशमें यह समस्या अधिक सोचनेको बाध्य कर रही थी। जनसंख्या दिन-प्रति-दिन सीमासे ज्यादा बढ़ती जा रही थी। खाद्योत्पत्ति कम होती जा रही थी। बड़े-बड़े अर्थशास्त्रवेत्ता सन्तान-निरोधको कानून द्वारा अमल करनेकी सलाह व सूचनाओं दे रहे थे। ये भावनाओं जब सुदर्शनके दिमागमें आतीं, तो वह चिन्तित होकर बैठ जाता था। सावित्री उसपर व्याख्यान देने लगती थी।

अिन दोनोंकी चर्चाओंको तमाशेकी भाँति सुननेवाली सुदर्शनकी माताकी अिच्छा क्या है, समझमें नहीं आती। अुसे पोता चाहिअे। भाग्यवान लोग पुत्रके पोतेको भी देख पाते हैं। अिसलिअे विवाहके समय “शीघ्र-मेव सीमंत कल्याण प्राप्तिरस्कु” कहकर बड़े लोग आशीषोंकी वर्षा करते हैं। विवाहके अेक वर्ष बाद सीमंत विवाहका होना भाग्य माना जाता है। अिस आचारको बहुतसे लोगोंने छोड भी दिया हो, परन्तु कही-कहीं यह माना ही जाता है। सासने अपनी बहूको गर्भवती बनानेके लिअे कुल देवताओंकी पूजा की थी। अुसका विचार था कि परिवारमें सीमंत, नामकरण, केश-मुँडन, अपनयन आदि संस्कार क्रमशः होते रहें तो जीवनमें आनन्द रहेगा।

सावित्री तो ठीक अिसके विरुद्ध जीवन बिताना चाहती थी, सुदर्शनने भी मान लिया। दोनोंने अेक प्रसिद्ध डाक्टरकी सलाह लेकर अपनी अिच्छा पूरी कर ली। अिस विषयको गुप्त रखनेका अुन दोनोंने बहुत प्रयत्न किया। अन्तमें अुन्हें कहना ही पड़ा।

जब बूढ़ीको ये समाचार मालूम हुअे तो वह चौक पड़ी। अुसने स्वप्नमें भी नहीं सोचा था कि अुसके परिवारमें अिस प्रकारकी दुर्घटना हो जाअेगी। वह तो यह मान बैठी थी कि अीश्वर-प्रदत्त सहज वरदानको ठुकराना महान पाप है। स्त्रीके सहज सिद्ध भाग्यको ठोकर मारना कठोर कृत्य है। बूढ़ीने कहा “आपत्तिसे पहले ही सन्तानकी गर्भमें ही बैठे हुअे वृक्षकी शाखाकी स्वयं हत्या कर देना, अपने वश-वृक्षको जड़ सहित निकालकर नष्ट करने के समान महान अपराध है।” सावित्रीने अिस कथनका कोअी अुत्तर नहीं दिया। सुदर्शन भी चुपचाप बैठा रहा।

अुस दिनसे बूढ़ीने चारपाअी पकड़ ली। वह अपने पोतेको न तो देख ही सकेगी और न अब अिस जीवनमें वह अुसका चुम्बन ही कर पाअेगी। अुसकी अिन स्पर्णिम कपलनाओपर पानी फिर गया है। अुसे अब जीवन निस्सार मालूम होने लगा था।

जीवानंदम् सुदर्शनके परिचितोंमेंसे अेक है। अुसे जब यह समाचार मिला, तो वह चकित रह गया। सुदर्शनने अपनी करनीका समर्थन करनेका प्रयत्न किया। परन्तु जीवानंदम् यों ही माननेवाला नहीं था। अुसने कहा—

“संतानवान और संतानहीन व्यक्तिके बीचमें खात्री जितना अंतर है। गौतम बुद्धकी भूतदया और गांधीजीके करुणा-स्रोतके लिअे अनुमें पितृ हृदयका होना ही मूल कारण है।”

“संतानवान पितामें सहन-शक्ति होती है। उसके वक्षपर छोटे-छोटे पैरोंका नृत्य होता है। वह अपना मांस देकर कलेजेकी सृष्टि करता है, अपनी आहुति देकर बच्चोंका पालन-पोषण करता है। अतः वह सहज रूपसे शिवि तथा कर्ण है और जन्मसे ही पुरुषवा.।”

“यही नहीं, बल्कि इससे विरुद्ध संतानहीन मातामें ऐसा माना जाता है कि उसके नेत्रोंमें ठंडक नहीं होती। उसके हृदयमें अनुराग नहीं होता। उससे प्राणामृतकी धारा फूट निकले, ऐसा अवकाश ही उसे कहाँ? उसे ऐसा लगने लगता है कि यदि मधुर अवेम् अति मधुरमयी माताके स्थानको न प्राप्त कर सकी, तो इस संसारमें उसका जन्म ही क्यों हुआ? ”—ऐसा कहते-कहते जीवानंदम् कुपित होकर वहाँसे चला गया।

असका लंबा-चौड़ा भाषण सुदर्शनके लिअे असहनीय था। सावित्रीको भी क्रोध आया, परन्तु दोनों चुप ही रह गये।

बूढ़ी कराहती जा रही था। उसकी दयनीय दशा देख सुदर्शनका हृदय टूक-टूक होता जा रहा था। सावित्री उसकी सेवा-शुश्रूषामें लगी हुअी थी। सावित्रीकी सास तो अपने पोते-पोतियोंका स्वप्न देख रही थी, उसकी पीठपर पोते झूले झूल रहे हैं।

असे रातमें निद्रा नहीं आती। दोपहरके समय थोड़ी देर सो जाती है। स्वप्न देख रही है—वह किसी तालाबके किनारेपर खड़ी है। पाँच सालकी बच्ची, जो अपनी बहूकी प्रतिछाया मालूम हो रही है—असकी अँगली थामे खींचे लिअे जा रही है। खिल-खिलाकर वह हँस पड़ती है। बीच-बीचमें वह अस बूढ़ीकी आँखोंमें देखती है।

वह छोटी लड़की अस बूढ़ीको तालाबके किनारे ले जाकर बिठाती है। वह जलमें ध्यानपूर्वक देख रही है। असका मुखमंडल जलमें दर्पणकी तरह प्रतिबिंबित हो रहा है। वह न मालूम क्यों, हठात पानीमें कूद पड़ी। बूढ़ी जोरसे चिल्लाअी। सावित्रीने उसे पकड़ना चाहा। सुदर्शन भी

दौड़ता आया। बूढ़ी कुछ बोली नहीं और तालाबमें गिरी हुअी लडकीको लाने चली गयी।

बेचारे! मुदर्शनका सिर झुक गया। सावित्री अपने अतिशय दुःखको न रोक सकी। वह जोर-जोरसे रो पड़ी।

माता तो चली गयी। अन्हें बाल-बच्चे भी नहीं। पति-पत्नी दोनों रह गये हैं। अन्हें कोअी अज्ञात अभाव खटकने लगा है। मुदर्शन प्रति दिन सोचता रहा है। असे यह सोचकर अत्यंत दुख होता है कि अुसने कोअी बड़ा अपराध किया है, वह मानो अकषम्य है।

वास्तवमें सन्तान-निरोधके अमल करनेकी अिच्छा बहुतसे लोग प्रकट कर रहे हैं। पत्र-पत्रिकाओंमें भी अिस विषयके अनेक लेख छप रहे हैं। अिसी आशयको लेकर मुदर्शनने संतान-निरोधका अमल किया, परिणामस्वरूप अुसकी माता चली गयी।

आत्मा कहता है—प्रेम क्या है? वह कहाँसे अुत्पन्न होता है? मातृत्वसे ही अुसका जन्म होता है। छोटे-छोटे शिशुओंकी नेत्र-कांतियाँ, अिनके पतले ओठोंकी रागारुणिमा, ज्योत्स्नाकी कांतियोंसी बिखरनेवाली मुस्कुराहटें, हृदयकी आकर्षित कलियाँ—ये सब प्रेमामृतसे पलनेवाली सरल रेखाएँ हैं।

सावित्रीने अुसका ध्यान-भंग करते हुअे कहा—“सदा अिस प्रकार चिता करते रहनेसे स्वास्थ्य खराब हो जायेगा।” मुदर्शनने सावित्रीकी ओर देखा। अुसकी आत्मा जता रही है कि सावित्रीमें स्त्रीत्व नहीं है, यौवन हो सकता है—परन्तु अुसमें स्वभावजनित प्रेमामृत नहीं है।

सामने अेक गाय जा रही है। अुसके पीछे “अंबा-अंबा” करता दौड़ता आ रहा है बछड़ा। गाय खड़ी हो जाती है, बछड़ा अत्यंत आनंदके साथ अमृतमय पेयका पान कर रहा है। बगलमें ही मुर्गी बोल रही है—अेक मूंगफलीको टुकड़े करके बच्चोंको दे रही है। बच्चे अुन्हें खा रहे हैं।

अितनेमें स्कूलकी घंटी बजी। छोटे-छोटे सुन्दर बालक, जो बहुत ही प्यारे मालूम हो रहे हैं, घरकी ओर छलाँगें मारते जा रहे हैं।

मुदर्शन अुठ खड़ा हुआ। असे बाजारकी तरफ जाते देख सावित्री खड़ी-खड़ी अुसकी ओर देखती रही, लेकिन अुससे कुछ कहे बिना ही मुदर्शन

चला गया। वह अुसी ओर खड़ी देखती रही। गलियोंमें गायोंके झुण्ड जा रहे हैं। अुनके बछड़े छलाँग मारते हुअे आकर अपनी माताओसे मिल रहे हैं।

सावित्री अुन्हें देख-देखकर अतिशय दुखित होने लगी। अुसके हृदयके किस कोनेमे अभी मातृत्वकी कामना जीवित है। वह समयकी प्रतीक्षामें है। वह शीघ्रतासे भीतर चली गयी। अुसके पैरके नीचे बिल्लीका बच्चा “म्याअुं-म्याअुं” कहकर चिल्लाने लगा। बेचारा! अुसको कैसी पीड़ा हुअी होगी। अुसे अपने हाथमें लेकर देखा कि अुसका पैर तो नही दब गया है? दीवारपर छिपकली रेंग रही है। बरामदेमें गिलहरी “किच-किच” कर रही है। क्या अिन सबके भी बच्चे हैं?

सावित्रीको अब संसार मालूम होने लगा है। सारा संसार “माता” मे व्याप्त है। सारी प्रकृति मातामे घिरी हुअी है। सारा प्रेम मातामें मूर्तिभूत है। मातृत्वहीन वह विवाह ही क्यों? सतान-कामना रहित प्रणय ही क्यों?

काम-वासनाके माने क्या है? अब अुसकी समझमें आया। संतान नही होनी चाहिये। अच्छी बात है, परन्तु कामनाअें तथा प्रणय-वांछाअें पूरी हों? अिससे बढ़कर अन्याय क्या है? संतान न चाहनेवाले ब्रह्म-चारी बनकर रहते क्यों नही? जब अिद्रियोंपर दमन करनेकी शक्ति नहीं हो तो संतान होनेसे क्या नुकसान?

अुसे गाँधीजीका स्मरण हो आया। प्रत्येक व्यक्तिके जीवनमें बापूजीका स्मरण न आनेवाली घटना नहीं होगी।

अुन्होंने क्या किया था? पाँच बच्चोंके पिता बननेके बाद भी अुनकी शारीरिक शक्ति कम नही हुअी। यौवन कम नहीं हुआ, फिर भी अुन्होंने ब्रह्मचर्यका पालन किया था।

गौतमके विकासमें भी यही हुआ है। अुनको अेक ही पुत्र था; विशाल राज्यके वे राजाधिराज थे। सुख-भोगोकी अुन्हें कोअी कमी नहीं थी। लेकिन विश्वकी पीड़ाको बरदाश्त न कर सकनेके कारण ही वे विरागी हुअे थे।

संतान-निरोधपर लेक्चर देनेवाले ब्रह्मचर्यका पालन क्यों नहीं करते ? ये औषधियाँ क्यों ? ये अिजेक्शन और आपरेशन क्यों ? दोनों हाथोंमें लड्डू चाहेंगे तो कैसे संभव होगा ।

सावित्री शिष्यता थी । अतः उसे सारी बातें जल्दी ही स्मरणमें आ गयी । वह पछताने लगी—“ओह ! मैं कैसी पागल हूँ ! किस वस्तुमें ऐसी महान शक्ति है, कौन जाने ? यदि माया देवी मेरी ही तरह सोचतीं तो गौतमका पता कहाँ रहता ? बापूजीकी माता मेरी तरह स्वार्थिनी होतीं तो गाँधीजीका जन्म हुआ होता ? शिवाजी, विवेकानन्द आदिको सृष्टि अनु मातृ . . . मूर्तियोंके प्रसादके फलस्वरूप ही तो है । मुझे कैसी संतान हुआ होती ? मेरे बच्चे क्यों नहीं महात्मा हुए होते ? कवि, गायक, पंडित, चित्रकार ”

ओह ! स्मरण मात्रसे सारा शरीर काँप अठा । उसकी वेदना असीम हो अठी । इस बीच दरवाजा खटखटाये जानेकी आवाज हुई और सावित्रीने जाकर दरवाजा खोला । उसने देखा कि सुदर्शन अंक बहुत बड़ा खिलौना ले आया है । उस रबड़के खिलौनेको गाअन पहनाया हुआ है । सावित्रीने उस खिलौनेको अपने हाथमें लिया । सुदर्शनने सावित्रीको देख गहरी साँस ली और अन्दर चला गया ।

अंक वर्ष बीत गया । सावित्री अपने भाभी और भाभीको समझाकर भतीजेको घर लायी है । उसे पालते हुए वह अपनी पीड़ाको भूल जानेका प्रयत्न करने लगी । सावित्री उस लड़केमें अपने पुत्रको देखना चाहती थी, परन्तु वह शिशु सावित्रीमें अपनी माताको नहीं देख पाया । सावित्रीको “फूफी” “अम्मा” कहकर बुलाना तो लड़केसे बन नहीं पड़ रहा है ।

सावित्रीके पालन-पोषणसे सारंगम बड़ा होता जा रहा है, लेकिन अपनी माता और पितासे उसकी ममता घटी नहीं । वह बढ़ती ही जा रही है ।

अंक दिन किसी अपराधपर सारंगमको सुदर्शनने डाँटा । उसी रातकी गाड़ीसे वह (सारंगम) किसीसे कहे बिना चला गया ।

वह यदि अपना ही पुत्र होता तो डाँटे-डपटे, मारे-पीटे जानेपर भी पैरोसे लिपटे घरमें ही पड़ा रहता । परन्तु सारंगम तो औरस पुत्र नहीं,

पालित शिशु है। उसपर क्या भरोसा है, कभी भी वह इस कल्पित संबंधको सदाके लिये तोड़ सकता है।

सगे पुत्र भी जब इस जमानेमें माता-पितासे रूठकर अलग हो जाते हैं' तो पराये बच्चे अपने कैसे हो सकते हैं ?

सावित्रीकी आशाओंपर पानी फिर गया। सुदर्शनने भी दो-तीन सप्ताह मौन धारणकर बिताये। उसे ऐसा मालूम होने लगा कि सारा संसार उसे घृणाकी दृष्टिसे देख रहा है। जिन्हें सन्तानें हैं, ऐसे पिता मानो उसका अपुहास कर रहे हैं। सभी घर बाल-बच्चोंसे शोभायमान हैं। उसे अपना घर अन्धकारमय दिखायी दे रहा था। जो टिमटिमानेवाला धुंधला-सा दीप उसके घरमें रोशनी किसे हुंसे था, वह भी बुझ गया है। उसकी वासनाएं और आकांक्षाएं कभीकी मर चुकी हैं। अब वह मानवता-की प्राप्तिके लिये प्रयास करने लगा है। इस प्रयत्नमें उसे दो ही मार्ग दिखायी देने लगे हैं। अकांतवास अथवा तीर्थाटन। वह यदि तीर्थयात्रा भी करे तो उसे शान्ति नहीं मिलेगी। जहाँ भी जायेगे, मानव संतति प्रत्यक्ष होगी। किसी निर्जन काननमें उसने अपना शेष जीवन अकांकी ही व्यतीत करना चाहा। इस दृष्टिसे किसी दंडकारण्यमें जानेका विचार किया; किन्तु फिर एक विचार उसके मनमें आया कि यदि यह विचार वह सावित्रीको बता देगा तो वह जाने नहीं देगी। बल्कि वह पैरोकी जंजीर बन जायेगी। बिना कहे चला जाये तो यह करना उसका पत्नीघात करना होगा। यदि दोनों ही साथ जाये तो कैसा रहेगा ? यह विचार उसे पसन्द आया। उसने सावित्रीसे सलाह ली।

प्रस्तावपर सावित्रीने बिना किसी हिचकिचाहटके अपनी स्वीकृति दे दी।

दोनोंने गेरुआ वस्त्र तो नहीं पहने, लेकिन सन्यास अवश्य धारण किया। अपना घर-द्वार एवं सारी जायदाद उन्होंने स्थानीय अस्पतालके नाम लिख दी। सावित्रीने आँखोंमें आँसू भरकर अस्पतालके अध्यक्षसे निवेदन किया कि उसका घर प्रसव-मंदिर बनाया जाये और उसे महिला वार्डके रूपमें अस्तेमाल किया जाये।

डाक्टरने भी आनंदपूर्वक अस सुझावको अंगीकार कर लिया।

अतना कर चुकनेके पश्चात् यह दंपति किसी अज्ञात प्रदेशके लिये रवाना हो गया। उसका गम्य स्थान कहाँ है, उसे स्वयं नहीं मालूम था। मध्य मार्गमें फूल-फलोंसे लदे वृक्षों तथा छोटे-छोटे पक्षियोंको देखनेपर सावित्रीका हृदय भर आता। वह विचलित होकर रो पड़ती।

एक स्थानपर दोनों एक निर्मल सरोवरके पास बैठे हुए थे। उस सरोवरमें उन्होंने देखा कि माता मछली अपने बच्चोंसे खेल रही है। अतने ही में एक बड़ी मछलीने आकर अकस्मात् ४-५ बच्चोंको निगल लिया। माता मछली अपने शत्रुका सामना करनेमें असमर्थ थी। अतः वह भी अपने बच्चोंको खाने लगी। जब सावित्रीने यह देखा कि अस प्रकृतिमें अपने बच्चोंको निगलनेवाली माताओं भी हैं, तो सावित्रीका कलेजा टूक-टूक हो गया। उस दृश्यको वह और अधिक न देख सकी और उस मछलीपर कूद पड़ी। सुदर्शन भी उसे पकड़नेके लिये तुरन्त उस सरोवरमें कूद पड़ा।

* * *

९.

चतुराशी

—श्री नार्ल वेंकटेश्वर राव

आप आन्ध्र प्रदेशमें विशेष रूपसे प्रचारित दैनिक-पत्र 'आन्ध्र-प्रभा' के सम्पादक हैं। २०-२५ सालोंसे पत्रिका-जगतमें कार्य करते हुअे भाषा-



पत्रिकाओंके प्रचारकी वृद्धि करनेमें आपने विशेष योगदान दिया और पत्रिका रचना-को अंक प्रचण्ड शक्तिके रूपमें परिवर्तित करके आपने अपनी तीक्ष्ण बुद्धिका परिचय दिया है। अवकाशके समयमें आप कहानी, गीत, कविता और नाटक लिखा करते हैं। 'कोत्तगड्ड' (नयी धरती) नामक आपका १६ अंकांकियोंके संग्रहका हाल ही में द्वितीय संस्करण प्रकाशित हुआ है। देहात और किसानों-

की समस्याओंके चित्रणमें आप सिद्धहस्त हैं। लेख-रचनामें आप अत्यन्त पटु हैं। आपके सम्पादकीय स्थायी मूल्य रखते हैं। 'माटा-मन्ती' और 'पिच्चा-पाटी' आपके निबन्ध-संग्रह हैं। 'नार्लवारि माट' और 'जगन्नाटकम्' आपके कविता व गीत-संग्रह हैं। 'आन्ध्र ज्योति', 'प्रजा मित्र', 'विनोदिनी' अित्यादि पत्र-पत्रिकाओंका सम्पादन करते समय आपने अुत्तम कहानी-रचनाको प्रोत्साहन दिया है। आप बहुमुखी प्रतिभाके धनी हैं।

* * *

चतुराओ

“पिताजी ! अगले महीने चन्द्रहार बनवा देंगे न ? ” नन्ही बधू श्यामलाने अपने पिताजीसे स्नेहपूर्वक पूछा ।

“हाँ, वैसा ही बनवाओंगे, बेटी ! ” कुटुंबरावने आश्वासन देते हुए कहा ।

चन्द्रहारको गलेमें पहननेका अनुभवकर श्यामला अछल पड़ी और इस शुभ समाचारको मातासे कहनेके लिये भीतर दौड़ गयी ।

अपनी पुत्रीके विवाहके समयपर कुटुंबरावपर जो ऋण हो गया था, उसकी चिंतामें लीन हो गये ।

रसोओघरसे मुस्कराती हुयी शेषमांबा आओ और आनंदित हृदयसे उसने पतिसे पूछा—“क्यों जी ! अगले महीने क्या आप अपनी बेटीके लिये चन्द्रहार बनानेवाले हैं ? ”

“हाँ, सोचा तो ऐसा ही है, पर अगले महीनेकी बातसे अभी क्या चिंता है ? बनवाओं न भी तो भी उसके हृदयको क्यों तोड़ें ? यही सोचकर मैंने ‘हाँ’ कह दिया है । हार कोओ अतनी जल्दी थोड़े ही बनेगा ! ”

“यों ही उसे आश्वासन दिलाना क्या पाप न होगा ?”—कहते हुए शेषमांबाने अपने पतिको टोका । अपनी बेटियोंको अच्छी साड़ियाँ और अच्छे आभूषण पहने देख उसे अपना ही शृंगार व अपना ही भाग्य समझकर आनंदित होनेवाली माताओंमें शेषमांबाका स्थान प्रथम कहा जा सकता है ।

“अूंह, जाओ भी तो ! अगले महीनेमें भी टाला जा सकता है । किन्तु अभीसे ही ऐसा कहकर उसे दुखी क्यों बनाओं ?”—कुटुम्बरावने तिरस्कारपूर्ण भाषामें उत्तर दिया ।

“बेटीके काममें भी पिड छुड़ानेकी ही बात करते रहते हैं । सच ही तो है, स्वभावमें आखिर परिवर्तन कैसे हो पायेगा !”—यह कहकर शेषमांबा जल्दी-जल्दी घरके भीतर चली गयी ।

दोपहरके समय पासके कमरेमें आराम करनेवाले प्रसादरावने दोनोंके वार्तालापको ध्यानसे सुना । नाश्ता करते समय प्रसादरावने अपने ससुरसे पूछा—“मुझे अगले महीनेमें एक घड़ी खरीद देगे ?” कुटुम्बरावने निस्संकोच भावसे उत्तर दिया—“हाँ, हाँ ! अवश्य ही खरीद दूंगा ।”

प्रसादरावके अधरोपर मुस्कुराहट दौड़ गयी । उसके नेत्र कांतिपूर्ण होकर दमकने लगे ।

कुटुम्बरावने निश्चय कर लिया कि अुनके “हाँ, हाँ !” कहने मात्रसे लोगोंको ऐसा अपूर्व आनंद प्राप्त होता है, तो उसे ऐसा कहते रहनेमें कोअी सकोच नहीं होना चाहिये ।

अुसी दिन रातको भोजनके समय प्रसादराव बाजारसे एक कलाअी घड़ी लेता आया और अुसे अपने ससुरको दिखाने लुअे अुसने पूछा—“कहिये जी, यह घड़ी अच्छी है न ?” दामादकी कलाअीपर बँधी हुअी घड़ीको देखकर कुटुम्बरावका चेहरा पीला पड़ गया । फिर भी प्रकट रूपसे साहसका अभिनय करते लुअे पूछा—“अच्छी तो है । पर यह किसकी घड़ी है ?”

प्रसादरावने अपनी हँसीको प्रयत्नपूर्वक रोकते लुअे कहा—“मेरी ही है । आपने खरीदकर देनेका वचन दिया था न ? इसलिये अिसी शहरमें मैंने अपने एक मित्रकी दूकानसे अिसे खरीद लिया है ।”

कुटुंबराव गंभीर हो गये और लापरवाहीसे कहने लगे—“मैंने अगले महीनेमें.”

बीचमें ही अुनकी बातको काटते हुअे प्रसादरावने कहा—“कोओ परवाह नहीं, दूकानदार मेरे मित्र ही हैं। वह अगले महीनेमें ही रुपये लेगा।”

दामादकी अस युक्तिके प्रहारसे कुटुंबराव तिलमिला अुठे और दूसरे दिन तक अुनके मुंहसे फिर कोओ बात तक नहीं निकली।

* * *

१०.

देवताकी मृत्यु

—श्री गिडुत्तुरि सूर्यम्



श्री सूर्यम् तेलंगानेके युवक-कहानी-कारोंके अग्रणी कहे जा सकते हैं। बुनाओ आन्दोलनमें आपने अच्छा काम किया है। आपकी कओ कहानियाँ पुरस्कृत हो चुकी हैं। 'प्रजा नाट्य मण्डली' की ओरसे अनेक नाटकोंका प्रदर्शनकर आपने विशेष ख्याति प्राप्त की है। आपकी कहानियोंमें वर्तमान समाजकी विषमताओंका सुन्दर चित्रण देखा जा सकता है। इस समय आप रुसमें हैं।

* * *

देवताकी मृत्यु

नारायणराव अपने कमरेमें बैठे हुए हैं। कलकी डाकके दो पत्र सामने चटाईपर पड़े हैं। नारायणरावने उनका उत्तर देना चाहा। अतनेमें ही अन्हें खाँसी आयी। थोड़ी देर तक आनेके बाद रुक गयी। उन पत्रोंको फिर अेक वार सावधानीसे पढ़कर उत्तर देना चाहा। अेक पत्र अपने छोटे भायी लक्ष्मणरावसे और दूसरा पत्र पत्नी विमलाके यहाँसे आया था। भायीके पत्रको हाथमें लेकर वे पढ़ने लगे—

“भायी साहब ! आप पत्रोंका उत्तर ही नहीं देते। यहाँ मैं कैसी-कैसी कठिनाइयाँ झेल रहा हूँ, भगवान ही जानता है। पिताजी होते तो वे मुझे अितना कष्ट होते कदापि नहीं देख सकते। अन्होंने आपका पालन-पोषण किस तरहसे किया है, अिसे कृपया अेक वार याद कर लीजिये। मुझे अिस मेडिकल कालेजमें क्यों भर्ती कराया ? भर्ती किया भी है तो अुस ओहदेके अनुकूल मेरे लिये आपने पोशाक क्यों नहीं बनवायी ? कालेज-फीस चुकाने आदिके लिये समयपर मुझे रुपये क्यों नहीं भेजते ? अब तक कष्ट अुठा करके पढ़ाया। मेरा कोर्स भी पूरा हो गया है। अब केवल १५ दिन रह गये हैं। मैंने कर्ज लेकर परीक्षाकी फीस चुका दी है। होस्टलका बिल अभीतक नहीं चुकाया है। कर्ज चुकाये बिना मैं यहाँसे निकल नहीं सकता हूँ। आपने मुझे कभी अितना कष्ट नहीं पहुँचाया। अिस वर्ष ही मुझे बहुत

तकलीफ दी है। खैर, जो हुआ, सो हुआ। अब आप शीघ्र ही रुपये भेजनेका कष्ट करें। आपकी खाँसी कम हो गयी है, यह जानकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। फिर भी पिताजीका स्मरण आते ही आपके सम्बन्धमें डर लगने लगता है। स्वास्थ्यको ठीक रखनेकी पूरी सावधानी रखेंगे। मेरे डिग्री लेनेके बाद तो आपको कोअी डर न होगा। आपने लिखा था कि भाभी मायके गयी हैं, क्या फिर आ गयी है? देखनेमें भाभी क्रोधी स्वभावकी मालूम होनेपर भी हृदयसे बहुत अच्छी है। अन्हें मेरा सादर नमस्कार कहिअेगा। नमस्ते !”

पत्र पढनेपर नारायणरावको मृत्युशय्यापर पड़े हुअे पिताजीका स्मरण हो आया। छोटे भाभीकी जिम्मेदारी सौपते समय पिताजीने जो बातें कही थी, वे सब याद हो आयी—“बेटा ! अिसे तुम्हारे हाथोंमें सौप रहा हूँ। जितने लाड-प्यारसे तुम्हें पाला-पोसा, अुतने ही लाड-प्यारसे अिसका पालन नही कर सका, यही मनमें दुःख है। अिसके माँ और बाप तुम्ही लोग हो। अिसे पढा-लिखाकर योग्य बनाओ। जब तक यह अपने पैरोंपर खड़े होनेकी शक्ति न पावे, तब तक अिसकी पूरी तरह देखभाल करो। अुसके बाद जैसा अुचित समझो वैसा करना।”

रावजीके नेत्र सजल हो गअे। पिताजीकी मृत्युके दिन ही अुसे नौकरी मिली। अपनी कमाअीसे पिताजीको संतुष्ट न कर सकनेका अुसे बडा दुःख हुआ। अुसने जो-जो सुख पाया है, अुसका सौवाँ हिस्सा भी अुसका भाभी नही पा सका। क्योकि अुसका जन्म ही तब हुआ, जब पिताजीकी आर्थिक स्थिति अुतनी अच्छी नही रह गयी थी जितनी अुसके खुदके जन्मके समय थी और दूसरे वह सम्हल भी नही पाया था कि माताकी मृत्यु हो गयी। सोनेके व्यापारमें पिताजीको बड़ा नुकसान हुआ। गरीबीके कड़ुवे घूँट पीते हुअे भी अुन्होंने बड़े परिश्रमके साथ अुसे बी. अेल. तक पढाया था।

बचपनसे लेकर कालेजकी अुच्च शिक्षातक—अच्छी पोशाक, खिलौने, मित्र, सिनेमा, होटल, देशाटन अित्यादि मनोरंजनों द्वारा अुसका जीवन अच्छा बीत गया है। अुस समय अुसे जरा भी चिंता व दुःख न था। अिन सबका कारण था—सिरपर पिताजीकी छत्रछायाका होना।

ते. ... ७

पिताजीकी मृत्युके समय उसका भाभी नवी क्लासमें पढ़ रहा था। उसे अँची-से-अँची शिक्षा दिलानेका रावने निश्चय किया। असीलीअे वह अपनी अंतरात्माके विरुद्ध घूस लेने लगा। उस धनको गुप्त रूपसे बैंकमे जमा करता गया। यहाँ तक कि उसकी पत्नी विमलाको भी यह बात मालूम न हो पायी। वह भाभीको पढ़ाता ही गया। लक्ष्मणरावने अटर पास करनेके बाद अंम. बी. बी. अंस. करनेकी अच्छा प्रकट की। भाभीने मान लिया, पर भाभीको आश्चर्य हुआ। वह अपने पतिसे पूछ बैठी—“क्यों जी, आपकी कमाओ परिवारके खर्चके लिअे काफी न होनेपर भी आप लालाजी-को पढ़ाओका खर्च कैसे उठा पाओगे ? अभीकी स्थितिमे ही तो हम सब अंक जून खाते हैं तो दूसरे जूनके लिअे काफी नहीं होता। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि वे कही नौकरी भी करते रहे और अपनी पढ़ाओ भी कर सकें ?”

आजतक गुप्त रखे जानेवाले रहस्यका अद्घाटन करते हुअे पत्नीको बैंककी पास-बुक दिखाकर अुन्होंने कहा कि बैंकमे और भी चार हजार रुपये जमा हैं। विमला अिस तथ्यपर अेक बार तो विश्वास नहीं कर सकी। वह अिस बातपर चकित हुआ कि अुसे प्राण-सम समझनेवाले पति अुससे कहे बिना बैंकमे अितनी रकम कैसे जमा कर सके ? अुसे अिस बातका भी दुःख हुआ कि अितनी रकमके होते हुअे भी खाने व पहननेके खर्चके लिअे अितनी तकलीफ भुगतनी पड़ी।

अिस घटनाके बादसे रावकी प्रत्येक बात व कार्यपर विमला प्रबल संदेह करने लगी। रावपर विश्वास करना अुसे असंभव-सा जान पड़ा। तबसे अुन दोनोके जीवनमे वाद-विवाद शुरू हुआ। हर बातमे झगड़ा होना शुरू हो गया।

रावने बी. अंल. पास किया है। किन्तु घूस लेनेकी आदत होनेके परिणामस्वरूप अुनकी तरक्की नहीं हो पायी। अधिकारियोंके पास अिनके सम्बन्धमे काफी शिकायत पहुँची। अिसलिअे अुन लोगोने भी रावको सचेत किया। राव भी अिस बातको भली भाँति जानते हैं कि अबकी बार यदि घूस-खोरीके अपराधमे वे पकड़े गये तो अुन्हें नौकरीसे ही निकाल दिया जाओगा। तबसे रावने घूस लेना बन्द कर दिया है। विशेषतः अिस डरसे भी कि यदि अैसा न होगा तो अुनकी जीविका मारी जाओगी। यही कारण है कि वे अपने छोटे भाओकी समयपर रुपये नहीं भेज पा रहे हैं।

सरला नारायणरावके मित्रकी पत्नी है। उसे रावने अपने दफ्तरमें टायपिस्टका काम दिला दिया है। वह अपने कामसे काम रखती है। वार्यालयमें अनावश्यक रूपसे किसीसे नहीं बोलती-चालती। उसके हृदयकी अगाध दुःख-गाथा अकेले रावको ही विदित थी। अिसलिअे रावने उसे नौकरी दिलायी। सरलाका छह सालका लड़का स्कूलके बन्द होते ही माताके दफ्तरके बाहर खड़ा रहता है। माँके वाहर आते ही दोनों मिलकर घर पहुँचते हैं। राव भी उस लड़केको बहुत चाहता है। उसे अपने पुत्रकी भाँति देखता है। अतिशय प्रेमके साथ उसे अपने हृदयसे लगा लेता है। कभी-कभी उसे अपने घर भी ले जाया करता था। विमला भी उस लड़केको प्रेमसे देखती और मिठाअियाँ अित्यादि खिलाती है। वह सोचती कि उसका भी यदि अैसा ही लड़का होता तो वह कितना आनन्द मनाती। विमला कभी-कभी यह भी सोचती कि अपने पतिका उस लड़केपर अितनी ममताका कारण कुछ दूसरा ही हो सकता है। रावने अंक बार सरलाकी दशाको उससे कहा भी था—

“सरलाने अट्ठर तक शिक्षा पायी है। उसने मेरे अंक दोस्तसे प्रेम किया था। यह समाचार सरलाने अपने माता-पिताको बताया। अिस अतर्जातीय विवाहके लिअे वे तैयार नहीं हुअे। सरला घर छोड़कर चली गयी। उस युवकके साथ उसका विवाह हुआ। उस युवकको कही नौकरी नहीं मिली। अिमलिअे सरलाको ही नौकरी करके अपने परिवारका पोषण करना पडा। अंतमें अंक कपनीमें उसने टायपिस्टके रूपमें कार्य करना आरंभ कर दिया। अुन्हे अंक पुत्र भी हुआ। दोनों बहुत प्रसन्न हुअे। सरलाने सोचा कि अुनके सतोषको कोअी तोड़ नहीं सकता है। मै अुसके विचारोको सुनकर हँस पडा। अंक दिन सरला आफिममें देरीसे आयी, मरजियाकी भाँति। वह अपने पतिके मुँहको देख नहीं सकी। शेरको देखकर भयभीत हं:नेवाली हिरणीकी भाँति वह घबरा अुठी। सरलाके व्यवहारमें अुसके पतिको सन्देह हुआ। सरलाकी चोली फटी हुअी है और अुसके गालपर नख और दाँतोंके निशान दिखायी दे रहे थे। अुसके पतिको अत्यधिक क्रोध आया और अुसने सरलाको खूब कोसा ही नहीं, बल्कि मारा-पीटा भी। पर सरलाको दुःख नहीं हुआ। लेकिन अुसका पति अाखिर घर छोड़कर चला

गया। वह जड़ कटे वृक्षकी भाँति गिर पड़ी। अपने पुत्रको हृदयसे लगाकर वह खूब रोयी। इस संसारमें अपनेको अकेली पाकर उसने आत्महत्या करना चाहा। लेकिन बच्चेको देखकर उसे ऐसा करनेका साहस नहीं हुआ। बच्चेके लिये ही वह जीवित रही। पहले जब वह मेरे आफिसमें नौकरीकी खोजमें आयी थी, तब मैं उसे सरलतासे पहचान नहीं सका था। उसने ही मुझे पहचानकर सारी बातें बता दी थी। मैंने उसे नौकरी दिलायी। विमला ! क्या तुम्हें यह मालूम है कि सरलाके स्त्रीत्वका हरण किसने किया ? सरला जिस कंपनीमें काम करती थी, उस कंपनीके उस मैनेजरने सरलाके ग्राहस्थ जीवनमें आग लगायी है, जो शरीफकी भाँति कारमें अधर-अधर घूमता-फिरता है, किन्तु वास्तवमें मीठी छुरी है। इसलिये मैं कभी-कभी उसकी सहायता करता रहता हूँ।”

विमलाने उस कहानीको सुनकर उसपर विश्वास किया। लेकिन अपने पतिके कहनेपर वह विश्वास नहीं कर सकी। सरलापर अपने पतिका दिन-प्रति-दिन बढ़ता हुआ अनुराग वह सह नहीं सकी। इसको अतिरिक्त राव प्रति दिन आठ बजे रातको घर छोड़कर चला जाता और सबेरे कोजी तीन बजे वापस लौटता। इससे विमलाका सदेह और भी बढ़ गया। उसने निश्चय किया कि राव सरलाके ही घर जाता है। इस बातको वह बहुत दिनों तक सहन करती रही। आखिर अंक दिन रावको रोककर उसने कहा कि वह अपने परिवारके साथ बड़ा अन्याय कर रहे हैं। अतना ही नहीं, बल्कि रावके सामने उसने सरलाको काफी भला-बुरा कहा। इसपर रावको बहुत गुस्सा आया और उसने विमलाके गालपर दो-चार थप्पड़ लगा दिये। राव बाहर चला गया। उस दिन रावकी आँखोंमें आँसू आ गये। रावके वैवाहिक जीवनमें विमला-पर हाथ अठानेका यह पहला ही अवसर था। इस घटनासे उसका मन व्याकुल हो गया। उसके मनमें अच्छा रहते हुये भी वास्तविकताको वह प्रकट नहीं कर सका। उसके मनमें आया कि पत्नी-हृदयपर सर रखकर बालक की भाँति थोड़ी देर रोकर अपने मनको हलका कर ले। पर खाँसी बढ़ती गयी। रातके दो बजे घर लौटा। घरपर ताला लगा था। उसका कलेजा धक्-धक् करने लगा। वह सोचने लगा—विमला आखिर

गयी कहाँ होगी ? कही वह आत्महत्या करने तो नहीं गयी ? इस कल्पना-मात्रसे उसका हृदय काँप उठा। पर एक विचार उसके मनमें यह भी आया कि वह ऐसा कभी नहीं करेगी। तरह-तरहके अन्य विचारोंके साथ कल्पना-ओका यह द्वंद्व उसके मस्तिष्कमें उठता रहा। विमलाकी खोजमें उसने सारी सड़कें छान डाली। आखिर वह मरलाके घर पहुँचा और उसके घरका दरवाजा खटखटाया। सरलाने दरवाजा खोला और कहा—“ओह, आप है ? आपकी ऐसी हालत क्यों ! अन्दर आजिए।” सरलाने रावको धिठाया। रावने उसके पहले अधिक खाँसा हो। उसके मुँह व ओंठोंपर खून बहा था। खून देखकर सरला भयसे काँप उठी। अपने आँचलसे थोड़ा टुकड़ा फाड़कर खूनको पोंछते हुए उसने पूछा—“क्या किसीने मारा है ?” इसके बाद चिबुक उठाकर देखनेपर शरीरके स्पर्शसे पता चला कि बुखार अत्यंत तीव्र है। रावने मानों किसी व्यक्तिको पानेके लिए सारे घरमें अपनी निगाह दौड़ायी। कोयी नहीं दिखायी दिया। इसलिये वह वहाँसे उठ खड़ा हुआ और बोला—“हाँ सरला ! जीवनपर बड़ी चोट लगी है।” राव जाने लगा, पर सरलाने उससे रातभर वहींपर ठहरनेकी प्रार्थना की। रावने कोयी उत्तर नहीं दिया, बल्कि वह मुस्करा दिया। अमुने लड़केको देखा और उसका चुबन लिया। वहाँसे वह सीधा घर लौटा। उसने सोचा था कि विमला अबतक अवश्य ही लौट आयी होगी। लेकिन उसने देखा कि वह न आयी थी। पड़ोसिनने चाबी देते हुए रावसे कहा—“विमलाके मायकेसे कोयी तार आया है। इसलिये रातको ही वह वहाँ चली गयी। जाते समय केवल यह चाबी आपको देनेके लिए कह गयी है।” रावने जल्दी-जल्दी दरवाजा खोला। उसे एक पत्र पड़ा हुआ मिला। उसमें लिखा था—“मेरा मन अुदास है। मैं कुछ दिन मायके-में रहकर लौटूंगी।” पत्रको पढ़कर रावका मन कुछ शांत हुआ। वह तुरंत विमलाको पत्र लिखना चाहता था, पर अमुने ऐसा नहीं किया। दस दिन बीतनेपर उसने एक पत्र लिखा। उसे उसका उत्तर भी मिला। पत्रसे उसे इस बातका पता चल गया कि विमलाका गुस्सा कम नहीं हुआ है। अिधर रावकी खाँसी बढ़ती गयी। वह ठीक तरह खा-पी नहीं सकता था। इस तरह दो महीने बीत गये। इस अवधिमें राव सूखकर काँटा हो गया

था। दफ्तरके सभी लोग रावको देख आश्चर्य करते थे। सरलाने प्रार्थना की कि विमलाके आने तक राव अुसीके घरमें रहे। लेकिन रावने नहीं माना। अडोस-पड़ोसवाले यह कहते कि—राव किसी वेदयाके घर जाता है, वह कभी घरपर नहीं रहता। अिसलिये अुसकी पत्नी मायके गयी है। अिन सारी बातोंको सुनकर राव मनमें हँसकर रह जाता। अुसने फिर पत्नीको पत्र लिखा।

विमलासे अुत्तर आया। वही पत्र आज सामनेकी चटाअीपर पड़ा हुआ है। अुस पत्रको लेकर पुनः राव पढ़ने लगा—“मैं समझती हूँ कि आप कुशल होंगे। मुझे ही आपको क्षमा करना होगा। पति चाहे जैसा ही क्यों न हो, अुसके व्यवहारपर सहनशीलता कायम रखकर गृहस्थी चलानेमें ही नारीका बड़प्पन है। मैं स्वभावसे कमजोर हूँ। अिसी कारण अुस सत्यको ग्रहण नहीं कर पायी। अिस संसारमें मेरे जैसी दुर्बल नारियोंको जन्म नहीं लेना चाहिये था। मैं जब कभी आँखें खोलती हूँ या बन्द करती हूँ, तो सदा आपकी ही मूर्ति आँखोंके सामने रहती है। आपकी खाँसी कैसी है? दवा लेनेका मैंने कभी बार आपसे अनुरोध किया, पर आप मेरी बात सुनते ही नहीं। देवरकी पढ़ाअी समाप्त हो गयी है। अिस महीनेके अन्तमें वे आ जाअेंगे और जबर्दस्ती आपके मुँहमें दवा डालेंगे। वे तो डाक्टर हैं न? तब तक आप हमारी बात नहीं सुनेंगे। मैं अेक सप्ताहके अन्दर वहाँ आ रही हूँ। कष्ट न हो तो २५ रुपये भेज दीजिये।”

आपकी चरणदासी,
विमला

विमलाके भोलेपनपर रावजीको हँसी आ गयी। पहले अपने छोटे भाअीको पत्र लिखा :—

“मेरे छोटे भाअी! अिस बातका मुझे बड़ा संतोष है कि तुम जल्दी आ रहे हो! मैं तुम्हें तकलीफ दे रहा हूँ। यह तो सत्य है। अिसे पिताजी कदापि क्षमा नहीं करेंगे। अुनसे जल्दी क्षमा-प्रार्थना करना चाहता हूँ। दो दिनके भीतर तुम्हें रुपये भेज रहा हूँ। मैं समझता हूँ कि मैंने तुम्हारी पढ़ाअी पूरी कर दी है और अिसलिये पिताजी मुझे क्षमा करेंगे

तुमने अपनी भाभीके सम्बन्धमें जो लिखा, वह सोलह आने सत्य है। वह तो अधिक भावुक स्वभावकी है। अक मन्नाहके अन्दर आनेवाली है। मेरी खाँसी अब अच्छी हो गयी है।”

तुम्हारा भाभी,
नारायणराव।

असके पश्चात् रावको ऐसी खाँसी आयी कि उसमें खून भी गिरा। वे थोड़ी देर आँखें बन्द कर पीडाको सहते रहे। फिर अन्होंने विमलाको एक पत्र लिखा :—

“ प्रिय विमला,

तुम्हारा प्रेमपूर्ण पत्र मिला। मैं विलकुल असमर्थ हूँ। पता नहीं मैंने अपने पूर्व जन्ममें कौनसा अपराध किया था, ऐसा लगता है कि अब अुसीका फल भोग रहा हूँ। मुझे तुमने अपने हृदयमें स्थान दिया, अतः मैं धन्य हूँ। मैं दुर्बल अवश्य हूँ। वरना भोले स्वभावकी तुमपर जिस दिन अपना हाथ अूँठाया था, अुसी दिन अुसे काटकर फेक देना चाहिये था। मैं कायर था, असलिये वह काम नहीं कर सका। जब तुम यहाँ आओगी, अुस समय तुम्हें सरलाका समाचार दूँगा। कल मैं तुम्हारे नामपर ५० रुपये भेज रहा हूँ।”

तुम्हारा,
नारायणराव।

पत्र पूरा करते ही रावको फिर खाँसी आयी। खाँसते हुअे बाहर जाकर अन्होंने दोनों पत्र डाकमें डाल दिअे।

लक्ष्मणरावको भाभीका पत्र व मनीऑर्डर मिले। भाभीकी खाँसी ठीक हो जानेका समाचार पढ़कर अुसे सन्देह मिश्रित आनंद हुआ। असलिये अुसने पत्रको दुबारा पढा। पत्रको पढ़ जानेपर अुमकी शका और भी बढ गयी। अुस दिन कोअी रोगी आपरेशन-टेबिलपर मृत्यु-दशामे पडा था। अुस रोगीके चेहरेमें लक्ष्मणरावको अपने भाभीका चेहरा दिखायी दिया। अुसका शरीर पसीनेसे तर हो गया। अक बार आँखें बन्द कर अुसने फिर आँखें खोलकर देखा। दूसरी बार भी अुसे भाभीका ही चेहरा दिखायी दिया। अुसे ऐसा क्यो दिखायी दे रहा है? असकी वह कल्पना

भी नहीं कर सका। उसने अपने मनको दृढ़ बनाया। भाभीको शीघ्र ही देखनेकी प्रबल अिच्छा उसके मनमें हुआ। उसी दिन वह गाड़ीसे रवाना हो गया।

रावने जो पत्र व रूपये विमलाको भेजे थे, वे उसे मिल गये। पत्र पाते ही उसने उसे अपने हृदयसे लगा लिया। तीन महीनोंका हृदय-भार अेक साथ हलका हो गया। उस रात्रिको वह निश्चित हो आरामकी नीद सो गयी। उसने अेक अच्छा स्वप्न देखा। सावित्री और सत्यवानको भाँति दोनों सुंदर वनमें विहार कर रहे हैं। दोनों अेक वृक्षके नीचे बैठे हुए हैं। वह वृक्ष फल व फूलोंसे लदा हुआ है और स्वर्गीय छायासे सुशोभित है। उस वृक्षपर घोंसले बनाकर पक्षी निवास कर रहे हैं। विमला वृक्षकी ओर देख रही है। उस वृक्षका पीला रंग मानों उसके चरणोंमें पोता जा रहा था। अुतनेमें ही जोरकी आँधी आयी। फूल व फल अेक साथ झड़ गये। पत्ते भी झड़ने लगे। पतझड़के पत्तेहीन वृक्षकी-सी उस वृक्षकी स्थिति हो गयी। अेक शाखा टूटकर विमलाके पतिपर गिर पड़ी, जिससे विमलाको अैसा अनुभव हुआ कि उसके गलेके मंगल-सूत्रको कोयी बलात् तोड़ रहा हो।

विमला चौंककर अुठ बैठी। उसे डर लगा। दूसरे ही दिन वह गाड़ीमें पतिके यहाँ पहुँची। राव आफिसमें था। शामको जब वह घर लौटा तो विमला अपने पतिको पहचान नहीं सकी। वह पतिसे गले लगकर फूट-फूटकर रोने लगी। रावने उसे सांत्वना दी। उसने भीतरसे अुठनेवाली अपनी खाँसीको बलात् रोक लिया।

“विमला ! तुम आ गयी हो। अब मुझे कोयी डर नहीं है। होटलका भोजन रुचिकर नहीं लगता था। असलमें कमजोर हो गया हूँ। खाँसीकी दवा ले रहा हूँ। मुझे अैसा लगता है कि भाभीके आकर दवा देनेके पहले ही मेरी खाँसी ठीक हो जायेगी। मेरा स्वास्थ्य बिलकुल ठीक हो जायेगा। मैं भी प्रोफेसर राममूर्ति (पहलवान) जैसा हो जाऊँगा। विमला। अेक बात ! मुझे आज जरा बाहर जाने दो। यही आखरी दिन है। मैं कलसे बाहर नहीं जाऊँगा।” यह कहकर राव बाहर चला गया। विमलाका दाँया नेत्र फड़कने लगा। उसके दुःखकी सीमा न रही।

अतने दिनोके ग्राहंस्थ जीवनके बाद भी वह पतिको पूरी तरह समझ नहीं पायी, अिस बातका अुसे अतिशय दुःख हुआ। पतिके स्वास्थ्यके गिर जानेका कारण वही थी। अुसी दिन अेक्सप्रेससे लक्ष्मणराव भी आया। देवरको देख विमलाका दुख फूट पडा। भाभीकी बीमारीकी बात जानकर लक्ष्मणराव भी घबरा अुठा। आते ही अुसने पूछा—

“भाभी, भाभी साहब कहाँ गये हैं ?”

विमलाने कोअी अुत्तर नही दिया।

अिसपर लक्ष्मणरावने पुनः पूछा। अिसपर विमला बोली—

“मुझे पता नही। जल्दी ही आयेगे !”

लक्ष्मणरावने विमलाके कंठमे किसी अज्ञात वेदनाका अनुभव किया। अिसपर अुसके मनमे अेक विशेष प्रकारका सन्देह भी अुठा। तब तक वह चुप नही रहा, जब तक अुसकी भाभीने सारा समाचार अुसे नही सुनाया।

“लक्ष्मण ! तुम्हारे भाजीमे यही अेक कमजोरी है। यदि यह बात अुन्हे मालूम हो जायेगी कि अुनका समाचार तुमको मालूम हो गया तो वे बहुत दुखी होंगे।”

“भाभी ! आप जाकर भाभीको ले आअिअे। सरलासे भी बात कीजिअे। अुन्हे समझा दीजिअे।”

विमला कुछ देर तक सोचती रही। वह लक्ष्मणरावको लेकर सरलाके घर पहुँची। लक्ष्मण कुछ दूरपर खडा रहा। विमलाने दरवाजा खट-खटाया। सरलाने दरवाजा खोला।

“आप कौन हैं जी, क्या चाहिअे ?”

विमलाने भीतर झाँककर देखा। खाटपर कोअी ओढकर लेटा पडा था। विमलाने सोचा—‘वह व्यक्ति अुसका पति ही होगा।’

“मैं अेक अभागिन हूँ। पति-भिक्षाकी याचना करने आयी हूँ। मेरा नाम विमला है। मैं नारायणरावकी पत्नी हूँ।” ये बातें सुन सरलाको आश्चर्य हुआ।

“ओह, आप हैं। आपकी बातें मेरी समझमें नही आ रही हैं। भीतर आअिअे। बैठिअे।”

खाँसी रुक गयी और दिलकी धडकन बढ़ गयी।

“भाभी ! तुम भी रो रहे हो. . . . डाक्टर. . . . रोता है कही ? भाभीको ढाँढस नहीं बँधाओगे ? ” ये बातें राव कह ही रहे थे कि मृत्यु-देवताने नारायणरावके फेफड़ोंपर अंक लात मारी। वह मानव छटपटाने लगा।

“भाभी ! अब मैं जीवित नहीं रहूँगा. . . . पिताजीने मुझे क्षमा किया है। भाभीको तुम्हें सौंप रहा हूँ. . . . सरलाकी देखभालका भी ख्याल रखो. . . .। त्रिमला ! . . . मुझसे कोअी अपराध हुआ हो तो क्षमा करो। ”

सब अंक साथ रो पड़े। लक्ष्मणरावका मुख-मण्डल विवर्ण हो गया। अुसका दिल टूट चुका था। भाभीके परिश्रमके रहस्यको अुसने अपने पेटमें ही छिपाया, लेकिन वह अुसकी अँतड़ियोमें छिद्र बनाने लगा—“हत्यारा है ! भाभीकी हत्या करनेवाला हत्यारा है !” कह रहा था अुसका हृदय !

भाभी साअिकिल-रिक्शा चला रहे हैं। छोटे भाभीकी पढ़ाअीके वास्ते बड़े भाभी साअिकिल-रिक्शा चला रहे हैं। मुँहसे खून गिर रहा है, पर रिक्शेको रोके बिना चला रहे हैं। बिना विरामके, साँस लिअे बिना खाँस रहे हैं। रिक्शेका पहिया जोरसे घूम रहा है। भाभीके जीवन रूपी शंकटकी धुरी चक्रसे अलग हो गयी है। जोरसे घूम रहा है। अकेला सडकपर दौड़ रहा है। बेग कम हुआ। रुक गया। नीचे गिरकर छटपटा रहा है।

“भाभी ! ” कहकर जोरसे लक्ष्मणराव अँसा चिल्लाया कि अुसमें पृथ्वी और आकाश गूँज अुठे। मानो अुस चिल्लाहटका रहस्य अुसे और अुसके भाभीको ही मालूम हो ! ३३

* * *

३३ ऑल अिडिया रेडियो, हैदराबाद-केन्द्र द्वारा सन् १९५६ में चलाअी गयी कहानी-प्रतियोगितामें अिस कहानीको प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।

लक्ष्मणरावकी गोदमें नारायणरावका सिर है। कमीजपर खूनके दाग हैं॥ भाभीको दोनों हाथोंसे अठाअे हुअे लक्ष्मणराव सरलाके द्वारपर पहुँचे।

रिक्शावालोंने कहा—“वावू! हम अनिके रिक्शको ले जाकर मालिकको सौप देगे। आप अन्हें घर ले जाअिअे।” सरलाने रावको देख जोरसे चिल्लाया। रावको चारपाओपर लिटाया गया। सरला डाक्टरकी खोजमें दौड पड़ी। विमलाने आँख खोलकर पतिकी ओर देखा। लक्ष्मणरावने भाभीको ढाँढस बँधाते हुअे कहा—“भाभी, जरा धैर्य धारण करो। जोरसे रोओगी तो भाभीका वचना मुश्किल है।” लक्ष्मणरावने ये बातें कह तो दीं, लेकिन अस समय अुनके दिलमें जितनी जोरसे धड़कन हो रही है अुसे कोअी भी स्टेटस्कोप नही गिन सकता। विमला काँप रही है। अुसके दुखका सागर बाँध तोड़कर अुमड़ रहा है। आँचलके छोरको मुँहमें रखे रो रही है। अिधर सरला डाक्टरको ले आअी। डाक्टरने सुअी लगाअी। सबेरे अस्पतालमें भर्ती करनेकी सलाह देकर डाक्टर चले गअे। विमलाने सरलाको गले लगाया। अुस ओर गलीमें कुत्ता ‘भौ-भौ’ करते जोरसे रो रहा था।

नारायणरावने धीरेसे आँखें खोली। विमला पासमें ही बैठी थी। रावने पत्नीको संबोधितकर अुसका हाथ पकड़ लिया। विमलाने मजबूतीके साथ पतिका हाथ अैसे पकड़ लिया, मानों वह यह कह रही है कि मुझे कभी छोड़कर न जाना। नारायणरावने विमलाके भावको समझ लिया। अुसकी आँखोंकी कोरोसे दो गरम आँसू निकल पडे। अुसने छोटे भाभीकी ओर ताककर देखा।

“भाअी! आ गअे हो! अब मुझे कोअी डर नही है। विमला! भाअी आ गअे है। अब मै मरूँगा नही।” विमलाने पतिके मुँहपर अँगूठी रखते हुअे मंगल-सूत्रको आँखोंसे लगा भगवानसे प्रार्थना की। भाअीकी बातें मुनकर लक्ष्मणराव अपने दुखको रोक नही सका और “भाअी!” कहकर जोरसे चिल्लाया और गले लगकर रोने लगा। विमला भी चिल्ला-चिल्लाकर रोने लगी। सरलाके नेत्रोंसे आँसुओंकी धारा वह चली। लड़का चौककर अुठ बैठा। रावजी खाँसने लगे। लड़का रोनी मूरत बनाकर माँके पास खड़ा हो गया और पूछने लगा—“माँ! नानाजी क्यो अैसा खाँस रहे है?”

खाँसी रुक गयी और दिलकी धडकन बढ़ गयी।

“भाजी ! तुम भी रो रहे हो. . . . डाक्टर. . . . रोता है कही ? भाभीको ढाँढस नहीं बँधाओगे ? ” ये बातें राव कह ही रहे थे कि मृत्यु-देवताने नारायणरावके फेफड़ोंपर अंक लात मारी। वह मानव छटपटाने लगा।

“भाजी ! अब मैं जीवित नहीं रहूँगा. . . . पिताजीने मुझे क्षमा किया है। भाभीको तुम्हें सौंप रहा हूँ. . . . सरलाकी देखभालका भी ख्याल रखो. . . .। त्रिमला ! . . . मुझसे कोअी अपराध हुआ हो तो क्षमा करो। ”

सब अंक साथ रो पड़े। लक्ष्मणरावका मुख-मण्डल विवर्ण हो गया। उसका दिल टूट चुका था। भाजीके परिश्रमके रहस्यको उसने अपने पेटमें ही छिपाया, लेकिन वह उसकी अँतड़ियोंमें छिद्र बनाने लगा—“हत्यारा है ! भाजीकी हत्या करनेवाला हत्यारा है ! ” कह रहा था उसका हृदय !

भाजी साअिकिल-रिक्शा चला रहे हैं। छोटे भाजीकी पढ़ाअीके वास्ते बड़े भाजी साअिकिल-रिक्शा चला रहे हैं। मुँहसे खून गिर रहा है, पर रिक्शेको रोके बिना चला रहे हैं। बिना विरामके, साँस लिअे बिना खाँस रहे हैं। रिक्शेका पहिया जोरसे घूम रहा है। भाजीके जीवन रूपी शंकटकी धुरी चक्रसे अलग हो गयी है। जोरसे घूम रहा है। अकेला सडकपर दौड़ रहा है। बेग कम हुआ। रुक गया। नीचे गिरकर छटपटा रहा है।

“भाजी ! ” कहकर जोरसे लक्ष्मणराव अँसा चिल्लाया कि उससे पृथ्वी और आकाश गूँज उठे। मानो उस चिल्लाहटका रहस्य उसे और उसके भाजीको ही मालूम हो ! ❧

* * *

❧ ऑल अडिया रेडियो, हैदराबाद-केन्द्र द्वारा सन् १९५६ में चलाअी गयी कहानी-प्रतियोगितामें अिस कहानीको प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।

फायदेका सौदा

—श्री मोक्कपाटि नरसिंह शास्त्री

आप भी 'साहित्य-समिति' के सदस्योंमेंसे अके हैं। विलायतमें शिक्षा प्राप्तकर भारत लौटनेके उपरान्त आपने विलायतमें शिक्षा प्राप्त करनेके



लिए गये हुअे अके छांदस (सनकी) की जीवनीकी कथावस्तु बनाकर अके हास्यरस-प्रधान उपन्यासकी सृष्टि की। अस कृतिका नाम 'बैरिस्टर पार्वतीशम्' है। तबसे आपका दूसरा नाम बैरिस्टर पार्वतीशम् पड़ गया है। आपकी कहानियोंमें कोमल हास्यके साथ हृदय-विदारक शोक-रसका सम्मिश्रण है। "अकोदसलु" नामक उपन्यास द्वितीय

पद्धतिका अुदाहरण है। "प्रति बिम्बालु" 'साहित्य-समिति' का प्रकाशन है। यही अनका प्रथम कहानी-संग्रह है। हाल ही में अनकी शेष कहानियाँ "कन्नवी-विन्नवी" (जो देखा और सुना) दो संग्रहोंमें प्रकाशित हुअी हैं। अन्होंने अनेक हास्य-प्रधान अेकांकियोंकी भी रचना की है। बैरिस्टर बननेकी अिच्छासे आपने अध्ययन किया, लेकिन अपने जीवनमें वकील भी नहीं बन पाअे।

फायदेका सौदा

हम चारों आदमी रोजकी भाँति होटलमें विल चुकाकर पान चवाते और सिगरेट सुलगाते हुए क्लबमें पहुँचे। वहाँके दक्षिण दिशाके दालानमें चार बढ़िया कुर्सियाँ मँगवाकर हमने आपसमें चर्चा करनी शुरू की। यह हमारा प्रति दिनका कार्यक्रम है। हम सब बेकार और देशोद्धारक हैं। असलिये सबसे पहले हम लोग प्रति दिन क्लबमें हाजिरी देते थे। सबसे पहले वहाँ पहुँच जाते थे। सबसे पहले पहुँच जानेका लाभ यह होता था कि बढ़िया कुर्सियाँ मँगवाकर हवादार स्थानमें बैठकर वार्तालाप करनेकी सुविधा मिल जाती थी। बादमें आनेवाले भद्रपुरुष वकील, मुंसिफ अत्यादि लोगोंको हमारी यह सुविधा बहुत खटकती थी। लेकिन वे हमारा क्या कर सकते थे? हम भी तो क्लबके मेंबर थे। चन्दा तो समयपर वे भी नहीं देते, और हम भी नहीं देते। ऐसी हालतमें वे किस बातमें हमसे बड़े हैं। अनि कुर्सियोंके लिये बेचारे समयसे पहले अदालत छोड़कर आ नहीं सकते थे। असलिये उन लोगोंने देरीसे क्लब खुलवानेका प्रयत्न किया। लेकिन कुछ बुद्धिमान लोगोंने उनके प्रयत्नको विफल बना दिया। क्योंकि ताश खेलने तथा विलियडर्स खेलनेके हेतु कुछ अत्साही युवकोंने क्लबमें ही रहना शुरू कर दिया। उनके वास्ते देरतक क्लब खोले न रखें तो आमदनी कम हो जायेगी। जो भी हो, पैसेका मामला जो ठहरा !

हमारे क्लबमे संन्यासी राजु अंक मेवर है। वह अंक बहुत बड़े पॉलि-टीसियन याने देवातक* है। वह किसलिअे देवातक है, किसमे देवांतक है, इसका निर्णय नहीं हुआ। पर देवांतक नामक ख्याति अन्हें प्राप्त हो गयी है। वे सदा साफ-सुथरी पोशाक पहनकर क्लबमे उपस्थित होते थे। उनसे संबंधित कहने व मुनने योग्य अनेक कथाएं हैं। उन सब कथाओंको नहीं, बल्कि यहाँ तो अंक ही विशेषता कहूँगा। उनकी मूँछे अंक विशेष प्रकारकी हैं। मूँछवाले तो कभी मिलेगे। लेकिन उनकी मूँछे कुछ विचित्र प्रकारकी हैं। इनकी शैली ही अलग है और घनी भी अधिक है। उसे अंक किस्मकी कलात्मक कारीगरी कहूँ तो विश्वास कीजिए। मैं समझता हूँ कि उन मूँछोंके कारण ही अन्हें देवांतक नामक यश या अपयश प्राप्त हुआ है। जो भी हो, राजमहेन्द्रीके आचारीजीकी जुल्फे और संन्यासी राजुकी मूँछोंसे अपरिचित लोग आसपासके तीन-चार जिलोंमे नहीं हैं।

संन्यासी राजुकी मूँछे देखनेमे कुछ गंभीरता-द्योतक और आदर-सूचक होनेपर भी स्वभावसे वे कुछ खुलासा प्रकृतिके ही हैं। वार्तालापके समय हममें मिल जाते थे। हम सबके मनमे उनके और उनकी मूँछोंके विषयमे आदर-भाव है। लेकिन कभी-कभी कुछ सदर्भोंमे उनकी मूँछोंको देख हम जलते थे। उसका कारण हम स्वयं नहीं जानते। हम सबने कभी यह नहीं सोचा कि किसी बहाने उन मूँछोंको निकलवा लेगे तो कितना अच्छा होगा, पर कभी-कभी ऐसा लगता कि अन्हें निकलवानेपर उस व्यक्तिकी हालत क्या होगी? न जाने क्यों ही कभी-कभी हमारे मनमे ऐसी अकारण ही कामनाएं क्यों पैदा होती रहती थी। आप लोगोंकी बात मैं नहीं कह सकता, किंतु हम लोगोकी आपसकी बात समझे। मुझमे कभी-कभी ऐसी कल्पनाएं अठती रहती हैं कि टैगोरजीकी दाढ़ी और जुल्फे न होती तो कैसा होता? अस्मान साहबके तोंद न होती तो क्या अितना बड़ा आदमी हुआ होता? इस प्रकार वे कभी विचार मेरे मस्तिष्कमे पैदा होते रहते हैं। खैर!

* जो हृदसे ज्यादा चालाक, धूर्त और कपटी होते हैं; आन्ध्रमे अन्हें देवांतक कहते हैं।

अस दिन भी हमेशाकी ही तरह हम क्लबमें पहुँचे—गपशप चलने लगी। अधर-अधरकी बातें चल रही थी। हमारे चारो तरफ कभी लोग अिकटूठे हो गये। हम अपनी बातोंमें अितने तन्मय थे कि हमें पता ही न चल पाया। कुछ देर राजनीतिक स्थितिपर वाद-विवाद होता रहा। असके बाद वाणिज्य और व्यापारपर चर्चा चलने लगी।

चर्चा क्रमशः गंभीर होती गयी। विदेशी विनिमय मुद्राके सम्बन्धमें, Stock Market पर हमारे विशेषज्ञों (Specialists) ने बहस की। असके अपुरान्त सोने और अनाजके दरोंपर चर्चा होती रही। अस समय तक सन्यासी राजु भी आ गये थे। अेक बार अपने दोनों हाथोंसे क्राफ सँभाला और दूसरे ही क्षण दोनों हथेलियोंसे मूँछोंपर ताव दिया और अेक कुर्सीपर आरामसे बैठ गये। अितनेमें सुव्वय्या बोल अुठे—“आजकल भावमें अुतार-चढ़ाव भले ही हो, पर व्यापारमें जो फायदा है, वह किसीमें नहीं है।” अुनके कहनेके ढगसे अैसा लग रहा था, मानों अस सत्यकी असने ही पहले-पहल खोज की हो। यह व्यक्ति देखनेमें मूर्खकी तरह लगता है और बीच-बीचमें अस प्रकारके महत्वपूर्ण विषय सूत्र रूपमें प्रकटकर कुछ समय तक मौन मुद्रा धारण कर लेता है।

रामरावने जोरसे चिल्लाकर कहना शुरू किया—“मुनिअे, मुनिअे !” असकी समझमें सभामें शोर, यह बहुत बड़ी मजाक थी। वेकटरावने गंभीर होकर कहा—“आपका कहना ठीक है, लेकिन यह अेक बड़ा कठिन कार्य है। कितनी पूँजी चाहिये। कितनी मेहनत करनी पड़ेगी। व्यापारके माने हँसी-मजाक थोड़े ही है !” अस आदमीका स्वभाव ही कुछ अैसा है। “दालमें कुछ नमक ज्यादा है” यह कहना हो तो चेम्बरलेन जैसी गंभीर धारणा कैसे कहता है। अेक सेवानिवृत्त अफसरने कहा—“जो भी हो, प्रत्येक व्यक्तिको नौकरीकी खोज करना छोड़कर अब व्यापारमें ही लग जाना चाहिये।”

अेक व्यक्तिने कहा—“सब कोअी पालकीपर चढ़े तो ढोनेवाला कौन हो ? यदि सभी बेचनेवाले बन जाअेंगे तो खरीदनेवाला कौन बच रहेगा ?”

अेक अुत्साही युवकने कहा—“सभी थोड़े ही चावल और कपड़े बेचने-वाले बनेंगे ; व्यापार तो अनेक प्रकारके होते हैं। हर आदमी अेक ही प्रकारका व्यापार थोड़े ही करेगा।”

असपर अेक समाजवादीने कहा—“ये सब कहनेकी बातें हैं। गरीब व्यक्ति व्यापार कर ही कैसे सकेगा ? यह सब धनिकोके लिअे ही संभव है।”

काँग्रेसी वक्ता महोदय बोल अुठे—“क्या कहा ? व्यापार करनेकी अच्छा रखनेवाला क्या-क्या नही बेच सकता है ? जिस व्यापारमें लाभ दिखायी दे, वही व्यापार किया जा सकता है। फिर चाहे वह भला हो या बुरा। मिट्टी बेचकर लाभ कमाया जा सकता है। यहाँ तक कि बालोंको बेचकर भी व्यापारी फायदा अुठा सकते हैं।”

संन्यासी राजुने हँसते और मूँछोंपर ताव देते हुअे कहा—“बालोंका व्यापार बालाजी (वेंकटेश्वरस्वामी) के लिअे ही संभव है। वह सबके लिअे कहाँ संभव है ?” कभी वादोपवादोंमें भाग न लेनेवाले संन्यासी राजुको बोलते देख सभी गंभीर मुख-मुद्रामें चुप हो गअे। अकस्मात हवा ठण्डी-सी जान पडी।

शास्त्रीजीने कहा—“बाल बेचनेके लिअे भगवान बालाजीकी ही जरूरत नहीं है। यह काम तो कोअी मूर्ख भी कर सकता है।” शास्त्रीजीकी बातोंके फलस्वरूप वातावरण अेकदम ही बदल गया। संन्यासी राजुने शास्त्रीजीके कथनका खण्डन करते हुअे कहा—“आप कैसी विचित्र बात बता रहे हैं ? तब तो हरअेक नाअी यह व्यापार कर सकता है।”

शास्त्रीजीने कहा—“मेरा विश्वास है कि अुसके लिअे नाअीकी भी जरूरत नहीं। यह व्यापार तो हर व्यक्ति कर सकता है।”

मूँछोंपर वैसे ही हाथ रखे हुअे संन्यासी राजुने कहा—

“बाल तो प्रत्येक व्यक्तिके पास हैं। हर कोअी अुन्हें बेचना चाहे तो खरीदनेवाला कौन होगा ?”

शास्त्रीजीने शाँत चित्त होकर कहा—

“हाँ, आपने जो कहा, वह ठीक है ! मैं भी जल्दबाजीमें अधिा व्यापक कह गया। लेकिन अिस बातको आपको अवश्य मानना पडेगा कि प्रत्येक वस्तुकी समयपर आवश्यकता और अुसका अप्रत्याशित मूल्य भी होता है। प्रत्येक वस्तुको अवसर देखकर बेचना होता है; तब लाभ अवश्य होता है और यही व्यापारका लक्षण है।”

ते. ८

वार्तालापका रंग बदलते देख हम सब सिगरेटका धुआँ छोड़ते हुअे चुपचाप बैठे रहे।

“कभी-कभी अनेक अनावश्यक वस्तुओकी आवश्यकता हो सकती है और उनका मूल्य भी बढ़ सकता है। लेकिन मेरा विश्वास है कि बालोंका मूल्य कभी नहीं बढ़ता है।”

शास्त्रीजीने हँसते हुअे कहा—“जल्दबाजीमे ऐसी बात न कहिये। संदर्भको देखकर ही मैं कह रहा हूँ। आप अन्यथा न समझियेगा। कल आपकी मूँछोंका भाव बढ़ सकता है।”

हमने सोचा कि शास्त्रीजीकी योजना यही है। संन्यासी राजुका मुँह विवर्ण हो गया। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि सारे गगन-मण्डलमे अंधकार छा गया है और मेघोंका गर्जन व बिजलीकी कड़कड़ाहट होनेवाली है।

“आपने प्रसंगवश कहा है! पर मेरी मूँछोंको चाहनेवाला ही कौन है?”

“कोओ चाहे भी तो आप बेचनेवाले थोड़े ही है?”

शास्त्रीजीकी कल्पना संन्यासी राजुकी समझमे नहीं आओी। अन्होंने मूँछोंको मरोड़ते कुछ आवेशके साथ कहा—“यदि कोओ ऐसा भोला आदमी मिल जाओ जो मेरी मूँछोंको खरीदना चाहता हो, तो मैं क्यों न बेचूँगा?”

“आप कहते तो हैं पर समय आनेपर कही पीछे तो न हट जाओँगे?”

अेक बार फिर मूँछोपर ताव देते हुअे राजुजीने अुत्तर दिया—“आप क्या कहते हैं! जन्म भरमे भी हमने कभी पीछे हटना नहीं सीखा।”

“तो क्या सचमुच आप अपनी मूँछोंको बेचनेवाले है?”

“कहता तो हूँ! यह सोलह आने सत्य है।”

“लो, कितना मूल्य दूँ?”

“खरीदनेवालेको आने दीजिये।”

“मुझे ही चाहिये। भाव तो बताओिये!”

हम सभीको अिस सौदेमे बड़ा मजा आ रहा था। लेकिन अब संन्यासी राजुके चेहरेपर हवाओियाँ अुडने लगी। बनावटी मुस्कुराहटको प्रयत्नपूर्वक प्रकट करते हुअे संन्यासी राजुने कहा—“सौ रुपये दीजिये तो!”

“निश्चय ही ! बातके पक्के है न ? ”

“हाँ ; राजु कभी अपने वादेको तोड़ता नहीं । यकीन रखें । ”

शास्त्रीजीने तुरन्त चेक लिखकर दे दिया । हमने सोचा था कि राजु बेहोश हो जायेगे । पर साहस बटोरकर अन्होंने कहा—“नाजीको बुला लीजिये । ”

शास्त्रीजीने धीरताके साथ कहा—“अभी कोजी जल्दी नहीं । मूँछें मैं बादमे ले लूँगा । पहले इस रसीदपर दस्तखत कीजिये । ” रसीदमें लिखा था—“ओ. सन १८-४-१९४० मे निवामी. . . श्री शास्त्रीजीको मैंने अपनी मूँछे सौ रुपयेमे बेच दी है । अनि मूँछोंको जब शास्त्रीजी चाहेंगे, तब बिना किसी अज्रके ले सकेंगे । अनिके मूल्य-स्वरूप १०० रु. प्राप्त हो गये है । ”

अस रसीदपर संन्यासी राजुने हस्ताक्षर कर दिअे । संन्यासी राजुने बिना कुछ कहे चेकको जेबके हवाले किया, मानो किसी निकटके रिश्तेदारकी मृत्युका समाचार मिला हो । अस तरह कुछ किसीसे बिना कहे, वे वहाँसे चल दिअे ।

क्षणभर सब निःशब्द रहे । असके अपरात सबने आश्चर्य प्रकट किया और हँस पड़े । शास्त्रीजी अकेले अपनी दृष्टि कही केन्द्रितकर सिगरेटकी कश खींचनेमे मग्न रहे ।

हमने शास्त्रीजीसे पूछा—“क्यों जी, तुम पागल तो नहीं हो गये । ”

शास्त्रीजीने कहा—“चप भी रहो ! अच्छा सौदा हाथ लगा है ! ”

मैंने कहा—“तुम्हारा सिर ! असमे लाभ ही क्या है ! ”

शर्माजीने कहा—“बेचारे राजुकी मूँछें मुँडवानेके लिअे सौ रुपये व्यर्थ ही क्यों बरबाद करते हो ? ”

अेक दूसरे व्यक्तिये कहा—“असमे न पुण्य है और न पुरुषार्थ ही ! ये सब बेकारकी बातें हैं । ”

शास्त्रीजीने गंभीर होकर जवाब दिया—“व्यापारमें पुण्यकी बात ही कहाँ अुठती है ! असमें तो लाभ अुठानेकी आशासे सौदा खरीदा जाता है ! यदि तुम्हें विश्वास न हो तो बाजी लगाकर देख लो । ”

शर्माजीने कहा—“बाजी लगानेकी बात कहते हो ? लोग सुनेगे तो हँसेंगे ? ”

“पागल लोग योही हँसा करते हैं ! हँसने दो । मुझे शरमानेकी जरूरत ही क्या ? किसी महाकविने ठीक ही कहा है ! ”

शर्माजीने हँसते हुअे कहा—“बेचारे संन्यासी राजु रूपांतरित होकर संन्यासी राव न बन जायें ! ”

किसीने कहा—“देखेगे न, अ.स.फायदेके सौदेको । ”

दूसरेने कहा—“बड़ा अच्छा सौदा हाथ लगा है । ”

तीसरे व्यक्तिने कहा—“शास्त्रीजी बेवकूफ थोड़े ही हैं ? ”

चौथेने कहा—“राजुकी मूँछे निकालनेके लिये बैठे-बैठे अिन लोगोकी बनायी हुयी योजना है यह ! ”

पाँचवेंने कहा—“राजुकी मूँछोंने अिन लोगोंका आखिर क्या बिगाडा ? बैठे-बैठे अिन्हें हजम नहीं होता है, अिसीलिअे कुछ-न-कुछ खुराफात सोचते रहते हैं । ”

अिस प्रकार तरह-तरहकी बातें करते रहनेके पश्चात सभी अपने-अपने घर चले गअे ।

लगभग अेक महीना हुआ है कि क्लबका वातावरण अिधर बिलकुल बदल गया है । सभी लोग अिसे अपनी व्यक्तिगत हानिकी भाँति अनुभव करने लगे हैं । संन्यासी राजु दिन-प्रति-दिन अिसी चिंतासे घुलने लगे । अुन सबमें शास्त्रीजी ही अकेले निश्चित रहे ।

संन्यासी राजु प्रति दिन क्लबमें आते और पूछते—“क्यों शास्त्रीजी, मूँछें कब मुँड़वाअेंगे ? ” शास्त्रीजी अुत्तर देते—“राजुजी ! अभी कोअी जल्दी नहीं है । यह सब तो हँसी-मजाकके लिये किया गया था । किन्तु यह भी सत्य है कि मौका आनेपर मूँछे भी ली अवश्य जाअेंगी । ”

अेक दिन राजुने मूँछें जरा कटवा ली थी । शास्त्रीजीने अुनकी ओर लाल-लाल आँखोंसे घूरकर देखते हुअे पूछा—“क्यों जी, मेरी खरीदी हुयी मूँछोको आपने अपनी अिच्छाके अनुसार कटवा डाला ? ”

राजुके मनमें अंक धक्का-सा लगा। अन्होंने अत्यन्त नम्रतासे कहा—
“मूँछें जरा अधिक घनी हो गयी थी। भद्दी मालूम हो रही थीं, असलिये थोड़ी-सी कैंची चलायी गयी। देखनेवालोंको बुरा न लगे, असलिये ऐसा कर लिया गया है।”

शास्त्रीजीने तैशमे आकर कहा—“रहने भी दीजिये ये भूल-जलूल बातें ! मैंने आपके पास मूँछोंको असलिये रख छोड़ा था कि जरा बड़ी और घनी हो जानेपर अन्हें कटवाऊंगा। आगेके लिये जरा ध्यान रखें अन्यथा अच्छा न होगा। पहले ही से मैं आपसे कह रखता हूँ।”

अपनेको दोष देते हुअे राजुने मनमे कहा— अस प्रकार मूँछोंका सौदा करनेमें मैंने भारी भूल की।

अतः अन्होंने आग्रहपूर्वक शास्त्रीजीसे कहा—“लीजिये, मेरी मूँछे ले लीजिये, जिससे अस प्रकारके बंधनोंसे अंक बारगी ही पिंड छूट जाये।”

हम दिन-प्रति-दिन शास्त्रीजीकी हँसी अुड़ाते हुअे पूछते—“क्यो शास्त्रीजी, तुम्हारे मूँछोके सौदेमे कितना फायदा हुआ है ?”

शास्त्रीजी भी अुसी प्रकार हँसते हुअे प्रत्युत्तर देते—“हाँ, हँसिये ! खूब हँसिये !! मुझे कोअी चिंता नही। मुझे तो असमे शत-प्रति-शत फायदा होनेकी ही संभावना है।”

दिन बीतते गये। अंक दिन दावत हुआ। अुस दिन अंक सुदर सिनेमाकी अभिनेत्रीका संगीत व अंक नर्तकीके नृत्यका प्रबंध भी था। संन्यासी राजुको नृत्य और संगीतसे अपार प्रेम है। अुनका नाम सुनते ही अुनकी बाँछे खिल अुठती है। नृत्य-संगीत भी न रहें, पर जहाँ दस औरतें अंकत्रित हो आनंद मनाती है, वहाँपर राजु अवश्य हाजिरी देते है। अुस दिन हमने निश्चय किया कि पहले हम सब लोग क्लबमे मिलें। अुसके बाद सभी अंक साथ वहाँसे संगीत-सभामे चलें। सब-के-सब समयपर आये। संन्यासी राजुने राजा-जैसा वेष बना लिया। अपनी मूँछोंकी सजावटमें आज अुन्होंने आवश्यकतासे अधिक दिलचस्पी ली। अुनपर अित्र भी लगाया। रेशमी वस्त्रोंसे अपनेको खूब अलंकृत किया।

अपनी पूर्व चिंताको भूलकर अधिक अतुसाह दिखाते हुअे राजुजीने कहा—“कहिअे, क्या हरअेक सज्जन तैयार है ! अभी चले या थोड़ी देर आराम करके जाया जाय ?”

शास्त्रीजीने राजुको आपाद-मस्तक अेक बार ध्यानसे देखा और कहा—‘यह राजुका वेष ही कैसा है ? क्या मेरी मूँछोंके आधारपर ये महायश वहाँपर अपनी धाक जमाना चाहते है ? ओफ् ! यह अिनका कैसा दुस्साहस है ? कहाँतक चुप रहा जाअे ! गरजन-भरी आवाजमें वे बोल अुठे—“अै संन्यासी राजा ! मुझे अभी सख्त आवश्यकता आ पड़ी है । मेरी अुन मूँछोंको निकलवा करके दे दीजअे ।”

हम सब चकित रह गअे । हमने सोचा कि राजुके दिलकी धड़कन बंद हो जाअेगी । असलअे अेक आदमी दौड़कर पानी लाया । राजुने चुपचाप अुसे पी लिया । कुछ देरके बाद वे होशमें आअे और दीन स्वरमें बोले—“कल अवश्य ही दे दूँगा ।”

“नही ! मुझे आज ही चाहअे ।”

“तो ठीक है । दावतके होते ही दूँगा । अभी समय भी नही है ।”

“कषमा कीजअे । मुझे अभी ही और जल्दी ही चाहअे । नहीं तो मुझे बड़ा घाटा होगा । अरे, दो मिनटमें हो जाअेगा दरबान ! जरा नाअीको तो बुला लाओ ।” शास्त्रीजीने ये बातें गंभीर होकर कही थीं । अधर राजुकी आँखे सजल हो अुठी । अुस हालतपर किसीको भी दया आ जाना स्वाभाविक ही था ।

नाअी आया । संन्यासी राजुको यज्ञ-पशुकी भाँति ले जाकर अेक कुर्सीपर बिठाया गया । नाअी मूँछोंपर साबुन लगाने लगा, लेकिन शास्त्रीजीने मना करते हुअे कहा कि बहुत सावधानीके साथ मूँछोंको कैचीसे काटा जाअे । शास्त्रीजी बगलमे खड़े होकर अेक कागज लअे अेक तरफकी मूँछके सभी वालोंको अुसमें अेकत्रित करने लगे । दूसरी ओरकी मूँछोंपर नाअी पानी लगाने लगा । शास्त्रीजीने नाअीको धमकी देते हुअे कहा—“बस करो, दूसरी मूँछ दो-चार दिनोंके बाद निकलवाअी जाअेगी ।” कलबके सभी मेम्बर आश्चर्यचकित होकर शास्त्रीजीकी ओर देखने लगे । राजुने अैसा अनुभव

किया कि मानों वह पक्काघातसे पीडित हों ! अनुकी स्थिति ऐसी हो गयी कि काटो तो खून नहीं ।

शर्माजीने कहा—“शास्त्रीजी ! आप यह बहुत बड़ा अन्याय कर रहे हैं ? थोड़ा तो रहम कीजिए ।”

राजू थोड़ी देरके बाद होशमें आये । वे अपने जीवनमें ऐसे कभी नहीं पछताये होंगे जैसे आज पछताये हैं । उन्होंने अत्यन्त दीनता-भरे स्वरमें पूछा—“शास्त्रीजी, ऐसा करना ठीक नहीं !”

शास्त्रीजीने बातको काटते हुअे अत्यन्त रोष-भरे शब्दोंमें कहा—“मैं कृपा करूँ ? आप ही लोग अन्तिम कीजिए । सारा माल अंक साथ लूँ तो क्या वह खराब नहीं हो जायेगा ? आजकी माँग अतनी ही है । फिर माँग आनेपर शेष आधी मूँछ ले लूँगा ।”

राजूकी आँखें डबडबा आयी । वे भराये हुअे स्वरमें बोले—“बाबू शास्त्रीजी ! मुझे इस तरह मत मारो । यह सौदा तय करते समय मेरी बुद्धि नष्ट हो गयी थी । इससे तो यही अच्छा है कि मेरी पूरी हजामत कराकर भेज दो । मैं तुम्हारे रुपये तुम्हें वापस लौटाऊँगा । तुम्हें और तुम्हारे पूर्वजोंको मैं कोटिश धन्यवाद दूँगा ।”

शास्त्रीजी यमराजकी तरह गरजते हुअे ऐसे बोले, मानो उन्होंने अपने जीवनमें कभी अपराध ही नहीं किया हो—“नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता । मेरा तो यह सिद्धान्त ही है कि बिना लाभका मैं कोअी सौदा ही नहीं करता ।”

हम सबको राजूकी हालतपर दया आयी । पर करे क्या ? राजूने सँभलते हुअे पूछा—“तो बताओ, कितना दूँ ?”

“दो सौ रुपये दो । अंक सौ रुपयेका मुझे मुनाफा होगा ।”

“यह तो बड़ा अन्याय है ।”

“तो छोड़ दो । माँग दो सौ तक है । दूसरेको देनेके बदले तुम्हीको देना चाह । अब तुम्हारी मर्जी ! मेरे पास आपकी मूँछोंकी माँग दो सौ तक की है । किन्तु चूँकि आप ही लेना चाहते हैं, अतः आपका प्राथमिकता दी जा रही है । यदि आप दो सौ रुपये नहीं देना चाहते हैं तो आपकी मर्जी !”

क्षण-भर सारा वातावरण निःशब्द रहा। उस सन्नाटेको तोड़ते हुए प्राण-त्यागके समय आत्म-समर्पण करनेवाले व्यक्तिकी भाँति राजु बोल अठे—“ठीक है, तुम्हारी मर्जीके मुताबिक ही होगा।”

शास्त्रीजीने कहा—“बहुत अच्छा।”

राजुने जल्दी-जल्दी दो सौ रुपयेका चेक लिखकर दे दिया। शास्त्रीजीने उसे अपनी जेबके हवाले किया और मूँछके बालोंकी पुड़िया राजुके हाथोंमें दे दी। राजू आगबबूला हो अठे। उस पुड़ियाको दूर फेंक दिया। मानो उसमें अनका सारा रोष अंकवित हो। अिसके बाद अुन्होंने अपनी दूसरी मूँछ भी निकलवा डाली। बहुत अधिक समय हो जानेके कारण हम सब वहाँसे चले गये।

बेचारे राजु श्मशान-वाटिकासे लौटनेवाले व्यक्तिकी भाँति मुँह लटकाकर वहाँसे चल दिअे।

शास्त्रीजीने गर्वका अनुभव करते हुअे कहा—“मैने कहा था न, अिस सौदेमें मै शत-प्रति-शत फायदा अुठाअूंगा।”

शर्माजीने क्रोध-भरे शब्दोंमें ललकारा—“हाँ, किया है कोअी बड़ा काम ! ” मानो अनका दिवाला निकल गया हो, अैसा अनुभव किया शर्माजीने।

संन्यासी राजु उस दिनसे लेकर आजतक फिर क्लबमें दिखाअी नहीं दिअे।

* * *

आप हैं आधुनिक तेलुगु-साहित्यके युग-निर्माता और जनसाधारणकी समझमें आनेवाली व्यावहारिक भाषाको साहित्यिक रूप देनेके लिये लड़नेवाले



महापुरुष। समाज-सुधारक, क्रान्तिकारी कविके रूपमें भी आपकी पर्याप्त ख्याति है। भाषा, रीति भावना व शैलीमें नये प्रयोगकर अनेक ही साथ कवि, नाटककार और कहानीकारके रूपमें आपने भावी पीढ़ीका मार्गदर्शन किया है। आपकी दृष्टिमें साहित्यका अद्देश्य कोअी प्रयोजन अवश्य होना चाहिये; अिसी अभिप्रायसे आपने समकालीन समाजके दुराचारोंको दूर करनेके लिये साहित्यको अनेक प्रबल

साधन बना लिया है। अध्यापक, दीवान, शिक्षावेत्ता तथा सुधारकके रूपमें आपने अपनी प्रखर प्रतिभाका अच्छा परिचय दिया है।

आपके “मुव्याल सरालु” (कविता-संग्रह), “कन्या शुलकम्” (नाटक) विशेष प्रसिद्ध हैं। “कन्या शुलकम्” अनेक सामाजिक नाटक हैं। अिसकी रचनाके द्वारा अप्पारावजीकी कीर्ति देशव्यापिनी हो गयी। गीत-रचनामें भी आप सिद्धहस्त हैं।

सुधार

“दरवाजा खोलो ! दरवाजा!”

दरवाजा नहीं खुला। अंक मिनट तक वह खड़ा रहा। कमरेकी घड़ीने अंक बजा दिया।

“कितनी देर की मैंने। मेरी बुद्धि घास चरने गयी थी। कलसे सावधान रहूँगा। अपनी पत्नीको छोड़कर मेरा मन वेश्याके गानमें मग्न हो गया है। अंक गीत भी मनको लुभा नहीं सका। औरतोंके हाव-भावोंपर दिल दौड़ा करता है ! नहीं तो गीतके समाप्त होने तक खुटचालीकी भाँति वहाँपर बैठना कैसी आदत है ? कोअी अवसर प्राप्त कर अुससे दिलकी कसर निकालनेकी लालसा क्यों है ? देखो, अभी तमाचे लगवा रहा हूँ। कलसे अुसका गीत सुनने नहीं जाऊँगा। यह निश्चित है। यही मेरा दृढ़ निश्चय है।.....जोरसे पुकारूँ तो सम्भवतः कमलिनी जाग अुठेगी। धीरेसे दरवाजा खटखटाकर नौकर रामको जगाऊँगा तो बिना किसी आहटके अुसकी बगलमें पहुँचकर शरीफ बन सकता हूँ।”

मनमें ऐसा निश्चय करके गोपाल रावने दरवाजेपर हाथ रखा ही था कि वह खुल गया। कमरेमें कोअी नहीं था। दरवाजा खोलकर देखा दालानमें दीप भी नहीं है। दालान पारकर शयन-गृहमें प्रवेश कर देखा तो वहाँपर भी चिराग जलता नजर नहीं आया। बिना आहटके कदम रखते

हुआे खाटके पास पहुँचकर पता लगाना चाहा कि कमलिनी जाग रही है या सो रही है ? किन्तु उस अन्धकारमे कुछ भी पता नही चल पाया । जैसे दियासलाओी निकालकर उसने सलाओी जलाओी । दियासलाओीके प्रकाशमें गोपाल रावने देखा कि खाटपर कमलिनी नही है । गोपाल रावका चेहरा फक् हो गया और हाथसे सलाओी नीचे गिर पड़ी । कमरेके घने अन्धकारके साथ-साथ उसके हृदयमे भी घना अन्धकार फैल गया । उसके मनमे तरह-तरहकी शंकाओे पैदा होने लगी और वे उसे और भी व्याकुल बनाने लगी । यह तो नही कहा जा सकता कि उसे अपनी बेवकूफीपर क्रोध आ रहा था, अथवा कमलिनीकी अनुपस्थितिपर, पर असह्य क्रोधावेशके कारण उसका मन अधिक विचलित हो गया था । उसने देहलीपर कदम रखकर देखा । तारोंकी चमकमे कोओी दास या दासी दिखाओी नही दी । गोपाल रावने निश्चय किया कि अन्हें फाँसीकी सजा ही अुचित होगी ।

गोपाल रावने पुनः कमरेमें प्रवेश करके दीपक जलाया और कमरेमें चारों ओर ध्यानपूर्वक देखा । किन्तु फिर भी कमलिनी कही दिखाओी नही दी । सडककी तरफके दरवाजेके पास पहुँचकर उसने उसे खोलकर देखा । वह नौकर राम मुँहमें चुस्ट दवाओे सिर अुठाकर तारोंको अेकटक देख रहा है । गुस्सेके मारे गोपाल रावने जोरसे उसे पुकारा—“हे राम ! अधर आओ ! ” नौकर राम चुस्ट फेंककर तेजीसे दौड़ता हुआ वहाँ आया ।

गोपाल रावने पूछा—“तुम्हारी माँ कहाँपर है ? ”

राम—“मेरी माँ, घरपर है । ”

“बेवकूफ कहीका ! तुम्हारी माँ नही, मालकिन कहाँपर है ? ”

“ओह ! माताजी ! और कहाँ रहेगी । घरमें सोती ही होंगी । ”

“वे घरमें नही है । ”

अिसपर राम भी घबरा गया । दरवाजेमे कदम रखते ही रामकी पीठपर दो घूँसे जम गअे ।—“बाबू ! मार दिया ! ” चिल्लाकर राम जमीनपर गिर पड़ा ।

गोपाल राव वैसे हृदयसे कठोर नही थे, अतः तुरन्त अन्हें अपनी भूल मालूम हो गओी । वे अपनी भूलपर पश्चात्ताप करने लगे । अन्होंने रामको

हाथका सहारा देकर अुठाया। अुसकी पीठपर हाथ फेरते हुअे मनमें सोचने लगे कि मैंने आज पशु-जैसा व्यवहार किया है। वे नौकरको घरके भीतर ले गअे।

गोपाल राव कुर्सीपर बैठे और दीनताके साथ नौकरसे पूछने लगे—
“राम ! मेरी स्त्री आखिर कहाँ चली गअी है ? ”

“बाबू ! यह सब किस्सा जादू जैसा मालूम होता है। ”

“कही मायके तो नहीं गअी है ? ”

“यह भी हो सकता है, बाबू ! औरते नाराज हो जानेपर अक्सर बिना कहे अपने मायके ही चली जाया करती है, और शिक्षिता होनेपर क्या हो सकता है, यह तो आप ही जानें। ”

“शिक्षाका मूल्य तुम्हें क्या मालूम ? ” अैसा कहते हुअे गोपाल राव अपनी कुहनियोंको मेजपर टिकाकर कुहनियोंके बीच सिर रखे कुछ सोच ही रहे थे कि अुन्हे मेजपर कमलिनीकी लिखावटकी अेक चिट्ठी दिखाअी दी। गोपाल राव अुद्धिग्नताके साथ अुसे पढ़ने लगे। अुसमें लिखा था—

“महाशय ! ”

अिस शब्दको पढ़कर गोपाल राव जरा चौंके और अुनके मुँहसे निकल पड़ा—हाँ, ‘प्राणनाथ ! ’ के स्थानपर ‘महाशय’ आ गया है।

राम—“हाँ, क्या बाबू ! प्राण चला गया ? ”

“मूर्ख ! चुप रहा। ”

पत्रमे आगे लिखा था—

“महाशय ! दस दिन हुअे, रातमें आप घर ही नहीं आते थे। आप कहा करते थे कि मीटिंगोंमे जा रहा हूँ, या जनताके कल्याणार्थ आन्दोलनमें निद्राहार छोड़कर सेवा करने जा रहा हूँ। लेकिन मैंने अपनी सहेलियों द्वारा वास्तविक समाचार जान लिया है। मेरे घरपर रहनेसे आपको बराबर झूठ बोलना पड़ रहा है। मैं यदि अपने मायके जाअूँ तो आपको पूर्ण स्वतन्त्रता मिल जाअेगी और असत्य भाषण करनेकी आवश्यकता ही न रह जाअेगी। आपसे प्रति दिन असत्य भाषण करानेकी अपेक्षा आपके मार्गमें रोड़ा न

बनना ही अंक सतीका पतिके प्रति कर्तव्य है। मैं आजकी रातको मायके जा रही हूँ। खुश रहियेगा। खर्चके अतिरिक्त कुछ भी बचे, भोजनेकी कृपा कीजियेगा।”

पत्र पढ़ना समाप्तकर गोपाल रावने कहा—

“मैं पशु हूँ, आदमी नहीं हूँ।”

“क्यों बाबू! आप अभी बात करते हैं?”

“मैं निरा पशु हूँ!”

गोपाल रावके अस वाक्यको सुनकर नौकर राम बड़ी ही प्रयत्नपूर्वक अपनी हँसीको रोक सका।

“मेरी पत्नी गुणवती, विधानिधि, विनयशीला है। उसने मेरी दुर्बुद्धिका मुझे अचित्त दण्ड दिया है।”

“क्या किया है, बाबूजी!”

“वे मायके गयी है—लेकिन तुम्हें मालूम हुआ बिना कैसे गयी?”

राम दो डग पीछे हटते हुआ कहने लगा—“बाबूजी, शायद मैं उस समय सोता हूँगा। आहत होनेसे मैं जाग पड़ता और आपको बताता। असलिये माताजी चुपचाप चली गयी है। बाबू! आखिर वह तो औरत ठहरी। यदि औरत बिना पतिसे कहे मायके जानेका नाम ले, तो दो-चार चपत लगाकर उसे ठीक कर दिया जाना चाहिये। नहीं तो पुरुषोकी भाँति चिट्ठी-विट्ठी लिखकर क्यों न जाना चाहिये?”

“अरे मूर्ख! अश्वरकी सृष्टिमें अतृप्त वस्तु शिक्षित स्त्री रत्न ही है। शिवजीने पार्वतीको आधी देह बाँटकर दे दिया था—अंग्रेज पत्नीको ‘बेटर हाफ’ (Better Half) कहते हैं। अतः सबका यही अर्थ है कि पत्नी पतिसे भी उत्तम है। आ गया समझमें?”

“मेरी समझमें ये बातें कैसे आयेगी, बाबूजी!” राम अपनी हँसीको रोक नहीं सका।

“तुम्हारी लड़की स्कूल जा रही है न? शिक्षाका मूल्य तुम्हें भी मालूम हो जायेगा। उसे रहने भी दो, लेकिन तुम्हें या मुझे अभी चन्द्रवरम् जाना होगा! मैं चार दिनतक यहाँसे हिल-डुल नहीं सकता हूँ। तुम तो बाप-दादोके समयके नौकर हो। तुरन्त कमलिनीको लेते आओ। अनुस क्या कहना है, मालूम है?”

“हाँ, कहूँगा कि बाबूजीने मेरी पीठकी मरम्मत की है, माताजी, अब आ जाओ। ”

“पीटनेकी बात भूल जाओ। उसके लिये पुरस्कार-स्वरूप दो रुपये दूँगा। लो, फिर कभी यह बात न निकालना। भूलसे भी कमलिनीसे न कहना। समझा ! ”

“कभी नहीं कहूँगा, बाबूजी ! ”

“तुम्हें जो कुछ कहना है, वह मैं तुमसे कहता हूँ, सुनो। तुम अनुसे जाकर कहना कि पंडितजीकी अकल अब ठिकानेपर आ गयी है। वे अब कभी वेश्याओकी बातोंमें न आओगे। रात्रिके समय घर छोड़कर कहीं नहीं जाओगे। उनका यही अन्तिम निश्चय है। समझा। तुमसे अन्होंने कृपा माँगी है। कृपा करके उनकी भूलोंको कहीं प्रकट न करके दो-तीन दिनमें लौटनेके लिये भी कहा है। तुम्हारे बिना अन्हे अक-अक दिन अक युगके समान मालूम हो रहा है। ये सब बातें बड़ी सावधानीके साथ अनुसे कहना समझा ? ”

“हाँ, बाबूजी ! समझमें आ गया ! ”

“तुम वहाँपर जाकर क्या कहोगे, जरा अभी मुझसे कहो तो ! ”

राम सिर खुजलाते हुअे “हाँ क्या कहूँगा बाबूजी ! वह सब मुझे मालूम नहीं। बाकी अतना अवश्य मैं कहूँगा— मालिकिन ! मेरी बात सुनो। बड़ा अनुभवी हूँ। औरतोको मालिककी आज्ञाओका पालन करना ही चाहिये ! नहीं तो हमारे पंडितजी भी अक रखेलीको घरपर ही बुलानेवाले हैं। यह बात मैं आपके कानमें डाल देता हूँ। नगरमें स्वर्ण प्रतिमा-सी अक वेश्या आयी है। पंडितजीका मन अुससे मिलनेको छटपटा रहा है। फिर आगे आपकी अच्छा ! ”

“अरे मूर्ख ! ” कहते हुअे गोपाल राव क्रोधित होकर खड़े हो गये।

नौकर राम चुपचाप चोरकी भाँति कमरेसे बाहर भाग गया और अितने ही में खाटके नीचेसे अमृत निष्यदिनी हँसी तथा कर-ककणोंकी मधुर ध्वनि गूँज अुठी।

१३.

औरतका मूल्य

—श्रीमती कनूपति वरलक्ष्मम्मा

आप बहुत समयसे कहानियोंकी रचना करनेवालोंमेंसे अेक हैं। आपकी ‘ओह’ (शपथ) नामक कहानी हिन्दीमें अनूदित होकर विशेष प्रशंसा



प्राप्त कर चुकी हैं। नारी-जीवनको यथार्थ रूपमें समझकर सुन्दर शिल्पके साथ नारीकी समस्याओंपर कहानियाँ लिखनेमें आपको जो कुशलता प्राप्त है, वह बहुत कम लोगोंको प्राप्त हुआ है। आज भी महिलाओंकी सेवा करते हुआ आप नारी-समाजकी अुन्नतिकी शुभा-कांक्षिणी हैं। आपकी अन्य कहानियोंमें

“ पिच्चनुपुच्चुकुन्न मरुनाडु ”, “ मूडु तीमीनालु ” और “ वरद राजेश्वरी ” अुत्तमोत्तम हैं।

* * *

औरतका मूल्य

जहाँगीर बादशाहके राज्य-कालके दिन हैं। दिल्ली नगरके बाहर मजदूरोंकी बस्तीमें अक मुस्लिम नौजवान कासिम, उसकी पत्नी और माता निवास कर रहे हैं। वह अक गरीब परिवार है। दिनभर कड़ी मेहनत करनेसे ही अककी रातकी रोटी मिलती है। कासिमकी माँ बूढ़ी है। वह ठीक तरहसे चल-फिर भी नहीं सकती। तो फिर क्या खाके काम कर सकेगी। कासिमकी औरत नव-यौवना है। मुस्लिम सम्प्रदायके अनुसार वह बाहर कदम नहीं रख सकती। अर्थात् अकसे परदेमें ही रहना होता है। कासिमकी कमाली ही अक खानदानके निर्वाहका अकमात्र आधार है। अक जूनका खाना भी अकने मुश्किलसे मिल पाता है। लेकिन अक युवा-दम्पत्तिका अक दूसरेपर अगाध प्रेम है। कासिम जबतक घरपर रहता है, तबतक वे दोनों तोता-मैनाकी भाँति हँसते-मुस्कुराते आनन्दके साथ समय बिताते हैं।

फातिमा अपूर्व सुन्दरी है और गुणवती भी। वह पतिको पंच-प्राणोंसे अधिक मानती है। अकसे हाथोंमें चाँदीके कड़े हैं। कानोंमें पीतलके कर्ण-कुण्डल हैं। फटी-पुरानी साड़ी पहनकर भी वह पतिसे कभी असंतुष्ट नहीं रहती। दूसरोंको अश्वर्यपूर्ण जीवन बिताते देखकर अकपर वह आश्चर्य नहीं करती। अकके अभावमें दुखी नहीं दिखायी देती। अककी चिन्ता तक नहीं करती। सुखका आधार व मूल कारण भोग-विलास नहीं, वरन् तृप्ति है !

अस तृप्ति और संतुष्टि द्वारा वह ऐसा अनुभव करती है, मानो वह समस्त प्रकारके सुखोका भोग कर रही है। कामपर गये हुअे पतिके लौटनेमें यदि देर हो जाती है तो वह देहलीपर बैठकर पतिके आनेकी बाट जोहती रहती है। कासिम भी कामके पूरा होते ही अेक मिनट भी वहां ठहरे बिना घर पहुँच जाता है। अपने बेटे और वहूका परस्पर अनुराग देखकर बूढ़ी अपनेको भाग्यशालिनी मानकर गर्वसे फूली नहीं समाती।

[२]

दिल्ली नगरके कोतवालका नाम सादुल्ला खाँ है। जनताके समस्त अपराधोंका अुचित रीतिसे फँसलाकर दण्ड देनेवाला वह अेक अधिकारी है ! ओहदेकी दृष्टिसे वह न्यायाधीश है, लेकिन स्वभावसे नाममात्रके लिये भी अुसके पास न्याय-प्रियता नहीं है। वह कठोर, क्रूर, जुआँखोर, और वेश्या-लोलुप है। कही कोअी भी मुंदर नारी यदि अुसकी दृष्टिमे पड़ गअी, तो फिर अुमके स्त्रीत्वकी रक्पा नहीं होती ! तुरत ही वह अुमके जनानखानेमें पहुँचा दी जाती है। दुष्ट अधिकारीके जमुचर भी अकसर दुष्ट ही हुआ करते हैं। अिसी सिलसिलेके अनुसार गुप्तचर दलके सदस्योंका भी यह पेशा ही हो गया था कि वे चारों तरफ घूम-घूमकर खूबसूरत ओरतोंका पता लगावे और अुन्हे अपने अधिकारीके हाथों सौपे। अेक दिन जासूस दलके अेक आदमीने फातिमाको देखा। अुस सौंदर्यवतीको देखकर वह मुग्ध हो गया और अुसने अपने अधिकारीको अिसका पता दिया। कासिमने अिस कार्यसे प्रसन्न होकर अिस जासूसकी गिनती अपने प्रिय पात्रोंमे करनी आरम्भ कर दी। अुस दिनसे कासिमकी पत्नी फातिमाको फँसानेका प्रयत्न किया जाने लगा। दूतोंने कासिमके घर पहुँचकर तरह-तरहका लालच दिखाकर फातिमाको फँसाना चाहा। वे कासिमको समझाने लगे—“अुन्नीस-बीस वर्षकी अुस नवयौवना रूपसीको कोतवाल साहबको सौपकर वह अपार धन-संपत्ति प्राप्त करे। अुसे ये लालच बताअे जाते कि अैसा करनेसे तुम लोगोंकी गरीबी दूर होगी। आरामसे दिन कटने लगेगे। पैसा मिलनेपर जिदगीका लुत्फ अुठाया जा सकता है।” जासूस पहले प्रलोभन देकर जब अुन्हें राजी नहीं ते. ... ९

कर सके तो अन्होंने कासिमको धमकाना शुरू किया— “तुम मान जाओगे तो तुम्हें कम-से-कम धन तो मिल जायेगा, नहीं मानोगे तो धन भी नहीं मिलेगा और न औरत ही।” अउ लोगोंकी बाते सुनकर फातिमाका पारा चढ़ गया। वह फटकारने लगी—“छिः! मैं अउसका चेहरा तक देखना नहीं चाहती। अउसके धनकी हमें जरूरत नहीं।” कासिमने भी डाँटते हुअे कहा “हमें अउसके सुख-भोगोंकी जरूरत नहीं है। हम अतने तुच्छ नहीं कि पैसेके पीछे अपनी आबरू-अज्जतको बेचे। मजदूरी करनेमें ही हमें आराम है।” कासिमकी बूढ़ी माँने आग बरसानेवाली आँखोंसे देखते हुअे फटकार बतायी और कहा—“अबें दोजखके कुत्ते! निकल हमारे यहाँसे, हम तुम लोगोके चेहरे तक देखना नहीं चाहती। तुम लोगोके चेहरे जल जाअें! अल्लाहसे जरा डरो!” गालियाँ देने लगी। जब साम-दाम-भेद आदिके अुपायोसे काम नहीं चला तो सादुल्ला खाँ के दूत अपना-सा मुँह लेकर वापस लौटे।

अस दिनसे कासिमका खानदान सदा चिंतित ही रहने लगा। अस खानदानमें वह पहलेकी-सी आनंदपूर्वक चहल-पहल अब नहीं रह गयी थी। वे हमेशा यही अनुभव करते कि अउनके अूपर काल मँडरा रहा है और यह पूरा खानदान जल्दी ही अेक गहरे गर्तमें गिरने जा रहा है। अउनकी मुहब्बतके स्थानपर विषादने डेरा डाला। वे हँसी-खुशियाँ और मुस्कुराहटें गायब हो गयीं। किसीको भी अब खाना नहीं रुचने लगा। फातिमा हमेशा रोती रहती, कासिम यही सोचा करता कि अस नर-राक्षससे कैसे अपनी पत्नीकी रक्षा करे? बूढ़ी अपने बेटे-बहूकी अस विपत्तिपर आठ-आठ आँसू बहाती! कासिमने फातिमाको समझाया। पर वह अउसकी गोदमें सिर रखकर घंटों रोया करती। कासिम अउसके दुखको देख नहीं पाता। लेकिन विवश होकर चुप बैठनेके सिवा वह कर भी क्या सकता था। कोतवालका सामना करनेकी ताकत अस गरीब मजदूरमें कहाँ? वह अेक पलको अेक युगके समान बिताते हुआ सदा व्याकुल रहता कि न मालूम कब आ करके अउसकी औरतको सादुल्लाखाँके नौकर अुठा ले जाअेंगे। अेक दिन कासिम कही मजदूरी करने गया। बूढ़ी बाजार गयी थी। अस समय सादुल्लाका अेक नौकर अर्शाफियोंसे भरी अेक थैली लेकर आया और फातिमाके

सामने रखते हुअे असने कहा—“अशर्फियोंसे भरी अस थैलीको तो जरा देखो ! तुमने अपने जीवन भरमें अससे पहले कभी भी अतनी अशर्फियाँ न देखी होंगी ! अस अभाग मजदूरके साथ रहनेसे तुम्हें सुख ही कहाँ मिलेगा ! कोतवाल साहबके पास आ जाओगी तो शहजादीकी तरह रहोगी और सुख भोगोगी । अन्होंने तुम्हें बुलाया भी है ! मेरी बात सुनो ! ” फातिमाका चेहरा क्रोधके मारे लाल हो गया । वह अकदम डपटकर बोली—“बदमाश कहोका ! तुम्हारी अशर्फियाँ यहाँ किसे चाहिये ? मेरे शौहरका दारिद्र्य तुम्हारे आकाकी दौलतसे मुझे अधिक ज्यादा पसन्द है । तुम्हारा आका नीच, बदमाश और नर-राक्षस है ! आँखोंमें पडनेवाली हरेक स्त्रीका सतीत्व नष्ट करनेवाला चाण्डाल है । मेरे शौहरकी लियाकतके सामने तुम्हारे कोतवालके अधिकार और असका अश्वर्य तृणके समान है ।” अतनेमे फातिमाकी सास आयी । वह आगबबूला हो अुठी । असने अशर्फियोंको बाजारमें फेंकते हुअे दुतकारा—“तुम आदमी नहीं, जानवर हो, तुम्हें क्या माँ-बहनका विचार नहीं होता ! पराअी औरतोंके पीछे क्यों पडते हो ! जा यहाँसे वरना खैर नहीं ! ” नौकरने वहाँसे जानेकी तैयारी करते हुअे धमकाया—“मैंने लाख तरहसे समझाया, तुम सुनती ही नहीं हो ! कोतवालसे दुश्मनी मोल लेना शेरसे शत्रुता करनेके समान है । कोतवाल साहबने निश्चय कर लिया है कि सुबह होनेसे पहले ही वह आ करके खुद तुम्हें ले जाअेंगे ! तब यह देखना है कि तुम्हारी मदद कौन करता है ! ”

कासिमके घर आनेपर असकी माँ और औरतने असे सारी घटना सुनाअीं । कासिम और फातिमाने निश्चय कर लिया कि अुनके दांपत्यकी अंतिम घडियाँ आ गयी हैं । सूर्यास्त होनेके पहले ही अस महानगरीको छोड़ अन्होंने अन्यत्र चला जाना चाहा । लेकिन पासमें अंक कौड़ी भी नहीं है । बिना पैसेके गाड़ी या कोअी सवारी भी नहीं मिल सकती । पैदल चले तो सादुल्लाके नौकरोंकी आँखोंसे बचना मुश्किल है । असका कोअी भी नौकर देख लेगा तो कासिम और असकी माँको कतल कर देगा और फातिमाको सादुल्लाके जनानखानेमें पहुँचा देगा ! कासिमकी माँने अपने कुलके मौलवीके पास जाकर आरजू-मिन्नत भी की कि वह अुनकी रक्षा करें । लेकिन असने बताया कि सादुल्लाका सामना कोअी नहीं कर सकता है । कोतवालके

मामलेमे तो बादशाहके द्वारा ही न्याय मिल सकता है। किलेके बाहर लगी घंटीकी जंजीर खीचकर बजाओ तो तुम्हारी प्रार्थना सुननेके लिये बादशाह खुद आयेगे। उस बूढ़ीने किलेके द्वारपर पहुँचकर घंटी बजानेका निश्चय किया। मजदूरोकी वस्तीसे बादशाहका किला दूर है। फिर भी वह पैदल ही वहाँ पहुँची। उसे भूख सताने लगी थी। वह बुढ़िया प्यासके मारे परेशान थी, लेकिन सामने बड़ा कर्तव्य था ! फिर भी समस्याका हल निकालना ही था।

[३]

मुगल चक्रवर्तियोंमें न्याय-प्रियताके लिये विख्यात जहाँगीर बादशाह अपनी प्रेयमी नूरजहाँसे विनोद-वार्तालाप कर रहे थे। इसी बीच दुर्गके बाहरकी घंटी बज अठी। न्याय-प्रिय बादशाह चौंक अठे। अपनी बेगमसे विना कुछ कहे वे किलेके दरवाजेपर आ खड़े हुअे। घंटीके पास अक बूढ़ी खड़ी हुअी थी। उसने बादशाहको सामने देख झुककर सलाम किया। बादशाहने उस औरतसे पूछा—“तुम्हारी क्या शिकायत है ? ” बूढ़ीने निर्भीकतासे जवाब दिया—“आप जैसे अन्साफ-पसन्द बादशाहोंके राज्यमें भी हम जैसे गरीबोंकी तकलीफोंका अन्त नही दिखायी देता।” बादशाहने पूछा—“तुम्हारी तकलीफें क्या हैं ? ”

बूढ़ीने कहा—“औरतोंकी आबरूकी रक्षा करना भी मुश्किल हो रहा है ! हमारी आबरू अतारनेके लिये बदमाश तैयार हो गअे हैं ! ”

बादशाहने अुद्विग्न होकर पूछा—“कौन है वह नीच ? ”

“आप हमारी रक्षा नही करेगे तो हम जिन्दा नहीं रह सकते। आपने लोगोंकी शिकायत सुननेके लिये घंटी लगवायी। लेकिन अन्याय और अत्याचार हो ही रहे हैं। ”

बादशाहने कड़ककर पूछा—“वह अन्याय क्या है ? ”

बूढ़ी—“जहाँपनाह ! मेरे अकमात्र पुत्र है। ”

बादशाह—“हाँ ! ”

बूढ़ी—“मेरी बहू रूपवती है। ”

बादशाह—“अँ ! ”

बूढ़ी—“वह पतिव्रता है।”

बादशाह—“तो तुम भाग्यशालिनी हो ! ”

बूढ़ी—“भाग्यशालिनी होनेसे फायदा क्या है ! मैं उसकी रक्पा नहीं कर पा रही हूँ। आज अंक दिनके लिये आप उसकी रक्पा करेंगे तो बड़ी कृपा होगी। कल शामसे पहले ही उसके चाँदीके कड़े बेचकर हम किसी दूसरे गाँव चले जाओगे। जहाँपनाह ! उस दुष्टके हाथोंमें पड़नेसे मेरी बहूकी रक्पा कीजिये। सबरे होते-होते हम इस बेअिन्साफ शहरको छोडकर कहीं और चले जाओगे।” यह कहकर बूढ़ी फूट-फूटकर रोने लगी।

बादशाहने पूछा—“वह दुष्ट कौन है ? साफ-साफ क्यों नहीं बताती ?”

बूढ़ीने जवाब दिया—“और कोअी नहीं, वही कोतवाल सादुल्ला खाँ ! आजकी रात यदि हम अपनी बहूको उसके घर नहीं भेजते तो वही खुद रात्रिको आ करके जबरदस्ती उसे अपने घर ले जानेवाला है। मेरी बहू भयभीत हो अन्न-जल छोडकर छटपटा रही है। मेरा बेटा पागल-सा हो गया है।’

बादशाहने बूढ़ीको ढाढस बँधाया और कहा—“तुम्हारी बहूकी अिच्छा न हो तो वह कैसे ले जाओगा।”

बूढ़ीने कहा—“वह ले जानेपर तुला हुआ है। अशर्फियोंका लोभ दिख्वाकर वह मेरी बहूका सतीत्व लूटना चाहता है। लेकिन मेरी बहू साहसी और पतिव्रता है। वह उस दुष्टके हाथोंमें पड़नेके पहले ही आत्महत्या करना चाहती है। मेरा पुत्र उसे छोडकर जीवित नहीं रह सकता है। वही मेरा अंकमात्र लड़का है। जहाँपनाह ! मुझपर दया कीजिये। इस विपत्तिसे मुझे अुबारिये ! जिन्दगीभर मैं आपकी अंहसानमद रहूँगी !”

बूढ़ीकी वाते सुनकर बादशाहका दिल पिघल गया। उसकी आँखोंसे आँसू बहने लगे। बादशाहने रूमालसे अपने आँसू पोछे। बादशाह सोचने लगे—लोगोंके अपराधोंका फैसलाकर अुन्हे दण्ड देनेवाले कोतवाल ही यदि इस तरहसे नीच कामोंपर अुतर आँ तो बस हो चुका ! अिन्साफ-पसन्द बादशाहके नामसे मशहूर मेरे राज्यके अधिकारी ही यह पाप-कार्य कर रहे हैं। अंक साध्वी तथा पतिव्रता नारीकी तकलीफको दूर न कर सकनेवाला मेरा चक्रवर्तीत्व ही फिर किस कामका ? अिसी अुधेड़बुनमें बादशाह बहुत

देर तक वहीं विचारमग्न मुद्रामें खड़े रहे। विचारोंकी गहनताके कारण महान विपत्तिमें पड़ी छटपटानेवाली अुस बूढ़ीके मनको सान्त्वना देनेके लिअे थोड़ी देरतक बादशाहके मुंहसे अेक शब्द भी नहीं निकल सका। अिसपर बुढ़ियाको गुस्सा आ गया। बादशाहको कोअी जवाब न देते देख वह बोल अुठी—“गरीबोंकी शिकायते अल्लाह तक नहीं सुनता है। मनुष्योंकी फिर बात ही क्या? अैसे लोग जनताकी शिकायत सुननेका दम्भ भरकर घंटियाँ बँधवाते है। लेकिन अुससे फायदा क्या!” यह कहकर बुढ़िया जाने लगी। बादशाहकी विचार-समाधि भंग हुअी। वे बोले—“नानी! तुम्हारा घर कहाँपर है?” बूढ़ीने जवाब दिया—“शहरके अंतिम छोरपर मजदूरोंकी बस्तीमे!” यह कहकर वह चली गअी। बादशाह अेक गंभीर साँस लेकर महलमे गअे।

[४]

रातके नौ बजेका समय है। दिनभर काम करके मजदूर थके-माँदे घर लौटे और जहाँ-तहाँ थकान मिटानेके लिअे लेटे पड़े है। लेकिन कासिम, अुसकी पत्नी और माता जागते हुअे अिस आशंकासे परेशान हैं कि बादशाहसे आरजू करनेपर भी अुन्होंने कोअी हामी नहीं भरी। अब सादुल्लाखाँके आनेके भयसे बिना खाअे-पिअे वे चौकन्ने होकर बैठे हैं। प्रति क्षण अुनके मनमें यह आशंका बनी हुअी है कि न जाने वे कब कालरूपी सादुल्लाखाँके शिकार बन जाअेंगे।

अितने ही मे घोड़ेकी टापोंकी आवाज आअी। अेक आदमी घोड़ेपरसे अुतरकर बुढ़ियाके घरका दरवाजा खटखटाने लगा। भीतर बैठे हुअे कासिम-परिवारके सभी सदस्य परिस्थितिकी गंभीरताकी आशंकासे अेक दूसरेसे लिपटे हुअे है। अिधर सादुल्ला खाँने कडककर द्वार खोलनेका आदेश दिया। अब कोअी अुपाय न पाकर रोती हुअी बुढ़िया आअी और अुसने दरवाजा खोला। नशेमे चूर सादुल्लाने बुढ़ियाके गालोपर चार-पाँच चपतें लगाअीं और कासिमके पास पहुँचकर अुसे जूतेसे लात मारी। कासिम जब दूर जा गिरा तो सादुल्ला खाँ फातिमाको पकडनेके लिअे अुसकी ओर लपका। फातिमा दहाड़ें मार-मारकर रौने लगी। अितने ही में कासिम अपने सारे साहसको बटोरकर सादुल्ला और फातिमाके बीच आकर खड़ा हो गया।

सादुल्ला क्रोधके मारे अन्मत्त हो रहा था। उसने कासिमको बुरी तरह पीटना शुरू किया। किन्तु कासिमने सादुल्लाका हाथ अपनी पत्नीके शरीरपर नहीं पड़ने दिया। फातिमा अपने पतिके शरीरसे लिपटी रही। सादुल्लाका गर्जन पास-पड़ोसवाले घरोंके लोग सुनते रहे। लेकिन कोतवाल साहबका सामना करनेकी ताकत उस गरीब जनतामें कहाँ? सामना करे भी तो कल अुनपर अत्याचार और हमला शुरू होगा। इसलिये सब लोग भयभीत हो चुप रहे। झोपड़ीके भीतरसे आनेवाले करुण क्रंदनकी आवाज बाहरवाले सभी लोगोंके कानोंमें आती रही। बाहर सादुल्लाका नौकर घोड़ेको सँभाले खड़ा था, इसी बीच कोअी अज्ञात व्यक्ति जल्दीसे आया और उस झोपड़ीके चारों तरफ घूमने लगा। सादुल्लाके नौकरने अुम आगंतुक व्यक्तिको देखा और डराते हुअे कहा—“तुम कौन हो और कहाँसे अधिर टपक पड़े हो? भीतर कौन है, मालूम है तुम्हें? कोतवाल साहब सादुल्ला खाँ हैं। भीतर जाओगे तो तुम्हारे प्राणोंकी खैर नहीं। तुरंत यहाँसे चले जाओ।” उस अज्ञात व्यक्तिकने बिना कुछ बोले सादुल्लाके नौकरके गालपर जोरसे अेक चाँटा मारा और घोड़ेको झोपड़ीके पास ले जाकर खड़ा किया। उसपर चढ़कर वह छतपर जा पहुँचा। छतके अुड़े हुअे पत्तोके कारण बन जानेवाली दरारसे वह अतरा और कासिमको हटाकर फातिमाके हाथको खीचनेवाले सादुल्ला खाँके सामने वह डटकर खड़ा हो गया और गभीर वाणीमें बोला—“क्यों रे बदमाश सादुल्ला, इस तरहके नीच काम करनेका साहस तुम्हें कैसे हुआ?” यह कहता हुआ वह सादुल्लापर टूट पड़ा। अपने सामने प्रत्यक्ष बादशाहको देखकर सादुल्लापर बिजली गिर पड़ी। उसके सभी अंग ढीले पड़ गअे और वह जडसहित कटकर गिरनेवाले वृक्षकी भाँति जमीनपर आ रहा। उसका मुँह बद हो गया। आँखे विवर्ण हो गअी। शरीरके भीतर दिल अभी धड़क रहा था। बादशाहको बहुत अधिक क्रोध आ रहा था। वे मारे क्रोधके दाँत पीस रहे थे। अुन्होंने सादुल्लाको अेक लात मारी। उसकी बाँहको अपने मजबूत हाथोंसे कसकर पकड़ा और अपने साथ चलनेका आदेश दिया। सादुल्ला अपनी शक्तिको बटोरकर अुठ खड़ा हुआ और काँपती हुअी मुद्रामे बादशाहके पीछे आकर खड़ा हो गया। बादशाह अुसे झोपड़ीसे बाहर खीच लाअे और

और अन्होंने अंक लम्बी रस्सी अुसको कमरसे बाँध दी तथा अुस रस्सीके दूसरे छोरको घोड़ेकी पिछली टाँगसे बाँध दी। घोड़ेपर बादशाह खुद सवार हुअे और चाबुक लेकर घोड़ेको सकेत किया। बादशाह घोड़ेपर सवार होकर जा रहे हैं और अुनके पीछे घोड़ेकी टाँगसे बँधा सादुल्ला तेजीसे दौड़ता जा रहा है। पल-भरमे घोड़ा आँखोंसे ओझल हो गया।

[५]

प्रातःकालका समय था। अिन्साफ-पसन्द जहाँगीर बादशाहने नियत समयसे पहले ही दरबार भरवाया। मंत्री, सामत, सेनापति, अन्य सरकारी अफसर, सिपाही अपने-अपने स्थानपर बैठे बादशाहकी आज्ञाकी प्रतीक्षामे थे। बादशाह गद्दीपर बैठे। अितनी जल्दी दरबार क्यों बुलाया गया है, कोअी नही समझ पाया। बादशाह भी प्रमन्नमुख नही है। शायद रातकी वह भयकर घटना बादशाहके मनको विकल बना रही है। अुनके चेहेरेकी आभा रक्तिम है। आँखे रोषसे भरी किसी भयंकर परिणामकी सूचना दे रही है। चक्रवर्तीकी अप्रसन्न मुखमुद्राको देख सभी शंकित अेव भय-विह्वल हो बैठे रहे। बादशाहने अंक बार सारी सभाको निहारा और सेनापतिको आदेश दिया कि वह अपराधीको अुपस्थित करे। अिस बीच बादशाहकी आज्ञासे फातिमाकी बूढ़ी सास आदरके साथ अन्दर आ गयी और अुचित आसनपर बिठा दी गयी थी। अिन दृश्यो व आदेशोंको देखकर सभासद आश्चर्यचकित हो अपराधीके बारेमे मनमे तरह-तरहकी वाते सोच रहे थे। अुसी समय घोड़ेके पीछे दौड़नेके कारण घिसटनेसे जिसके सारे शरीरसे खून चू रहा हो और बेड़ियोंसे जिसके हाथ बँधे हुअे हो अैसे अश्रुसिक्त नेत्रोंसे नतमस्तक सादुल्ला खाँको बादशाहके सम्मुख अुपस्थित किया गया। लोग चकित हो अपने मनमे प्रश्न करने लगे—“प्रति दिन सैकड़ो अपराधियोंको दण्ड देनेवाला सादुल्ला ही आज अपराधी है!” यह तो सचमुच ही आश्चर्यकी बात है। साग दरबार कुछ देर तक स्तम्भित हो मौन रहा। कुछ निमिष तक सभामे गभीरताका वातावरण फैला रहा। सभी सदस्य बादशाहकी तरफ अपनी दृष्टिको केन्द्रित करके अुनके आदेशकी प्रतीक्षा करने लगे। अितनेमे दिल दहलानेवाली गंभीर ध्वनिमें

जनताको संबोधितकर बादशाह बोल अठे—“अुम कोतवाल सादुल्लाको कल रात्रिमें अेक पतिव्रताका सतीत्व लूटनेका प्रयत्न करते हुअे मैंने अपनी आंखोंसे देखा है। अुसके बलात्कारसे सारा परिवार त्रस्त था। मैंने अिसे बन्दी बनाकर घोड़ेकी टाँगोंसे रस्सी बाँध दी और अिसे अपने साथ ले आया। अिसलिअे अिस अपराधीके लिअे पैरवी करनेकी जरूरत नहीं। जनताकी तकलीफोंको दूर करनेके लिअे ही मैंने दुर्गके बाहर घंटी बँधवायी है। मेरे राज्यमें जनताके अपराधोंका पता लगाकर अुन्हें अुचित दण्ड देनेके लिअे मैंने जिस अफसरको नियुक्त किया, अुसीने अेक पतिव्रता व साध्वी नारीके साथ बलात्कार करनेका दुस्साहस किया है। अिससे बढ़कर मेरे लिअे अपमानकी बात और कोअी नहीं हो सकती। अैसे चरित्रहीन राजकर्म-चारीके पदोंपर बने रहनेसे प्रजाके धन, मान और प्राणोंकी रक्खा संभव नहीं है। पतिपरायणा साध्वी स्त्रियाँ मेरे राज्यमें कैसे सुखी रह सकती हैं? मेरे राज्य-शासनके प्रति जनताका गौरवपूर्ण भाव बना रह सकना कैसे संभव है? अैसे बलात्कार करनेका साहस करनेवाले अिस सादुल्लाके लिअे मृत्युदंड ही अुचित है। लेकिन अिसने नारी जातिके प्रति जो अपराध व अन्याय किया है, अुसे बार-बार स्मरणकर रोते रहना मृत्यु-दण्डसे भी भयंकर है। अिसलिअे मैं अिसे आजीवन कारावासकी सजा देता हूँ।” जनता बादशाहके मुँह द्वारा सादुल्लाका अपराध और दण्ड सुनकर भौंचक हो चक्रवर्तीके मुँहकी ओर अंकटक देखती रही। दण्डका आदेश देकर बादशाह गद्दीपरसे अुतरकर फतिमाकी बूढ़ी सासके पास आअे और नवरत्न खचित अपने राजमुकुटको सिरसे निकालकर बूढ़ीके चरणोंपर रखकर घुटने टेककर विनम्र होकर बोले—

“माँ! तुम्हारी वहुका पातिव्रत धर्म मेरे राजमुकुटसे भी महान है!”

* * *

महल और झोपड़ी

—श्री चिंता दीक्षितुलु

आपका हृदय अत्यन्त मृदु, मनोहर और भावनाओं कोमल हैं; इसीलिए आप बच्चोंसे अधिक स्नेह रखते हैं। बाल-मनोविज्ञानके ज्ञाता होनेके कारण



आपने शिशु-साहित्यकी रचनामें अंक परम्पराकी सृष्टि की है। अुत्तम कथा-शिल्पके साथ अुदात्त भावनाओंका प्रतिपादन करनेमें आपकी बुद्धि बड़ी तीव्र है। साधारण प्रजाके कल्याणके लिये सन्तप्त होनेवाले अुद्भिन्न हृदयके साथ करुणा अेवं सहानुभूतिपूर्वक जीवनके लक्ष्य अेवं अुद्देश्योंकी भली-भाँति समझकर अुसकी गहराइयों तथा कठिनाइयोंका रसपूर्ण शैलीमें विवेचन करनेवाले आप अंक कुशल

कलाकार हैं। जीवनका अधिकांश समय अध्यापन-कार्यमें व्यतीत करते हुअे भी आपने अनेक बालोपयोगी रचनाओं प्रस्तुत की हैं। आपके शिशु-पात्रोंमें—‘सूरी-सीती वेंकी’ को आन्ध्रवासी कभी भूल नहीं सकते। वर्तमान समाजकी शिक्षिता नारीपर आपकी लिखी हास्यरसपूर्ण “बटीरावु कथलु” आधुनिक नारी-जीवनकी अद्भुत व्याख्याओं हैं। “अेकादशी” अनका प्रथम कहानी-संग्रह है। यह ‘साहित्य-समिति’ की तरफसे प्रकाशित हुअी है। “गोदावरी नन्विंदी” (गोदावरी हँस पड़ी) आपकी प्रसिद्ध कहानी है। पंडित नेहरूकी ‘विश्व-इतिहासकी झलक’ का आपने तेलुगु-रूपान्तर किया है। श्री दीक्षितुलुजी अपने भावोद्रेकको भगवानके चरणोंमें अर्पितकर भगवद्भक्तके रूपमें परिर्वतित होनेवाले सम्बेदनशील व्यक्ति हैं। आपका कहानी-साहित्यमें अच्छा स्थान है। आजकल आप पाठशाला-निरीक्षकके पदसे अवकाश लेकर विश्राम कर रहे हैं।

* * *

महल और झोपड़ी

अस गलीमें अक बहुत बड़ा महल है ! अस रास्तेसे जानेवाले लोग सिर अुठाकर महलकी ओर देखने लगते हैं तो फिर झुकानेका नाम नहीं लेते । चकित होकर ही रह जाते हैं ।

वे सब अस महलके सौन्दर्यको देखते हैं, या असमें बसनेवाले धन-देवताको देखते हैं, अथवा असमें रहनेवालोंकी कल्पनामें लीन हो जाते हैं—यह कहना कठिन है ।

अस महलके चारों ओर इसीका आसरा लेकर और कभी मकान बने हुअे हैं । उनमें दुतल्ले मकान भी हैं, झोपड़ियाँ और पर्णशालाअें भी हैं ! अस भवनकी बगलमें अक रामचन्द्रजीका मन्दिर है । वह अूंची अट्टालिका गगन-मण्डलसे मन्दिरकी ओर गुस्ताखीसे देखती हुअी दिखाअी देती है । अैसा मालूम होता है कि अस अट्टालिकाकी दृष्टिको देख संकोचवश रामचन्द्रजी अक कोनेमें दुबककर बैठे हुअे हैं ।

अस महलका निर्माण धन-सम्पत्तिने किया । पर झोपड़ियों और पर्णशालाओं आदिका निर्माण आन और अज्जतसे हुआ । मन्दिरका निर्माण भक्तिके परिणामस्वरूप हुआ ।

अस महलके आश्रयमे अनेक लोग है, जो सदा रूपयोकी झनझनाहटमें मग्न दिखायी देते हैं। अन् रूपयोकी झनझनाहटमे अन्हें बगलके रामचन्द्रजीके मन्दिरमे होनेवाला घण्टा-घडियाली, शंख तथा तुरियोका नाद सुनायी नहीं देता। बगलके कुटीरोमे रहनेवाले शुभ्र हृदयोके परिमलकी तो वे सुगन्ध भी नहीं ले पाते हैं।

अस अट्टालिकामे घासला बनानेके लिये अंक भी गोरैया नहीं आती। अस महलकी छतपर आराम करनेके लिये अंक कबूतर तक नहीं फटकता। गाय भी अस भवनके सामने नहीं ठहरती।

किन्तु अधिर अन् झोपड़ियोंमें कुछ मानव निवास कर रहे हैं। अन् झोपड़ियोंके छज्जामे कुछ गोरियें अपनी नीड़ बनाये हुये हैं। अन् झोपड़ियोंके पार्श्वमे अग्रे हुये पेड़ोपर तोते वार्तालाप करते हैं। नीचे मेमने शौकसे खेलते हैं।

वहाँपर मनुष्य, पशु-पक्षी सभी बिना भेद-भावके निवास कर रहे हैं।

मन्दिरमे जबसे श्री रामचन्द्रकी मूर्ति प्रतिष्ठित हुयी है, तबसे प्रति दिन रामचन्द्रकी चरण-सेवा करने अन् झोपड़ियोंके मनुष्य अस मन्दिरमे अिकट्ठे होते हैं।

रामचन्द्रजीके दर्शनके माध्यमसे धनदेवी लक्ष्मीकी अुपासना करने और वरदान-स्वरूप लक्ष्मीजीकी प्रसन्नता प्राप्त करनेके हेतु महलके लोग फूल-फल, वस्त्र अित्यादि रिश्वते भगवानको भेंट करने प्रति दिन प्रातःकाल वहाँपर पहुँच जाते हैं।

मन्दिरके आलोंको कबूतरोंने अपने नीड़ बनाये। मन्दिरके सामने स्थित धानके बालोंका गोरिये स्वेच्छापूर्वक अुपभोग कर रहे हैं। मन्दिरके सोपुरोपर तोते विश्राम करने बैठ जाते हैं और आत्मबोध पाते हैं। अस रास्तेसे जानेवाली गाये मन्दिरके सामने रुककर पलकोंसे नमस्कार कर आगे बढ़ती हैं। मन्दिरकी छत्रछायामे गोरैया सुख-शान्तिका असीम अनुभव करती हैं।

रामचन्द्रजीके स्वरका अनुकरणकर असमर्थ पानेवाले तोतोंको देख वे मुस्कुरा अुठते हैं। अुनके वसन्तोत्सवके अवसरपर तूर्यनादोंके साथ अपने स्वर मिलाकर कोयल अस अुत्सवमे अपूर्व शोभाका वातावरण पैदा करती हैं।

भवनके लोग बाजारसे देवताकी अर्चनाके लिये जो फूल खरीदकर लाते हैं, उन्हें अपनी शिखाओमें धारण करते हैं, झोपड़ियोंके आगे खिले हुए फूल रामचन्द्रजीकी देहका सम्पर्क प्राप्तकर पवित्र हो जाते हैं और फिर झोपड़ियोंके लोगोंकी चोटियोंमें गूँथे जाते हैं।

जिसी भाँति समय बीतता जा रहा है। कुछ दिनोंके बाद सक्रान्ति-पर्व आया। लोग प्रति दिन रामचन्द्रजीके अुत्सव मनाने लगे। उन अुत्सवोंको देख पशु-पक्षी, मनुष्य—सभी वर्गोंके लोग सन्तोष पा रहे थे। सक्रान्ति-पर्वके दिन सभी झोपड़ियाँ सजाओ गयीं। झोपड़ियोंके सामने तरह-तरहके चौक पूरे गये, जो अुस स्थानकी शोभा बढ़ानेमें सहायक सिद्ध हुये। महल भी अलंकृत हुआ। लेकिन मन्दिरकी तुलनामें महलका अलंकार अस्वाभाविक व नकली जँचता था।

मन्दिर दिव्य प्रकाशसे दमक उठा। रामचन्द्रजीका हृदय भक्तोंकी प्रार्थनाओंके परिणामस्वरूप महा समुद्रकी अुत्ताल तरंगोंकी तरह आनन्दसे आन्दोलित हो उठा। अुनके फैलाये हुये हाथोंमें असंख्य लोग जाकर दिव्य-मुखका अनुभव कर सकते हैं। अुस भगवानके आलिंगनमें समस्त लोक सिमट सकते हैं। अुस आलिंगनकी परिधि अनन्त है। कल्पनातीत आनन्द अुस आलिंगनमें समाया हुआ है और वह आनन्द नया जीवन प्रदान कर सकता है। वैसा भव्य आलिंगन अुस दिन रामचन्द्रजीकी अपार कृपाके कारण ही प्राप्त हुआ है।

झोपड़ियोंके लोग अुस आलिंगनमें फँस गये। तोते, गाय अित्यादि सभी भक्त आलिंगनका भोज पाकर मुखका अनुभव कर रहे हैं। लेकिन महलके लोग रामचन्द्रके आलिंगनके मुखका तनिक भी अनुभव नहीं कर पाये। रामचन्द्रके अलंकार मात्रको देख वे मुग्ध हुये।

मन्दिरके सामने भी संक्रान्तिके निमित्त चौक पूरा गया था। अिस पूरे हुये चौकमें मन्दिरके सामने विशाल रथ, घण्टियोंसे सजे रथ तथा झंडियोंसे सजाये हुये रथ सभी कलाओसे प्रकाशमान हैं। रथ फूलोंसे सजाये जानेके कारण अमित शोभाको प्राप्त हो रहा है। हल्दी और कुंकुम अुन रथोंकी पावनताका परिचय दे रहे हैं। ऐसा लगता है मानो अुसपर रामचन्द्रजी

आसन लगाकर बैठे हुए हों। उस अंची अट्टालिकाके सामने भी चौकापूरन हैं। रथ, सरोवर, कछुअें, साँप, कुम्हड़े अित्यादि तरह-तरहके रंगीले चौके पूरे हुए हैं। उन पूरे हुए चौकोंपर फूल हैं। वे सब ऐसे दिखायी दे रहे हैं, मानो अँघ रहे हो।

अत्यन्त वैभवके साथ अलंकृत हुए अपने अलंकारको देख बगलकी झोपड़ियोंकी सजावटको भी अुन्ही आँखोंसे देखकर महल हँस पड़ा। झोपड़ियाँ भी अपनी सजावटको देख अँचे महलके अलंकारको न देख सकनेकी हालतमें मन्दिरकी तरफ झुककर प्रतिकार-स्वरूप हँस पड़ीं। असपर क्रोधित हो महलने पूछा—“मुझे देख तुम क्यों हँस रही हो?”

झोपड़ियोंने जवाब दिया—“तुम्हारी हँसीके प्रतिकारमें हम हँस पड़ी हैं।”

महलने छाती फैलाकर गर्वसे कहा—“मेरी मंजिलें विशाल हैं। उनमें सुन्दर कलासे पूर्ण स्तम्भ हैं। महलकी दीवारोंपरके चित्र-विभिन्न रंगोंसे पुलकित होते दिखायी पड़ते हैं। महलके शिखरपरके गोपुर, लता अित्यादि अलंकारोंसे किरीट-सी शोभा पा रहे हैं। समस्त सौन्दर्य मुझमें समाया हुआ है। अिन सबसे अधिक मेरी अँचायी है जिसे तुम लोग आँख अुठाकर भी देख नहीं पाओगी। अब मेरी हँसीका कारण तुम लोगोंकी समझमें आ गया?”

झोपड़ियोंने जवाब दिया—“ओह, तुम अपनी अस अुन्नतिको देखकर शायद हँस रहे हो। किन्तु उन मंजिलोंका मिलान हमारे साहसके कारण ही हो सका है। कलासे शोभित वे स्तम्भ हमारे कौशलको ही प्रकट कर रहे हैं। प्राचीरोंपरके वे चित्र हमारी सहनशीलताके अुदाहरण हैं। तुम्हारे मुकुटको हमने ही प्रदान किया। तुम्हारी अुन्नति हमारे द्वारा ही हुयी है।”

“तुम्हारे साहस, कौशल व सहनशीलताको मैंने अुचित मूल्य देकर खरीदा है। असलिये अब असकी बड़ायी तुम्हें नहीं करनी चाहिये।”

“हमारे कौशल, तुच्छ धनसे नहीं तुल सकते!”

अस वार्तालापको सुन मन्दिर हँस पड़ा। अस हँसीको सुन झोड़ियोंने शर्मके मारे सिर झुकाये।

अस हँसीको सुन महल अपार आनन्दित हुआ।

बहुत समय बीत गया।

झोड़ियोंके स्थानपर अक जंगल अुगा। अस वनमें फल, फूल, घास और पौधे फैल गये। सदाबहार फूलोंके पेड़ोंपर अब तितलियाँ और भ्रमर मँडराते और खेलते रहते हैं। फलके वृक्षोंपर अपने नीड़ बनाकर तरह-तरहके पक्षी अुनके फल खाकर गान करते रहते हैं। घास-फूसमें छोटे-छोटे कीड़े-पक्षी निवास कर रहे हैं। वह समस्त जंगल सदा कलरव व कोलाहल द्वारा शोभायमान रहता है।

मन्दिरकी जगह अक पीपलका पेड़ अुग आया है। वह वृक्ष आस-पासके समस्त प्राणियोंको ठण्डी छाया प्रदान करता रहता है। अस पेड़के तनेपर, शाखाओं और पत्तोंपर पक्षी तथा अन्य प्राणी रहते हैं। अस वृक्षके पत्तोंकी ध्वनि समस्त प्राणियोंको थपकियाँ-सी देती रहती है।

बड़े महलके स्थानपर अब पत्थरके टीले हैं। अुन टीलोंके चारों तरफ कँटीली झाड़ियाँ अुगी हैं। अुनमें साँपोंकी बाँबियाँ हैं। रात्रिके समय अुन टीलोंपर अुल्लू बोलते दिखायी देते हैं।

पीपलका पेड़ अुन टीलोंपर भी अपने फल गिराकर पेड़ अुगाना चाहता है, लेकिन वे जानवर अुन अंकुरोंको अुगने नहीं देते।

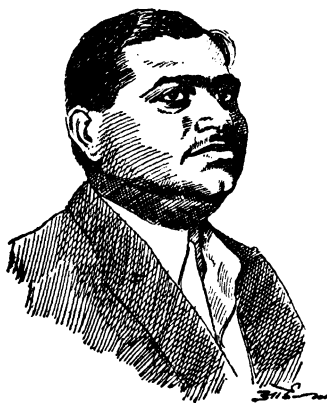
* * *

१५.

शुभ कामनाओं

—श्री श्रीवात्सव

‘श्रीवात्सव’ इस उपनामसे लिखनेवाले आप प्रसिद्ध लेखक हैं।
अुत्तम आलोचकके रूपमें सारा आन्ध्र आपको जानता और मानता है।



आप अेक ही साथ कवि, कहानीकार,
नाटककार और समालोचक हैं। अनेक
भारतीय भाषाओंके जानकार होनेके
कारण आपकी रचनाओंमें विशाल
दृष्टिकोण और पूर्णताका भाव आ गया
है। आपके सैकड़ों अेकांकी नाटक
प्रसारित हुअे हैं। समय-समयपर
पत्र-पत्रिकाओंमें प्रकाशित होनेवाली
आपकी कहानियोंमें जीवनके ध्येयोंका
वैविध्य विभिन्न रंगोंमें अभिव्यक्त होता
है। आपकी अन्य रचनाओंमें “तीरनिकोरिकलु” अेक अुत्तम नाटक
है। “रतनाल नव्यु”, “पेल्लाडे बोम्म”, “बुद्ध भगवानुडु” बालकोपयोगी
रचनाओं हैं। “सरंध्री” और “बंगारु पिच्चुकल” आपके अपन्यास हैं।

* * *

शुभ कामनाओं

अस दीपावलीके अवसरपर मुझे अपनी समुलाल जाना था। सदाकी भाँति बुलावा आया। पहले तो मैं अपने प्रान्तमें था। असलिये अनेके बुलानेमें तथा मेरे जानेमें कोअी विशेषता न थी। लेकिन अपने प्रान्तको छोड़कर सुदूर प्रदेशमें नौकरी करना और अपना परिवार बसाना वह भी पहली बार। दिल्ली जैसे महानगरमें मकान मिलना बहुत मुश्किल है। असमें भी शरणार्थियोंकी संख्या बढ़ जानेके बाद तो थोड़ी-सी जगह भी मिले, वह राजभवन-सी हो जाती। मैंने भी बहुत प्रयत्न किये, पर घर नहीं मिला। होटलमें चार मास बितानेके बाद मुझे अेक घर मिल ही गया। दिल्लीमें घर मिलना असम्भव ही है। कअी वर्षोंसे प्रतीक्षा करनेपर ही सरकारी मकान मिलते हैं। प्रति वर्ष सरकारी अफसरोंके लिये हजारों घर बनते जा रहे हैं तो भी यह कठिन समस्या सुलझनेका नाम ही नहीं लेती। चाहे अपने घरके नामपर जगह न मिल पाअे, पर दूसरोंके किराअेके घरोंको अपना बसेरा बना सकते हैं। बहुतसे दिल्लीमें रहनेवाले भाग्यशाली लोग यही करते हैं। जिन्हें गृहयोग प्राप्त है, वे अपने घरके थोड़ेसे हिस्सेको किराअेपर देकर गृहदान-पुण्यके भागी हो रहे हैं; रुपये लेकर भी, लेकिन अैसी सुविधासे पूर्ण घर देनेवाले कौन हैं? असलिये अुन दिनोंमें (शायद वह आज भी सत्य हो।)

ते. ... १०

गृहदान, गोदान, भूदान अत्यादि समस्त प्रकारके पुण्योसे वह पुण्य बड़ा बन गया था। असलमे बात यह है कि मेरे विषयमे वह पुण्य मणि अच्यरको प्राप्त हुआ।

अस क्पण तक मैं अनको नहीं जानता था और वे भी मुझे नहीं जानते थे। राजधानीके अस नगरमे जीविकाके लिअे अपने गाँवको छोड़कर आये हुअे अनन्त प्रवासियोमे अेक वे हैं और मैं भी अेक हूँ। यही हम दोनोंका नाता है। लेकिन मणि दिल्लीका पुराना निवासी है और मैं नया। यद्यपि यहाँ रहते-रहते दस महीने बीत गअे थे, फिर भी मैं नअे लोगोंमे ही गिना जाता था। दस सालोसे नौकरी करते हुअे घर न पा सकनेवाले मेरे जैसे यहाँ अनेक हैं।

सौभाग्यसे मणिसे मेरी मुलाकात हुअी। असलिअे हमारे पुरखे कहा करते थे कि सबके लिअे योग-बल चाहिअे। मैं होटलमे भोजन समाप्तकर बरामदेमे टहल रहा था। अप्पू दिखाअी पड़े। अुन्होंने मुझे वहीँ आध घण्टे तक रोककर अेक लम्बासा लेक्चर दे डाला।

अप्पू असाधारण व्यक्ति हैं। किसी पत्रिका-कार्यालयमें काम करते हैं। लेकिन वह चलते-फिरते विश्वकोश (ज्ञानकोश) हैं। अैसा कोअी विषय नहीं दीखता, जिसपर अप्पूका अधिकाधिक ज्ञान न हो। प्रधान-मन्त्रीकी यात्राकी विशेषताओसे लेकर पड़ोसी वृद्धकी तरुण पत्नी तक अुनके भाषणके विषय हैं। अेक बार प्रसंगवश अुन्होने कहा कि वे चार महीनेकी छुट्टीपर जा रहे हैं। मैंने तुरन्त प्रार्थना की—“ तो कम-से-कम यह जान लो कि वे अपना घर किसे देनेवाले हैं ? ” अप्पूने कहा—“ अुनके पास घर भी तो हो देनेके लिअे ! ”

मैंने पुनः अपने आवेदनका समर्थन किया—“ हाँ, आधा भाग ही सही । ”

अप्पूने कहा—“ वे खाली थोड़े ही कर रहे हैं ? सामान आदि वही रखकर जा रहे हैं । ”

मैंने पुनः निवेदन किया—“ वे जैसे भी जाअें, अुनसे परिचय तो कराअिअे ! ”

दूसरे दिन सबेरे निश्चित कार्यक्रमके अनुसार अप्पू और मैं अय्या स्वामीके घर पहुँचे। वे मेरे परिचित भी हैं। कभी बार हमने पुस्तक और सिनेमाओपर वाद-विवाद भी किअे थे। मेरे ज्योतिष-शास्त्र सम्बन्धी ज्ञानका भी अुन्हें परिचय है। मैंने कभी अुनकी जन्म-कुण्डली देखकर अुन्हें राशि-फल भी बताया था। मेरी ज्योतिषकी सच्चाओपर प्रसन्न होकर अुस दिन मुझे नाश्ता आदि भी कराया था।

अुसी दिन अुस मकानके मालिक मणि अय्यरजीसे मेरा परिचय कराया गया। अन्तमें मेरी दरख्वास्तकी बात आओी तो अुन दोनोने मुझे सैकड़ो यक्ष-प्रश्न किअे, जिनका अुत्तर मुझे देना पडा। अुन प्रश्नोकी परीक्षामें अुत्तीर्ण होनेके अुपरान्त अुनकी समस्त शर्तोंको भी मैंने मान लिया। फिलहाल अय्या स्वामी चार महीनेके लिअे ही बाहर जा रहे हैं। वादको सम्भवतः वापस लौट भी सकते हैं। अुस समय मुझे घर खाली करके कही जाना पड़ेगा। अुसने अुस अेक रूमके लिअे चालीस रुपये किरायेके माँगे हैं वे तो देने ही होंगे। अय्या स्वामीका असवाब तब तक अुस छोटेसे स्टोर-रूममे पडा रहेगा। अुसकी रक्षा करनेका भार तो है ही, असके अलावा जब वे चार्हेगे, अुम समय अपने निजी खर्चपर अुस सामानको सुरक्षित अुनके पास भेजना होगा। सपत्नीक न रहूँ तो अुस घरमे मुझे प्रवेश नही मिलेगा। पत्नीके सिवाय और कोओी मेरे साथ नही रह सकता। स्नानागारमें ही कोयलेके चूल्हेपर खाना बनाना होगा। अलग रसोओीघर नही मिलेगा। मुझे कही आश्रय नही मिला था, असलिअे वही घर मुझे अिन्द्र-भवन-सा लगने लगा। अुनकी सभी शर्तोंको मैंने सहर्ष मान लिया।

अय्या स्वामीने वहाँसे जाते हुअे मणि अय्यरको मुझे सौंपते हुअे कहा—“ये वडे साधु पुरुष है। अैसे-वैसे आन्ध्रवासी नही, तमिल भी खूब जानते हैं। मणि अय्यर मुझे अपने कमरेमें ले गअे। अुन्होंने मुझे काफी पीनेको दी। अिसी समय अय्या स्वामीने व्यग करते हुअे कहा—“मणि अय्यरकी जन्म-कुण्डली देखकर बताओ, अुन्हे सन्तान-योग है कि नही?” तब मुझे मालूम हुआ कि मणिके सन्तान नही है। वे अधेड़ अुम्रके हैं। चालीस-से कम न होंगे। अुनकी पत्नी नव-यौवना-सी दिखाओी देती है। अुसकी

अुत्र ज्यादा-से-ज्यादा २५ वर्षकी होगी। सफेद गोल मुख-मण्डल। चमकते हुए विस्फारित नेत्र, उसके नेत्रोंकी भाँति कानोंके दमकते हुए मणिमय कुण्डल देखनेवालोंको चकित करते हैं। प्रथम दृष्टिमें ही मैंने जान लिया कि वह अक्लमन्द व स्वभावकी तेज है।

अुसके साथ तुलना करके देखें तो मणि अय्यर तोतेकी नाकमें कुन्दरू फल जैसे लगते हैं। पिचके गाल, चोटी, मैली दाढ़ी, झुर्रीदार ललाट, अुनकी लम्बी व पतली नाक देखनेपर झट कहा जा सकता है कि वह गणितमें प्रवीण है। अिसीलिअे मणि अय्यर सेक्रेटरिअेटमें बड़े अकाअुण्टेक्का पद सँभाल रहे हैं। अुनके और भी अधिक अुन्नति करनेकी सम्भावना है। अुनके कुतूहलको देख मुझे आश्चर्य हुआ। अुनकी जन्म-कुण्डली खोलकर मैंने अुनकी राशि-कुण्डलीको ध्यानसे देखा। पर कहीं भी सन्तान-योगके लक्षण नहीं दिखायी दिअे। मैंने अुनके अयनांशका परिशीलन कर देखा, और अुनके जीवनकी समस्त विशेषताओंको मैंने अुन्हें बता दिया। सभी बाते अक्षरशः सत्य मिल जानेके कारण वे बहुत प्रसन्न हुए। अुसी समय मालूम हुआ कि मणि अय्यरका विवाह भी देरीसे हुआ है। अुनकी पत्नी रंगूनसे आअे हुए अेक रेल्वे-अफसरकी पुत्री हैं। बहुत दिनों तक जब अुस लड़कीकी शादी नहीं हुआी तो अन्तमें अुसे अिनके गले मड़ दिया गया। लेकिन अितने समयमें अविवाहित रहनेके कुलक्पण अुसमें दिखायी नहीं देते थे। मैंने अुसकी जन्म-कुण्डलीको मँगाकर देखा। अुसमें सन्तान-प्राप्तिके योगकी मेरी बाते सुनकर पति-पत्नी दोनों ही बहुत प्रसन्न हुए। किवाड़की आडमें खड़ी मीनाक्षी मेरी ये सभी बाते सुन रही थी। अुस जन्म-कुण्डलीके प्रभावके कारण मुझे घर मिल गया। तुरन्त ही अपनी पत्नीको बुलाकर मैंने परिवार बसाया। अिस प्रकार लगभग अेक वर्ष बीत गया। मणि और मेरे बीच अच्छी दोस्ती हुआी। दोनों औरतें भी अेक ही घरकी बहुओंकी भाँति मिल-जुलकर रहने लगी। जब कभी सिनेमा या बाजार जाना हो, दोनों दम्पति मिलकर जाते। आपसमें गाढ़ी मैत्री पैदा हो गयी और अुसी तरह आनन्दपूर्वक दिन गुजरते गअे।

अिसी बीच दीपमालिकाका पर्व निकट आया। मेरी श्रीमतीका गर्भधारण होने व ससुरालसे बुलावा आनेसे अुसे अुसके मायके भेज दिया।

मैंने छुट्टीका आवेदन-पत्र दिया। लेकिन उसे अधिकारीवर्गने यह कहकर टाल दिया कि मेरे स्थानपर दूसरेके आनेके बाद ही मेरी छुट्टी मंजूर हो सकती है। इस बीच मेरे अंक साथी बीमार पड़ गये। उनका काम भी मुझे ही सँभालना पड़ा। परिणामतः दीपावलीके शुभ-अवसरपर ससुराल जानेकी अपनी यात्रा मुझे स्थगित करनी पड़ी।

दो महीनोंसे मैं होटलमें ही भोजन करता था। किसी-किसी दिन मणि अय्यर नाश्ता और काफी दिया करते थे। उस समय हममें वार्तालाप होने लगता था, वे पूछते—“संतान-योग कब सम्पन्न होगा?” मैं जवाब देता—“जल्दी न कीजिए। संतान-योग है ही।” वे बार-बार वही प्रश्न पूछते। मीनाक्षी पासके कमरेमेंसे ध्यानपूर्वक हमारा वार्तालाप सुनती मुस्कुराती दिखायी देती।

दीपावली सारे भारतका पर्व है—लेकिन तमिलवासियोंका तो यह बहुत बड़ा पर्व है। मणि अय्यरके लिये तो पर्व-त्यौहारका दिन भी साधारण दिन जैसा ही है। क्योंकि दफ्तरके कामसे अन्हे छुट्टी नहीं मिलती। दफ्तर ही उनकी दुनिया है—सब कुछ है। दीपावली-पर्वके अवसरपर वे कभी छुट्टी लेकर ससुराल नहीं गये। उनके ससुर कलकत्तेमें रेल्वे विभागके अकाउण्ट्स डिपार्टमेंटमें काम करते हैं। मीनाक्षी उनकी अकेला पुत्री नहीं है। वह उनकी पहली पत्नीकी सन्तान है। पहली पत्नीके मर जानेके बाद अन्होंने दूसरा विवाह भी किया। दूसरी पत्नीसे कभी बच्चे हुये। मीनाक्षीके पिता प्रति वर्ष उसे अंक रेशमी साड़ी भेजते हैं। किन्तु मीनाक्षीपर पिताका स्नेह अधिक न होनेके कारण वह दुखी दिखायी देती है।

मीनाक्षीका विचार है कि इस विशाल संसारमें उसका अपना कोड़ी नहीं है। पर मणि अय्यर उसे किसी बातकी कमी नहीं होने देते। खाना-कपड़ा, आभूषण सब देते हैं। घरके खर्चके पैसोंसे लेकर सभी अन्य बातोंका हिसाब रखना उस परिवारका नियम है। इसलिये यह मीनाक्षीके लिये खटकनेवाली बात न थी। फिर भी वह सदा अपने जीवनमें किसी अभावका अनुभव करती दिखायी देती है। उसका दाम्पत्य-जीवन भी सुखमय नहीं

दिखाओ देता है। मीनाक्षी अपनी सारी स्थिति मेरी पत्नीसे कहा करती थी। मैं उसपर अतना ध्यान नहीं देता था। विवाह हुआ आठ साल बीत गये, अभी तक संतान नहीं हुई है। इसलिये वह कहा करती कि आठ सालके भीतर संतान नहीं हुई तो क्या फिर बुढ़ापेमें होगी। अम्मेके अलावा कभी-कभी मीनाक्षी हिस्टीरियाका शिकार भी हो जाती थी। हमारे परिवारके रहते समय भी उसे यह दौरा तीन बार आया था। बादको मुझे मालूम हुआ कि इसी बीमारीके कारण उन लोगोंने अपने घरके आधे हिस्सेको किंगडंपर दिया है।

मेरी श्रीमतीके रहते समय मैंने कभी मीनाक्षीकी ओर ध्यानपूर्वक नहीं देखा था। मेरी श्रीमतीके मायके जानेके बाद भी मैंने इस ओर कोओ विशेष ध्यान नहीं दिया। सबेरे जाता तो रातके दस बजे घर लौटता और किवाड बन्दकर सो जाता। कभी-कभी नाश्तेके समय मणि अथर बुलाते तो थोड़ी देर गपशप होती। उनके लिये दीपावली-पर्व और दूसरे लोगोकी अपेक्षा अक दिन पहले ही शुरू होता है। उस दिन वे अभ्यंगस्नान आदि करके तर्पण करते हैं। मुझे पूछा तो मैंने कह दिया कि हम अमावस्याके दिन तर्पण नहीं करते। इसलिये उन्होंने चतुर्दशीके दिन ही मुझे भोजनके लिये आमत्रित किया। मैंने भी तर्पणके दिन अन्य ब्राह्मणोंके साथ भोजन करना अच्छा नहीं समझा। मीनाक्षीने नौकरकी मददसे जो पानी गरम किया गया था, उससे मीनाक्षीने अभ्यंगस्नान किया।

मीनाक्षीने अम्मे दिन अपने पिता द्वारा भेजी हुओ साडी पहन रखी थी। बड़ी लबी जरीके किनारेमे चमकनेवाली वह कोयम्बतूरी साडी मीनाक्षीके शरीरपर सुन्दर लग रही थी। मीनाक्षी सहज सुन्दरी है। पर उनके सौदर्यका निरीक्षण कोओ नहीं करता। अम्मेका पति हमेशा हिसाब करनेमें ही समय बिताता है। दफ्तरके कार्यकी अपेक्षा घरपर भी गाड़ीभर फाइल आती है। अतः उसके पतिको फाइलोंकी ढेरीमें मीनाक्षीके सौदर्यको निहारनेका समय कहाँ? इसलिये मीनाक्षी भी अपनेको सुन्दर ढगसे अलंकृत करनेका प्रयत्न नहीं करती। साफ-मुथरे वाल सँवारना, पाउडर लगाकर टीका लगाना, यह सब उसे मालूम ही नहीं। इसलिये उस दिन

रेशमी साडीसे अलंकृत हो जब वह बाहर आयी, तब अमी दिखायी दे रही थी, मानो मीनाक्षी अभी-अभी यौवनको पूर्णवस्थाकी देहरीपर ही है। वह अड़ोस-पड़ोसके तमिल भाइयोके घर हो आयी। मैं भी सारे शहरमें चक्कर लगाकर चला आया। दूसरे दिन मणि अय्यरने मुझे अपने घरमें भोजनके लिये निमंत्रण दिया। उस दिन छोकाथात, चक्कर पोंगल, खीर, बड़े आदि मैंने जमकर खाये। शामको हलवा-दूध और केलेसे मेरा स्वागत हुआ।

मैंने मना किया और वहाँसे चला गया। मणि अय्यर आफिसके कार्यके सिवा दिल्लीमें ही एक व्यापारीके घरमें हिसाब-किताब देखा करते हैं। कहा जाता है कि अनिकम टैक्सकी बचतके जितने उपाय मणि अय्यर जानते हैं, अतने और कोई नहीं जानता। इसीलिये वे मणि अय्यरको अपने घर ले जाकर अन्हें मुँहमाँगा पारिश्रमिक देकर अनुसे काम लेते हैं। उस दिनकी शामको कभी पेटियोमें अन्य मिठाइयोंके साथ बब्रुआका हलवा भी अन्हूी लोगोने भेजा था। असके अतिरिक्त अनु लोगोने अपने घरपर मणि अय्यर और अनुकी पत्नीका भी स्वागत किया। लेकिन दीपावली पर्वके अवसरपर सुमंगली दूसरोके घरमें कैसे भोजन करने जाती। असलिये वह नहीं गयी। उसने अपने घरके चारो तरफ दीवारों व खिडकियोंपर दर्जनों दीप रखे। अनुमें वत्तियाँ रखकर तेल डालकर अन्हें प्रज्वलित किया।

दीपावलीकी शोभाको देखनेके लिये मैं खास मुहल्लोमें हँ आया। जब मैं घर वापस लौट रहा था, तब दस बज गये थे। मीनाक्षी सामने दीवारपरके दीपोमें तेल डाल रही थी। मैंने पूछा—“क्यों जी, मणि अय्यर अभी तक घर नहीं लौटे?” मीनाक्षीने उसी प्रकार दीपकोको मजाते हुअे कहा—“जी नहीं, वे अभी नहीं आयेगे। मालिकोके यहाँकी पूजा व भोजनके समाप्त होते-होते आयी रात बीत जायेगी।”

मैंने नौकरको पुकारा तो मीनाक्षीने जवाब दिया कि वह सिनेमा देखने गया है। मैं अपने कमरेमें जाकर किवाड बन्द करने लगा। अतनेमें मीनाक्षीकी आवाज सुनायी पड़ी—“नाश्ता आपके कमरेमें लाजुँ या वरामदेमें ही बैठकर नाश्ता करेंगे?” मैंने जवाब दिया—“वैसे तो मुझें भूख नहीं है, तो भी कमरेमें क्यों, वरामदेमें ही बैठकर नाश्ता करूँगा।”

पूजामेसे आये हुअे फल,हलवा अित्यादि परोसकर अुसने मुझे आवाज दी । कपड़े बदलकर मैं पीढ़ेपर बैठ गया । घरमें और कोअी न था । घरमे हम ही दोनोके रहनेके कारण मेरा शरीर पुलकित हो अुठा । मन-ही-मनमे अेक प्रकारके भयका अनुभव-सा कर रहा था । अुस नारीको अकेली देख मेरे मनमे वैसे कोअी विकार नही पैदा हुआ था । दीपकोमेसे अधिकाश बुझ गअे थे । मैंने कहा—“अब रहने दीजिअे, फिरसे जलानेकी क्या जरूरत है । अभी तो आधी रात होनेको है ।”

बुझे हुअे दीपकोमे तेल डालते हुअे मीनाक्षीने कहा—“वर्षमें अेक ही बार दीपावली आती है । कम-से-कम आजकी रातभर तो दीपक पूरे जलने ही चाहिअे ।” आसपास सभी घरोंमे यही अेक अैसा घर था, जो दीप-मालिकासे शोभायमान था । अुन दीपकों व केलेके वृक्षोके बीच मीनाक्षी लक्ष्मी जैसी दिखाअी दे रही है । आज वह नीली रेशमी साड़ी पहने हुअे है । मीनाक्षीको बरामदेमे अकेली रहते देख मैंने यह अुचित न समझा कि किवाड़ बन्दकर अपने कमरेके अन्दर पडा रहूँ । असिलिअे मैं बरामदेमें खड़ा रहा । मीनाक्षीने मेरे पास आकर पूछा—“आप भी पटाके जलाअिअे न?” असिपर मैंने अुत्तर दिया कि “पटाकोसे मुझे सिरदर्द होता है । अिन्हीसे वचनेके लिअे मैं अधिर-अुधर घूमकर आया । लेकिन अुनकी ध्वनियाँ अभीतक कम नही हुअी ।” मीनाक्षीने मेरे पास पटाके, अँटम बम आदि लाकर रख दिअे ।

मैंने कहा—“अिन्हें आप ही दगाअिअे ।”

मुस्कुराते हुअे मीनाक्षीने कहा—“मुझे डर लगता है ।”

मैंने कुछ महताबकी तीलियोको जलाया और पटाकोको जलाना शुरू किया । महताबकी तीलियोसे होनेवाले प्रकाशमे मीनाक्षीका मुख-मण्डल दमकने लगा । अेक-अेक फुलझड़ीकी काँतिमे अुसके मुखमण्डलपर नअी-नअी मुस्कुराहट छूटती जा रही थी । अुस समय मीनाक्षीकी कुदन-सी दतपंक्ति अैसी दमकती थी, मानो तारोंके धुँधले प्रकाशमे बिजली कौध रही हो । अुस सुकुमार व कोमल हृदयके लिअे वह अेक अनिर्वचनीय अनंद था । अुन महताब व पटाखोके बीचमे मैं अपनेको अुस रात अेक हीरो (नायक) जैसा अनुभव कर रहा था । असिलिअे मीनाक्षीने बाकी सब सामग्री मेरे सामने रख दी ।

मैंने हँसी-मजाकमें कहा—“ये सब पटाके आपके पतिदेव जलाओगे। उन्हें रहने दीजिए।” मीनाक्षीने आश्चर्यचकित मुद्राके साथ कहा—“ओह, वे तो मुझसे भी कायर हैं।” मैंने कहा—“तो फिर ये पटाके खरीदे ही क्यों गए।” मीनाक्षीने जवाब दिया—“संभवतः मेरे लिये ही खरीदे गए होंगे।”

“तो रखिए, मैं अन्हें अन्हूके सामने जलाऊंगा।” यह कहकर मैंने मीनाक्षीको उसके कमरेमें भेज दिया। अब मैं आँगनमें अकेला खड़ा शून्यकी ओर देखते हुअे कल्पना-जगतमें विहार करने लगा। मैं सोचने लगा कि इस समय मेरी धर्मपत्नी अपने मायकेमें दीप सँजोअे महताब और पटाके छोड़ती होगी। खूब आनंद मनाती होगी वह और मैं यहाँ अकेला . . . ! आज घर-घरमें दीवाली है। मेरे घरमें अँधेरा है। मैं मनमें इस प्रकार सोच ही रहा था कि मुझे मीनाक्षीकी चिल्लाहट सुनायी पड़ी। मैं घरके भीतर दौड़ पड़ा। घरके पिछवाड़ेमें मीनाक्षी आसमानको सिरपर अठाअे चिल्ला रही थी। ध्यानसे देखा, तो मालूम हुआ कि अुसका आँचल जल रहा है। मैंने तुरन्त अुसे दोनो हाथोंसे मलकर बुझा दिया। इसी बीच वह बेहोश हो गयी। मुझे स्मरण आया कि वह अक्सर होनेवाली हिस्टीरियाकी फिट है। मैंने अुसके मुँहपर पानी छिड़का और अुसे दोनो हाथोंसे अुठाकर बिस्तरपर लिटा दिया। वास्तवमें वह फिट नहीं थी। साड़ीके जलनेसे घबराकर वह बेहोश हो गयी थी। मैंने अुसे चूल्हेपर धरा हुआ थोड़ा गरम दूध लाकर दे दिया। अुसने थोड़ी देर बाद आँखें खोली और दूध पिया। मैंने मीनाक्षीसे पूछा कि टेलीफोन करके तुम्हारे पतिको क्यों न सूचित कर दिया जाअे ? मीनाक्षीने याचना भरे शब्दोंमें कहा—“वे आकर क्या करेंगे ? आपके जानेसे मैं और भी भयनीत हो जाऊँगी।” संभवतः फिट भी आ जाअे, इसलिये मैं अुसकी शुश्रूषाके हेतु वही रह गया।

आँचल तो जला ही था, पर शरीर कहाँ-कहाँ जल गया है, यह मैंने नहीं देखा था। देखनेपर मालूम हुआ कि कुहनीपर और वक्षस्थलपर छाले पड़ गए हैं। मैंने तुरन्त नारियलका तेल और चूनेके पानीका मिश्रण-सा बनाया। अुससे कहा कि जलेपर इसे लगाअिए। अुसने कहा कि मैं अुपर हाथ नहीं अुठा पा रही हूँ। इसपर मैंने बगलकी पड़ोसिनको बुलानेकी बात कही। लेकिन मीनाक्षीने यह कहकर टाल दिया कि आधी रातके समय वे कैसे आअेंगी ?

अक डाक्टरकी भाँति घावकी पट्टी खोलनेकी ही तरह मैंने अुरा महिला-की चोलीकी गाँठ खोल दी। और अुन छालोंपर मैंने वही मिश्रण लगा दिया। मेरे हाथोका स्पर्श जब अुसके अंगोसे हुआ तो मेरे शरीरमे बिजली-सी दौडने लगी। मुझमे अक नअी चेतना पैदा हुआ। अुसने अपने दोनो हाथोंको अुपर अुठाकर मेरे मुँहका स्पर्श करते हुअे मुझे अपने और भी समीप खीच लिया। अुसके अधर मेरे कपोलोसे स्पर्श करने लगे। मैं झुक गया। अुमके शरीरमे सबसे सुदर वस्तु अुसके चमकनेवाले नेत्र थे। कैसी चालाकी प्रति-बिंबित हो रही थी ! अकस्मात अुन नयनोसे मेरे अधर स्पर्श करने लगे। अुसने मुझे और भी निकट खीच लिया। वक्षस्थलपरकी नीली रेगमी साड़ी अपने आप खिसक गअी।

मुझे अैसा लगने लगा कि मानो मीनावपी जैसी सुन्दर रमणीका अव तकका सारा सौदर्य अरुण्यकी चाँदनीके समान व्यर्थ गया। अुसके अुस सौदर्यपर किसीने अुचित ध्यान नही दिया। दीप-शिखाओंसे जल जानेके कारण चिकित्सा करनेके हेतु मेरे कठोर हाथोके स्पर्शसे अुसका कोमल शरीर कही और भी अधिा घायल न हो जाअे, यह सोचकर अुन भागोको मैंने अपने नेत्रो व ओठोंसे स्पर्श किया। मैं अुसकी गोदमे अक शिशु-सा बन गया। अिस आलिंगनके आनन्दका अनुभव हम कितनी देर तक करते रहे, यह तो ज्ञात नही है। अकस्मात बँगलेपर मोटर-कारके रुकनेकी आवाज आअी। मणि अय्यरको लेकर यह कार आअी थी। मणि अय्यर कारमेसे अुतरे।

मैं अुनके स्वागतके लिअे आगे बढ़ा। मैंने आँचलके जलने व फिट आनेका सारा समाचार सुनाया। अुन्होंने मुझे शुक्रिया अदा की। अिस घटनाके चार मास बाद ही दिल्लीसे मेरी तब्दीली हुआ। मेरी श्रीमतीजी पुनः दिल्ली न आकर मुझे सद्राममें आकर मिली।

दीपावलीका महापर्व पुनः चार दिनमें आनेवाला है। मणि अय्यरसे पत्र मिला कि अुनके पुत्रका नामकरणोत्सव जल्दी होनेवाला है। मैंने तुरन्त मणि-दपत्तिके नाम “शुभ कामनाअे” भेजी।

अपूने अिस समाचारको कैसे जान लिया, पता नही, पर अुन्होंने अपने पत्रमे लिखा कि दीपावलीकी “शुभ कामनाअे” तुम्हे या मणि अय्यरको दी जाअें ?

१६.

आहुति

—श्री केतिनीडि नरसिंह राव

आपका जन्म पश्चिम गोदावरी जिलेके नरसापुर नामक स्थानपर हुआ। आजकल आप अेलूरमें पुलिस-विभागमें नौकरी कर रहे हैं।



श्री नरसिंह राव समय बितानेके विचारसे रचनाओं नहीं करते; वरन् उनका अुद्देश्य अनेक पीढ़ियोंसे समाजमें जो कुरीतियाँ चली आ रही हैं और समाजको खोखला बनाओ जा रही हैं, उनका प्रखालन करना रहा है। पुरानी रूढ़ियोंका सुधार करनेके हेतु अपयुक्त कथावस्तुओंको ग्रहण कर आपने असंख्य रचनाओं की हैं। नरसिंह रावकी कहानियाँ अिन्हीं भावनाओंसे प्रतिबिम्बित हैं।

आप १९५० से बराबर कहानियाँ लिखते आ रहे हैं। आन्ध्र देशकी प्रायः सभी प्रमुख पत्रिकाओंमें आपकी असंख्य कहानियाँ अेवं अेकांकी प्रकाशित हो चुके हैं। कुछ अुत्तम रचनाओं अंय भाषाओंमें भी अनूदित हुयी हैं। आपके साहित्यका अत्यन्त अुज्वल भविष्य है।

* * *

आहुति

पूर्ण चन्द्रमाकी शीतल किरणें युवकोंके हृदयोंमें मधुर स्मृतियाँ जगा रही हैं। कहीं दूरपर अमरात्रियोंके बीच कोयलकी “कुहूँ . . कुहूँ” ध्वनि मनको लुभा रही है। आकाशमें मेघ-समूह अधर-अधर दौड़ रहे हैं। पवित्र गोदावरी नदीकी धारासे ठंडी हवाओं आ रही हैं। बगलके घरसे रेडियोका ‘सीलोन-संगीत’ अस्पष्ट रूपसे सुनायी दे रहा है। कहींसे ‘रात-रानी’ की सुगंध-भरी हवाओं उसे पागल बना रही हैं। मूर्तिभूत प्रकृति-की शोभा उस युवतीको भुला रही है। गलियाँ सुनसान हैं। लोगोंका आना-जाना बंद हो गया है। सारा संसार सो रहा है, परन्तु प्रकृतिके सौन्दर्यका अवलोकन करते रहकर भी हृदयमें अपार पीड़ाको दबाये महलकी छतपर लेटी हुई सुशीलाकी आँखें खुली हुई हैं।

वह सोनेका उपक्रम कर रही है। उसने आँखें बन्द भी कीं, परन्तु नींद नहीं आयी। उसके हृदयमें असंख्य कामनाओं हिलोरें मार रही हैं। उसके हृदय-सागरमें कभी पूरी न होनेवाली कामनाओं आँधियाँ उठा रही हैं। ऐसी स्थितिमें उसे निद्रा कैसे आये ?

वह विकल होकर रो पड़ी। उसने आशा की कि जिस रुदनसे उसे कुछ सीमा तक तृप्ति और शान्ति अवश्य मिलेगी। परन्तु अविरल गतिसे गिरनेवाली अश्रुधारा भी उसकी कामनाओंको धो न सकी।

भगवान् अुससे अिस प्रकार क्यों बदला ले रहा है ? अुसने अैसा कौन-सा अपराध किया था ? अुसके मधुमय जीवनपर अिस प्रकारका वज्र-प्रहार क्यों हुआ है ? अुसे सुकोमल सौन्दर्य प्रदानकर अुसमें विष क्यों घोल दिया ? खिलनेवाली कलीको ही भगवानने क्यों तोड़ फेंका ? बचपनमें ही वैधव्य ! अबोध अवस्थामे ही अुसका विवाह और अुसके कुछ दिन बाद पतिकी मृत्यु. ।

अुस समय अुस बालिकाके लिअे विवाह-संस्कार अेक स्वप्न मात्र था । अब . . . असहनीय व्यथा ! अपार दुःख ! !

अेक ओर अुमड़नेवाला यौवन, दूसरी ओर पैरोंमें साँकल ! अेक ओर अुन्मत्त बनानेवाला सौन्दर्य ! दूसरी ओर समाजकी लाल-लाल आँखें ! अेक ओर अुमड़नेवाली कामनाअे और दूसरी ओर दबानेवाली निराशा । अेक ओर अपार पीड़ा और दूसरी ओर विषभरे अुपहास ।

. समाज ! अन्धा समाज ! बचपनमें पतिके मरनेपर अबोध लड़कीके विवाहका विरोध करनेवाला नीच समाज ! मानवता-शून्य मूर्खोंके बलपर चलनेवाला यह दुष्ट समाज, जो बचपनमे पतिके मरनेपर स्त्रीको दूसरा विवाह करनेसे रोकता है, वही मृत्युका स्वागत करनेवाले वृद्धके विवाहपर स्वीकृतिकी मुहर लगाता है । समाजमे न्याय कहाँ है, नीति कहाँ है ?

पूरी न होनेवाली आशाओके परिणामस्वरूप सारे जीवनका अन्त क्या अिसी प्रकार होगा ? काननमे छिटकी हुआी चाँदनीकी भाँति अुसका यौवन तथा सौन्दर्य क्या यों ही नष्ट होगा ? अुसकी वयकी सभी लड़कियाँ रंग-बिरंगी साड़ियाँ पहिने, वेणीमे फूल गूँथे, भालपर तिलक लगाअे सुन्दर लग रही है । परन्तु वह सफेद साड़ी पहिने माँगके सिन्दूरको खोकर अधूरी कामनाओंकी कड़वी घूँटें पीती हुआी सारा जीवन जड़ पदार्थकी भाँति बिता रही है । जहाँ अेक ओर अड़ोस-पड़ोसकी लड़कियाँ अपनेको ठीक तरहसे सजाअे अपने पतिदेवके साथ सिनेमा देखने या सैर-सपाटा करने जा रही हैं, वहाँ अुसे अन्धकारमें धुअेसे भरी रसोअीमें अपने भाग्यको कोसते हुआे दुःखमय जीवन बिताना होगा ।

अबोध अवस्थामें सुशीलाका विवाह किया गया। उस समय उसकी अवस्था दस वर्षकी थी। विवाहके दूसरे वर्ष ही उसके पतिका अचानक देहान्त हो गया था। उस समय सुशीलाने उसे अक स्वप्नमात्र समझा। परन्तु जब वह पन्द्रह वर्षकी हुआ और यौवनके आगमनसे उसमें जो सौन्दर्य-छटा खिली, तब उसे मालूम हुआ कि उसका पति मर गया है; वह विधवा है। वह तिलक लगाने, रंगीन साड़ी पहनने, वेणीको फूलोंसे सजानेका अधिकार खो बैठी है और उसे जीवनभर अतृप्त कामनाओं, आवेशों एवं आशाओंके लिअे ही मरना होगा। जब उसे यह मालूम हुआ, तो वह फूट-फूटकर रोने लगी। परन्तु उसके रुदनको सुननेवाला कौन है? उसकी अपार व्यथाको समझनेवाला सहृदय कौन है?

[२]

सुशीलाने अतिशय आनंदके साथ अपने पिताजीसे कहा—“पिताजी? भाभी आ रहे हैं?”

पिताने पूछा—“किसने कहा बेटी?”

पत्र दिखाते हुए सुशीलाने उत्तर दिया—“किसीने नहीं कहा, पत्र आया है।”

“जरा पढ़कर सुनाओ तो, क्या लिखा है?”

“त्यौहारके अवसरपर चार दिनकी छट्टी मिली है। आपसे आवश्यक बातें करनेके निमित्त कल ही घरके लिअे रवाना हो रहा हूँ।”

पत्रको पिताजीके हाथमें देकर सुशीला घरके भीतर चली गयी।

चन्द्रम सुशीलाका भाभी है। शहरमें नौकरी कर रहा है। वह सहृदय एवं सस्कारप्रिय व्यक्ति है। बहिनकी स्थितिपर उसे दुःख है। बचपनमें जब माता चल बसी, तो उसने ही बहिनको लाड़-प्यारसे पाला-पोसा था। बहिनके विवाहके समय वह सांसारिक बातोंसे अनभिज्ञ था। जब उसने संसारको समझा, तब तक बहिनका विवाह और उसके पतिकी मृत्यु हो चुकी थी। अब उसके चेहरेको देखकर चन्द्रमका हृदय पिघल उठता है।

+

+

+

+

भोजनके उपरान्त चन्द्रमने अपने पिताजीसे पूछा—“बहिनके सम्बन्धमें आपने क्या सोचा है ?”

“क्या ? सुशीलाका विवाह ?” पिताजीने अविश्वास-भरे नेत्रोंसे चन्द्रमसे प्रश्न किया ।

“हाँ !”

“क्या तुम पागल तो नहीं हुआ हो ?”

“नहीं पिताजी . . . , अभी वह दशा नहीं आती ?”

“नहीं तो विधवाका पुनर्विवाह ?”

“हूँ ! उसका पति मर गया है । उसकी अवस्था कितनी है ? कितने वर्ष पतिके साथ गृहस्थी चलानेके बाद वह मर गया है ? दोनोंको दांपत्य-जीवनका आनन्द भोगनेका अवसर ही कहा मिला ?”

“यह ठीक है, किन्तु हिन्दू-नारीका विवाह तो अंक ही बार होता है ।”

“विवाहसे अनभिज्ञ अबोध अवस्थामे विवाह करना और उसके पतिके मरनेपर यौवनावस्थामे विधवा कहकर पुनर्विवाह न करना, यह सब जानबूझकर उसका गला रेतना है । उसने अपने पतिके साथ सुख ही कहाँ भोगा है ? यह महान् द्रोह है । उसे आँसू पीते देखते रहना हमारे लिये कहाँ तक उचित है ? सोचिये पिताजी, मातृ-विहीन लड़कीको लाड़-प्यारसे हमने पाला है । उसे समाजके कठिन नियमोंकी बलि देना ठीक नहीं है ।”

“चन्द्रम, हम अपनी अच्छाके अनुकूल कुछ भी नहीं कर सकते । हम अकेलाकी नहीं, सामाजिक प्राणी हैं । समाजके साथ ही हमें चलना चाहिये । पीढ़ियोंसे चले आ रहे संप्रदायोंका हम विरोध नहीं कर सकते । नीति, नियम व सनातन आचारोंका हमें पालन करना चाहिये ।”

“ये नीति-नियम और अर्थविहीन आचार-व्यवहार कुछ स्वार्थियोंके कल्पित हैं । अिन रूढ़िवादियोंके कठिन आचार रूपी चक्रोंमें दबकर कितनी बाल विधवाओं अतृप्त कामनाओं और आँसुओंसे अपनी प्यासको बुझाती हुई, चहारदीवारीके मध्यमें, जड़ तुल्य जीवन बिता रही हैं । हूँ ! समाज ! बचपनमें पतिके मरनेपर युवती होनेके बाद नारी विवाह नहीं कर सकती,

परन्तु मृत्युके मुखमे जानेवाला बूढ़ा फिरसे विवाह करे तो समाज अनुमति देता है। पिताजी ! मेरे जीवित रहते मेरी प्यारी बहिन निर्जीव जीवन नहीं बिता सकती। उसका विवाह हो और वह भी सुखपूर्वक जीवन बिताये, यही मैं चाहता हूँ। ”

“प्राचीन कालसे चले आनेवाले संप्रदायोंका हम विरोध नहीं कर सकते। आज तक हमारे परिवारकी ओर किसीने भी अँगली नहीं अुठायी। आगे अैसा हो, यह मैं सहन नहीं कर सकता। उसके भाग्यमे जो लिखा है, उसे कौन मिटा सकता है ? ”

“भाग्य और प्रारब्ध हमारे लिअे कल्पित है। अीश्वरकी दृष्टिमें सभी समान है। मेरी सुशील बहिन हल्दी-कुंकुमसे दूर रहकर महिलाओंमें घृणित वैधव्यका जीवन नहीं बिता सकेगी। असिमें आप हठ न कीजिअे, उसका विवाह होने दीजिअे। ”

“अैसा कभी नहीं हो सकता। ”

“पिताजी ! मेरी बात सुनिअे। उसका विवाह कीजिअे। ” हँधे हुअे कंठसे चन्द्रमने विनती की।

“नही, मेरे जीते-जी यह कभी संभव नहीं होगा। ”

“नही-नही, उसका विवाह होना ही चाहिअे। मेरे जीवित रहते वह विधवा बनकर कभी नहीं रह सकती। मैं उसका विवाह अवश्य ही कराअूँगा। ”

“चन्द्रम ! ” बूढ़ेने ललकारा !

“पिताजी, क्षमा कीजिअे। असि विषयमे मैं आपका विरोध कर रहा हूँ। ” चन्द्रमने विनयपूर्वक अुत्तर दिया।

“यदि तुम्हारी अिच्छा यही है, तो समझो हमारे परिवारका सर्वनाश हो गया है। ”

“बहिनके अन्धकारमय जीवनमें मधुर प्रभात लानेके लिअे, सारे परिवारका सर्वनाश ही क्यों न हो जाअे—अुसके लिअे, अुसके आनन्दके लिअे, अुसके मधुर सुन्दर भविष्यके लिअे—मैं अपने सुख, आनन्द अेवं सुन्दर भविष्यका भी त्याग करनेके लिअे तैयार हूँ। ”

“यदि ऐसा ही होगा तो तुम्हें मैं अपना पुत्र नहीं समझूंगा। यह सब मेरी पसीनेकी कमाओ है। इसपर तुम्हारा कोई अधिकार नहीं रहेगा। मैं अपनी सारी भूमि और सम्पत्ति भगवानके नाम लिखकर काशी या रामेश्वरम् चला जाऊंगा।”

“आपकी भूमि और सम्पत्तिके लोभमे पड़कर मैं अपने आदर्शोंकी आहुति नहीं दे सकता। चाहे समाज मेरा कितना ही विरोध क्यों न करे, मैं सुशीलाका विवाह निश्चय ही कराऊंगा। उसके जीवनमें वसंतोदय, उसके अंधकारमय जीवनमें हजारों बत्तियोंकी रोशनी अंक साथ हो जाये, उसके बाद मेरी स्थिति कुछ भी हो जाये, मुझे चिन्ता नहीं। परन्तु आप यह बात कभी न भूलें कि अबोध लड़कीका निर्दयतापूर्वक गला रेतकर अपने रक्तसिक्त हाथोंसे नैवेद्य रूपमें समर्पित आपकी सम्पत्तिको भगवान भी प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार नहीं कर सकेंगे।” यह कहकर चन्द्रम वहाँसे चला गया। उस वृद्धके कण्ठसे “हूँ” की भयंकर ध्वनि निकली। उस ध्वनिसे मानो सहस्रों सर्पोंका विष बाहर आ गया हो। वह किसकी बलि लेनेवाला है? किसे निर्दयतापूर्वक जला डालेगा? कौन जाने?

[३]

सुशीलाके हृदयमें वैधव्यका ज्वालामुखी धधक रहा है। उसे अपना जीवन ऐसा लगता है मानो लाखों काल-सर्प केंचुली छोड़ फुफकार रहे हों। किसी भी क्षणमें यदि वह अनुसे बचनेका यत्न करेगी तो अनुसे इसे जानेकी संभावना है। तब उसकी क्या दशा होगी? ऐसी स्थितिमें उसे अपनी जीवन-यात्राको समाप्त कर देना ही अचित है।

अग्नि-पर्वतोंके आक्रमणोंसे वह बच नहीं सकेगी। लाखों काल-सर्पोंका वह अंक साथ अंत नहीं कर सकेगी। तो भी उसे बचनेका मार्ग... मिल सकता है। वह है अपनी छाया बनकर... सदा-सर्वदा उसके सुख-दुःखोंको अपना सुख-दुःख मानकर उसके लिये मर-मिटनेको कमर कसे हुए व्यक्तिकी आड़ लेकर। परन्तु अनुको ये अपद्रव छोड़ सकेंगे? अपने स्वार्थके लिये दूसरे व्यक्तिका अन्त क्यों करे? वही उसके लिये आहुति बन जाये... तो?

ते. ११

सुशीलाका सिर चकरा रहा है। उसके मस्तिष्कमें अनेक प्रकारके विचार अठ रहे हैं। आज तक वह समाजसे छिपकर अव्यक्त रूपमें रोती रही। राखमे छिपी लकड़ीकी भाँति उसका हृदय भीतर-ही-भीतर जलकर भस्म हो गया है।

असे लेकर भाभी और पिताजीके बीच यह वाद-विवाद और प्रतिज्ञाओं क्यों? बचपनमें ही पतिके मरनेसे पुनर्विवाह क्यों नहीं किया जा सकता है? पिताजी क्यों नहीं मानते?

मेरे जीवनका तो सर्वनाश हो गया है। मैं अपने प्रारब्धका अनुभव कर रही हूँ। बीचमे भाभीने यह तूफान क्यों खड़ा कर दिया? क्या यह सब भाभीका दोष है? सहोदर अपनी बहिनको संघ-दुराचारोंके लिअे आहुति होते कैसे देख सकेगा? यह भाभीका अपराध नहीं है। यह पिताजीका दोष है क्या? . . . नहीं तो और क्या है?

अन सबका कारण मैं हूँ। अतने वाद-विवादोंका कारण भी मैं ही हूँ। मेरे लिअे सारे परिवारका सर्वनाश होता जा रहा है। मेरे लिअे भाभीके जीवनके प्रति अन्याय हो रहा है। मेरे आनन्दके लिअे, भाभीको प्राप्त होनेवाली सारी सम्पत्ति भगवानको समर्पित हो रही है। मेरे सुखके लिअे मैं और भाभी दोनों अपने पिताजीसे दूर होते जा रहे हैं। परिवारके सर्वनाशका कारणभूत—मैं विवाह करके भी क्या आनन्द प्राप्त कर सकूंगी?

यदि मैं ही परिवार तथा कुटिल संसारसे दूर हो जाऊँ तो? असका रास्ता आत्महत्या—कैसा सरल वाक्य है! असमे कैसी भयंकरता छिपी है! अस वाक्यमें कैसी निराशा, और क्रूरता छिपी है! असके बिना—रास्ता.....? जीवनसे पराजित लोगोंका अत्युत्तम मार्ग आत्महत्या ही है!

[४]

अेक दिन सुशीलाके पिता पुराणका पाठ कर रहे थे। उसी समय डाकिअेने अेक पत्र लाकर दिया। यह सब सुशीला देखती रही। उसके पिताजीने जोरसे पत्र पढ़ना प्रारम्भ किया :—

“ पूज्य पिताजी !

सविनय नमस्कार !

मैं यहाँ सकुशल हूँ। आशा है, आप और बहिन दोनों सुखी होंगे। मैंने अपनी बहिनका विवाह कार्यालयके अपने साथी कार्यकर्ता रामरावजीके साथ निश्चित किया है। रामराव बहुत सज्जन, आदर्शवादी एवं सच्चरित्र है। उनके लिये हमारी सुशीला योग्य पत्नी सिद्ध होगी।

आप ही हम दोनोंके माता-पिता हैं। बहिनका सुख ही हमारा सुख है। मैं दो दिनके भीतर ही यहाँसे रवाना होनेवाला हूँ। शीघ्र ही अंक शुभ मुहूर्त देखकर उसे मांगल्य प्रदान करनेकी प्रार्थना करता हूँ। ”

आपका विनम्र पुत्र,

चन्द्रम

पत्रको पढ़कर वृद्धकी आँखें लाल हो गयीं। उनकी रौद्र मूर्ति देखकर द्वारकी आड़में खड़ी सुशीला काँप उठी। चन्द्रमका कैसा साहस है! सुशीलाके विवाहका निश्चय करनेवाला यह कौन है? उसके विवाहमें मैं हाथ बटाऊँ? बड़ा समाज-सुधारक निकला है! मेरी सम्पत्तिसे उसे अंक कौड़ी भी नहीं मिल सकेगी।

सुशीला अपने पिताके क्रोधको देखकर काँप उठी और फूट-फूटकर रोने लगी। उसके सुन्दर नीले नेत्रोंसे निकले हुए आँसुओंकी धारा उसके गुलाब जैसे कोमल कपोलोंपरसे होकर बहने लगी। उसके नीले केश उसके कमल जैसे मुख-मंडलपर फैले हुए ऐसे दिखायी दे रहे थे मानो शोकमें तप्त देवीने मूर्त रूप धारण कर लिया हो। उसके हृदयमें अठनेवाले भयंकर तूफानोंके संक्षोभसे उसका शरीर हिल उठा। उसकी अंतरात्मा मानो उससे कहने लगी—“ हे अभागिनी, तेरे ललाटमें सुख नहीं लिखा है। तेरे भाग्यमें आनन्द ही कहाँ लिखा है? तेरे कारण सारे परिवारका नाश हो रहा है। भले ही तेरा विवाह भी हो जाये, परन्तु तेरे परिवारके अजड़ जानेसे तुझे सुख ही कहाँ प्राप्त होगा? यदि तू परिवारका भला चाहती है, तो तेरा मरना ही अचित है। ” वह पागल होकर हँसने लगी। उसकी हँसीका रहस्य वही जाने।

दो दिन बीत गये। तीसरे दिन सबेरे सुशीलके पिताजीने देखा कि घरका सारा वातावरण सुनसान है। सारा सामान बिखरा पड़ा है। घरमें झाड़ू तक नहीं लगी है।

वृद्धने पुकारा—“बेटी, सुशीला !” इस बार भी उसे कोअी अुत्तर नहीं मिला। कमरेके पास पहुँचकर देखा, दरवाजेकी कुंडी लगी हुआी है। अुसने सोचा कि शायद सो रही है। जगानेके निमित्त जोरसे दरवाजा खटखटाया। कोअी अुत्तर नहीं मिला। वृद्ध घबरा अुठा और अुसने दरवाजेपर आघात किया। दरवाजेके दोनों किवाड़ खुल गये। वृद्धका कलेजा काँप अुठा। अुसकी आँखें डबडवा आयीं।

सामने वृद्धने अपनी लड़कीको जड़ पदार्थकी भाँति फाँसीपर लटका हुआ देखा। “बेटी! बेटी!!”—पुकारते हुअे वृद्ध अेक पहाड़की भाँति जमीनपर गिर पड़ा।

अुसी समय शहरसे लौटा चन्द्रम इस दृश्यको देखकर स्तंभित रह गया। अुसने भी फाँसीपर लटकी हुआी अपनी बहिनकी लाशको देखा और देखा सिर पीटकर रोते हुअे पिताको। अुस भयंकर दृश्यको देखकर चन्द्रमका हृदय पिघल अुठा। नसें तन गयीं, शरीर काँपने लगा।

“कैसा साहस किया सुशीलाने?” यह कहकर वह जोरसे बच्चेकी तरह रो पड़ा।

और “पिताजी! यही आपकी कुल प्रतिष्ठा है?” यह कहकर—बहिनकी निर्जीव लाशके पास जाकर चन्द्रम अुसके दोनों पैर अपनी आँखोंपर रखकर जोरसे रो अुठा।

* * *

१७.

अतृप्त कामना

—श्री 'हितश्री'



अुदीयमान युवक कलाकारोंमें आपका अूँचा स्थान है। आप कालेजमें प्राध्यापक हैं। 'हितश्री' आपका अपुनाम है। आन्ध्रके जातीय जीवनका समग्र परिशीलनकर अुसकी खूबियोंको अपनी कहानियोंमें लानेका अच्छा प्रयत्न कर रहे हैं। अनेक कहानी-प्रतियोगिताओंमें आपको पुरस्कार मिले हैं।

आप कम लिखते हैं, पर सुन्दर लिखते हैं।

* * *

अतृप्त कामना

चहार दीवारीका फाटक पार करके बंगलेकी सीढ़ियोंपर चढ़ती हुअी अुमाने मन-ही-मन रमाके सौभाग्यका कम-से-कम सौ बार अभिनन्दन किया । पधारी हुअी महिलाको देखकर विलायती कुत्ता दुम दबाकर घरके अन्दर भागने लगा और भागते समय पीछेकी ओर देखकर “भौं-भौं” करने लगा । धरतीपर बैठा हुआ, अन्यमनस्क होकर आकाशकी तरफ देखनेवाला बूढ़ा नौकर रामय्या चौंककर अुमाकी ओर दृष्टि दौड़ाते हुअे कुत्तेको डाँटनेके अद्देश्यसे “मोती” कहकर जोरसे चिल्लाया । पच्चीस वर्षीय सुन्दर महिलाने सिंहद्वारसे पर्दा हटाकर बाहरकी ओर झाँककर देखा, और प्रश्न किया—
“अुमा, तुम आ गयीं ?”

अुमाने हँसते हुअे कहा—“तुमने तो बहुत ही अच्छा कुत्ता पाल रखा है ?”

रमाने पूछा—“क्यों ?”

अुमा—“कुछ नहीं, वह बहुत सुन्दर है !”

रमा—“हाल ही में खरीदा है । अिसके खरीदनेके बाद तुम्हारा यहाँ आना, शायद पहली बार ही हुआ है ?”

अुमा—“हाँ, तो अिसे रामय्याने खरीदा है न ?”

रमा—“तो और कौन खरीद सकता था ?”

रामय्याने शंका-भरी दृष्टिसे रमाकी ओर देखा ।

रमा—“अैसा कहनेका अभिप्राय ? ”

अुमाने मुस्कराकर कहा—“रामय्याका ही चुनाव है न ? इसीलिये तो वह घरके भीतर साहसपूर्वक दौड़ गया । ”

यह सुन रामय्याको क्रोध हो आया । अुमाके कुछ कहने और रामय्याके क्रुद्ध होनेका यह सौवाँ अवसर है ।

रामय्याने कहा—“क्या आपको देखकर वह दौड़ रहा है ? ”

अुमाने उत्तर दिया—“नहीं, मेरा समाचार देने वह अपनी माँ (मालकिन) के पास जा रहा है । ”

रामय्याने दृढ़तापूर्वक कहा—“आप चाहे विश्वास करें या न करें, शत-प्रति-शत बात सच है । ”

अुमा—“ठीक तो है रामय्या ! तुमसे मुझे झगडा क्यों मोल लेना है ? तुम्हारा चुनाव तो अच्छा है । परन्तु मुझे अेक सन्देह है । ” प्रसंगको बदलनेके अभिप्रायसे रमाने कहा—“जाने भी तो दो । भीतर आकर बैठ जाओ । ” अुन बातोंको अनसुनी करते हुअे अुमाने प्रश्न किया—“घरमें किसीके न रहनेपर यदि कोअी चोर आ जाता है, तो यह टामी मालकिनको बुलाने नही दौड़ेगा न ? ”

रामय्या—“आप विचित्र बाते करती है ? ”

अुमा—“मान लो कि मैं चोर नही हूँ, यह बात कुत्तेको कैसे मालूम होगी ? ”

रामय्या—“आपकी वेष-भूषासे मालूम नही होगा क्या ? ” हँसीको रोकते हुअे अुमाने कहा—“मालूम हो जाअेगा क्या ? ”

रामय्या—“चकाचौध करनेवाली इस हीरकमालाको देखकर हमारे राजा कुत्तेने समझ लिया कि घरमे कौन आ गअी है ? ” अुमा जोरसे हँस पड़ी । रमाने भी अुसकी मालाकी ओर देखकर हँसी-मे-हँसी मिला दी ।

अुमा—“तब तो तुम्हारा कुत्ता धोखा खा गया। यह तो नकली हीरकमाला है। चोर और बाबू लोग सभी जिसे खरीद सकते हैं।” यह कहकर अुमा रमाके साथ भीतर चली गयी।

अुमाकी ओर रामय्या चकित दृष्टिसे देखकर मन-ही-मन बड़बड़ाने लगा—“कितना सुन्दर बोलना जानती है ?” यह कहता हुआ धरतीपर बैठकर वह किन्हीं चिन्ताओमें निमग्न हो गया। अुमाकी हीरकमाला नकली है, यह रामय्याके लिये आश्चर्यकी बात थी, फिर भी वह शीघ्र जिसे भूल गया, परन्तु रमा नहीं भूल सकी। उसने अनेक मुँहोंसे नकली हीरकोंके बारेमें सुना है, परन्तु आजतक उसे यह नहीं मालूम था कि नकली हीरकमाला असलीके जैसा आदर पा सकती है। रमाके लिये यह तमाशा ही मालूम हुआ और वह अुमाकी मालाकी ओर विस्मय तथा कुतूहलभरी दृष्टिसे देखती रही।

अुमाके भीतर चले जानेपर रमाने रामय्यासे कहा—“देखा रामय्या ! अुमाकी माला नकली है। बहुत विचित्र है न ?”

रामय्याने उत्तर दिया—“विचित्र क्या है ? आजकल सभी विचित्र ही हैं।”

रमा—“दोनोंका अन्तर मालूम होनेपर ही उसका वास्तविक मूल्य है।”

“क्यों नहीं मालूम ? आप जैसी महिलाओंके पहननेपर वे असली हीरकमाला है और गरीबोंके पहननेसे वे नकली हैं।” रामय्याने मानो कोअी चालाकीकी बात कही हो। उसे हँसी आयी और वह हँस पड़ा। रमा थोड़ी देर तक चुप रही, फिर कहने लगी—“यदि पैसेवाली भी अिमिटेशन नेकलेस पहनने लगें तब ?”

अब मानो रामय्या फँस गया हो। मुँह बनाकर उसने अभिनय-पूर्वक कहा—“पैसेवाली क्यों पहनेगी ? यदि कोअी कंजूस पहना करें तो क्या करें ?”

“मेरी जैसी स्त्रियाँ पहनें तो ?”

“आप जैसी स्त्रियाँ अनुकी ओर दृष्टिपात तक नहीं करेंगी।”

रमाने कहा—“तुम्हारे बाबूजीसे परिहास करेंगे।”

अस बार रामय्याने उसके मुखकी भावनाओंका अध्ययन करते हुए हँसकर कहा—“अस बुढ़वाको जैसे नचा रही हो, वैसे क्या बाबूजीको नचा सकोगी?” रामय्या अपने-आपमें हँस रहा था। रमा थोड़ी देरतक उसकी ओर देखकर हँसती हुई भीतर चली गयी।

+ + + +

बिजिनेस मैनेट, रामकृष्णकी सुपरिचित कार दूकानके : ने एकते ही, सेठ राजारामने आगे बढ़कर रामकृष्ण और रमा देवीका स्वागत किया। रूमालसे मुँह पोंछते हुए रामकृष्णने कहा—“हीरकमाला दिखलाअिअे ?” आँखोंको चकाचौध करनेवाली हीरकमालाअे तथा अँगूठियाँ शो केसोंमे दिखाअी दे रही थीं। रमाने अपनी माला जैसी माला दिखानेकी अिच्छा प्रकट की। सेठने टोका कि यह नकली हीरकमाला है। रमाने रामकृष्णके चेहरेकी भावनाओंको भाँप लिया। अपनी भूलको सुधारते हुए कहा—“यह नमूना अच्छा है। अिसी प्रकारकी हीरकमाला चाहिअे।” सेठजीने अुसी नमूनेकी हीरकमाला ला दी, तो रामकृष्णने अुसे स्वीकार किया। रमाको भी वह पसन्द आअी। सेठजीने अुसका दाम दस सहस्र रुपये बताया। रमाने असली और नकली मालाओंका अन्तर जाननेकी अिच्छा प्रकट की। सेठ लेन्स रखकर दोनोंका अन्तर दिखाने जा रहे थे, किन्तु रामकृष्णने बताया कि “आपकी बातपर हमे विश्वास है।” रमाने कहा—“दोनों खरीदें तो... ? तो..... ?” रामकृष्ण आश्चर्य-चकित हुए। रमाकी ओर देखते हुए अुन्होंने कहा—“वह क्यों ? वह तो नकली है।”

रमाको और कुछ कहनेका साहस नहीं हुआ। हँसकर चुप रह गअी। रामकृष्णने लम्बी साँस ली, मानो अनुकी प्रतिष्ठा बच गअी।

रमाने मुस्कुराते हुए कहा—“हीरकमालाके खरीदनेपर अेक नकली हीरकमाला भी बिना मूल्यके देनी होगी, सेठजी !”

“अह ह.....आप जैसे लोग ही ऐसा पूछें तो.....”

“हि.....हि.....हि.....” रामकृष्णने जोरसे हँस दिया।

सेठजीने कहा—“देनेपर आप क्या करेंगी?”

रामकृष्णकी ओर देखते हुअे रमाने कहा—“नौकरानियोको दे सकते है न?”

“नौ नियोको देनेकी आवश्यकता ही क्या है?” कहते हुअे सेठजीने जोरसे हँस दिया।

सेठजीने हाँ मिलाते हुअे समर्थन किया—“अच्छा कहा,

बिलकुल अपुरान्त कारमे पार्श्वमे बैठी हुअी रमाकी ओर देखते हुअे रामकृष्णने कहा—“मुझे डर था, कही तुम नकली हीरकमालाको भी न खरीद लो।”

“क्या आप समझा कि मैं अवश्य अुसे खरीद लूंगी?”

रामकृष्णने जते हुअे कहा—“छि-छि:, कदापि नही।”

॥ + + +

वजे चौधियानेवाली बिजलीके प्रकाशमें अुमा हीरकमालाको परख के और रमा अुसके सामनेवाली मेजपर बैठकर नकली मालाकी ओर अेक टक धृष्टे देख रही है। अुमाने जाँच पूरी करके मालाको मेजपर रख दिया। रमाने पूछा—“कैसी है?”

अुमा—“पूछती ही क्या हो? बहुत सुन्दर है।”

रमा—“तुम्हारी नकली हीरकमालामें और अिसमें स्थूल रूपसे कोअी अन्तर नही है?”

अुमा—“स्थूल रूपसे क्या? अच्छे पारखी भी अिसके भेदको पहचान नहीं पाअेंगे। साधारण जनोंकी बात ही क्या?”

अुमा अपनी नकली हीरकमालाको रमाकी असली हीरकमालाके पास भेजपर रखकर जाँच करनेमें तल्लीन हो गयी ।

रमा—“मैं भी इसी तरहकी माला खरीदूँ तो क्या ही अच्छा हो ?”

अुमा—“तुमको खरीदनेकी आवश्यकता ही क्या है ? इस प्रकारकी नकली मालाओंको मेरी जैसी स्त्रियोंको खरीदना है । तुम तो जमीदारकी पत्नी हो न ? तुम्हारे खरीदनेसे लोग हँसेंगे ।”

रमा—“जब अिन दोनोंके सूक्ष्म भेदकी कोखी ही नहीं, तब दोनों समान हैं न ?”

अुमा—“हम इसलिये पहनती हैं कि ३५ । अिसे हीरे अेवं जवाहिरातकी माला समझें ।”

रमाने अुमाकी बातोंमें अेक प्रकारकी अतृप्ति । और पूछा—
“मालूम होता है, तुम्हारा मन हीरे और जवाहिरातकी माला चाहता है ।
है न ?”

अुमा—“मनका चाहना क्या है ? अुसके लिये जोभी रोक तो है नहीं, परन्तु ‘पैसेमें परमात्मा है’ और ‘धनमूल्य’ लोकोक्ति ही है । धनके बिना कामनाओंके होनेमात्रसे क्या होगा

रमा—“धनके रहनेपर क्या सभी कामनाओं पूरी

“धनसे सम्बन्धित सभी होंगी ही ।”—अुमाने अुत्तर दिया—“पर कुछ लोग संपत्तिके रहते हुआ भी तृप्ति नहीं पाते । सदा अुनकी ‘कामनाओं अतृप्त ही रह जाती हैं । कारण क्या है ?”

रमाका प्रश्न अुमाके लिये आश्चर्य पैदा करने लगा । तुरन्त अुसने पूछा—“किसके बारेमें कहती हो ?”

“राज्यमके बारेमें । वह है न गजटेड अफसरकी पत्नी, अुसे भूमि-सम्पदा सब कुछ है । कल-परसों अुसने नकली जवाहिरातकी माला खरीदी है ।”

“असमें तुम्हें आश्चर्य करनेकी कौन-सी बात है ? असे या तो उसकी कंजूसी कहें अथवा विचित्र मनस्तत्व ।”

रमाने सकुचाते हुअे कहा—“चारों ओरका समाज दर्पण जैसा है । राज्यम बिलकुल नहीं देखती कि लोग अुसके बारेमें क्या सोचेंगे ? वह केवल धनका संग्रह करना जानती है ।”

अुमा प्रसंग बदलनेके अुद्देश्यसे कह ही रही थी कि “जाने भी तो दो . . .” किन्तु अुसी क्षण बिजलीका प्रकाश अन्धकारमें तैरने लगा । काँपती हुअी अुमासे रमाने कहा—“बिजली फेल हो गअी है ।”

अैसे ही दो मिनट बीत गअे ।

अुमाने हँसते हुअे कहा—“चोरोंको दिनमें डर लगता है तो नकली हीरकमालाअें रातसे डरती हैं ।” रमाने हाँ-में-हाँ मिलाअी । अिसी क्षण बाहर किसीके खाँसनेकी आवाज सुनाअी दी । अुमाने कहा—“वही तुम्हारा बूढ़ा नौकर लौटा मालूम होता है ?” रमाने अुत्तर दिया—“प्रति दिन शामको मोतीको बाहर ले जानेके लिअे मैंने अुससे कह रखा है ।”

अिसके पूर्व कि रमाका अुत्तर पूर्ण हो, मोती “कुँछ-कुँछ” करता हुआ अुस अन्धकारमें अपनी मालकिनको पहचाननेके लिअे अुमाकी कुर्सीपर कद पड़ा । चौककर अुमाने अुस पिल्लेको मेजपर फेक दिया । अिस अोंकेसे मोती मेजपर रखी हुअी दोनों मालाओं सहित रमाकी गोदमें जा पडा । रमाने मोतीकी पीठपर हाथ फेरते हुअे अुसे मेजपर रख दिया । रमाकी गोदमेंसे अपनी अुज्ज्वल कान्तिको फैलाते हुअे अन्धकारमे चोरको पकडनेके लिअे जलाअे जानेवाले टार्चकी तरह हीरकमाला प्रकाशमान है । बगलमें ही अपने भेदके प्रकट होनेसे सकुचानेवाले चोरकी भाँति नकली हीरकमाला टिमटिमा रही है । रमाके हृदयमे अनिर्वचनीय अभिमान भरा था कि वह अपनी भूलको मानकर असहाय अपराधिनीकी तरह चारों ओर देखनेवालीको अपनी अुदारताके कारण मानो क्षमा-दान कर रही हो । अुसी समय बत्तियाँ कमरेको प्रकाशित करने लगी । अुमाने खड़ी होकर कहा—“अब मैं जाअूंगी ।” रमाने अुसके

हाथमें माला दी। मालाको देते समय रमाको अुमाके हाथोंका स्पर्श हुआ। अुसने आश्चर्यके साथ पूछा—“शरीर तवेकी तरह जल रहा है, क्या बुखार आ गया है?”

“अुहँ, कुछ नहीं।” अुमा सकुचाती हुअी बोली।

रमा—“कांपती क्यों हो? डाक्टरको बुलाअूं?”

“रामय्या! ड्राअिवरको जल्दी कार लानेको कहो। अुमा जाना चाहती है।” रमाने आतुरतासे कहा।

माला पहनकर अुमा जानेको तैयार हो गअी। अुसी क्षण फिर बत्तियाँ बुझ गअी। अपने गलेमे चकाचौध करनेवाली कान्तिपूर्ण मालाको देख आश्चर्यके साथ अुमा वापस मुड़ना ही चाहती थी कि अचानक बत्तियाँ जल अुठी।

रमाने असपर ध्यान नहीं दिया।

अुमाने संकोचपूर्ण भावसे कहा—“रमा! हमारी मालाअें ठीक आ गअी है न?”

“पगली, क्यों नहीं आअी होंगी?”

अुमाने फिर जोर देते हुअे कहा—“बदल तो नहीं गअी?”

“बदलेगी ही क्यों? यदि बदल भी गअी हों, तो असमें कौन लाखों रुपये लगे है?”

अुमाने बनावटी स्वरसे कहा—“ओह! कैसी अुदासीनता है? मेरे पास कभी बदलेगी नहीं, यह समझकर ही तुम अितने साहसके साथ कह रही हो?”

रमाने शीघ्रता करते हुअे कहा—“जाने भी दो। ड्राअिवर आ रहा है, चलो ! ”

आगे चलनेवाली अुमाने पीछे घूमकर स्विच दबाया। बत्ती बुझ गयी। वह हँसती रही, अुसकी हँसीके साथ फिर बत्ती जल अठी। अुसने कहा—“मैंने भूल की। हीरकमालाको लेनेकी बहुत बड़ी मूर्खता की।” और कुछ बकने जा रही थी कि रमाने बात काटकर कहा—“तुम्हें बद्धिमती ही किसने समझा है ?” मानो अुसाके मुँहपर चपत पड़ी। और वह रमाकी ओर अंकटक देखती ही रही।

* * *

हमारे नअे प्रकाशन

मिर्जा ग़ालिब [जीवनी और साहित्य]

लेखक—श्री रसूल अहमद 'अबोध'

अर्दूके सुप्रसिद्ध ग़ज़ल-गो-शायर—मिर्जा 'ग़ालिब' की जीवनी और कृतित्वका परिचय करानेवाली अकमेव अनूठी कृति ।

[मूल्य—रु. १. २५]

तेलुगुकी अत्कृष्ट कहानियाँ [कहानी]

अनुवादक—श्री बालशौरि रेड्डी

तेलुगुकी चुती हुआ १७ अत्कृष्ट कहानियोंका सरल अेवं सुबोध हिन्दीमें किया गया सुन्दर अनुवाद । [मूल्य—रु. २.५०]

धूमरेखा [अेकांकी]

गुजरातीके लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार श्री गुलाबदास बोकर तथा :
श्री धनसुखलाल महेताके बहुप्रशंसित अेकांकी "धूमरेखा" का हिन्दी अनुवाद । [मूल्य—रु. १.२५]

गुजराती प्रतिनिधि कहानियाँ [कहानी]

सम्पादक—श्री जेठालाल जोशी

गुजरातीकी चुती हुआ १५ अत्कृष्ट कहानियोंका सरल अेवं सुबोध हिन्दीमें किया गया रसप्रद और पठनीय अनुवाद ।

[मूल्य—रु. ३. ००]

[प्रकाशक—गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, अहमदाबाद]

विशेष सुविधा—

अुपर्युक्त पुस्तकोंको अेक साथ मँगानेपर ग्राहकको डाकखर्च नहीं देना होगा ।

प्राप्तिस्थान—

पुस्तक-बिक्री-विभाग,

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पो० हिरडीनगर

वर्धा (महाराष्ट्र)
